तरुण-भारत-ग्रन्थावली-सं० ३९

भाव-विलास

(देवकवि-कृत)

सम्पादक

साहित्य-रत्न पं० लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी,

हिन्दी-प्रभाकर, कविरत्न

प्रकाशक

तरुण-भारत-ग्रन्थावली-कार्यालय

दारागंज, प्रयाग

प्रथमावृत्ति २०००]   संवत् १९९१   [मूल्य १॥)

प्रस्तावना

महाकवि देवदत्त उपनाम 'देव' हिन्दी भाषा के महाकवियों में गिने जाते हैं। हिन्दी के अन्यान्य महाकवियों की तरह इनके जीवन की अनेक बातो के सम्बन्ध में भी अबतक सन्देह बना हुआ है। कुछ विद्वान् इन्हें सनाढ्य ब्राह्मण मानते है और कुछ कान्यकुब्ज। यही हाल इनके जन्मस्थान के सम्बन्ध में भी है। कोई इन्हें इटावे का निवासी बतलाते हैं और कोई मौजा समान, जिला मैनपुरी का। शिवसिंह-सरोज में इन्हे समान जिला मैनपुरी का निवासी सनाढ्य ब्राह्मण लिखा गया है। परन्तु 'मिश्रबन्धु' इन्हें कान्यकुब्ज ब्राह्मण और इटावा-निवासी मानते हैं। अपने इस कथन के प्रमाण मे उन्होने निम्न दोहे दिये हैं:—

द्योसरिहा कविदेव को, नगर इटायो वास।

× × × ×

कास्यप गोत्र द्विवेदि कुल, कान्यकुब्ज कमनीय।
देवदत्त कवि जगत में, भए देव रमनीय॥

आप लोगों ने कुसुमरा ज़िला मैनपुरी से देव जी के वंशजों द्वारा प्राप्त एक वंशवृक्ष भी दिया है। इससे ज्ञात होता है कि देव जी के पिता का नाम बिहारीलाल था। जन्म के सम्बन्ध में देवजी ने इसी भाव-विलास में एक दोहा लिखा है कि:—

सुभ सत्रहसौ छियालिस, चढ़त सोरहीं वर्ष।
कढ़ी देव मुख देवता, भाव-विलास सहर्ष॥

इस हिसाब से संवत् १७४६ में जब इनकी अवस्था सोलह वर्ष की थी तब संवत् १७३० में इनका जन्म निश्चित है।

देव जी बहुत थोड़ी अवस्था से ही कविता करने लगे थे। 'भाव-विलास' उन्होंने केवल १६ वर्ष की अवस्था में ही बनाया था। यह

उनकी प्रखर प्रतिभा का पक्का प्रमाण है। परन्तु इतने प्रतिभा-सम्पन्न होने पर भी, हिन्दी के अन्य कवियों की तरह, इन्हें किसी राजा अथवा महाराजा द्वारा विशेष सम्मान नही मिला। इन्हो ने स्वयं लिखा है कि

आजु लगि केते नर-नाहन की 'नाहीं' सुनि,
नेह सों निहारि हारि बदन निहोरतो।

हाँ, भोगीलाल नामक एक गुणज्ञ राजा ने इनका अवश्य सम्मान किया। इन्हो ने भी अपना 'रसविलास' नामक ग्रन्थ इन्हीं गुणज्ञ राजा के लिए बनाया तथा अन्य कई स्थलों पर भी इनकी बडी प्रशंसा की है।

पर इन गुणज्ञ राजा के यहाँ भी ये बहुत दिनो तक नही रहे। यह इनके ग्रन्थों से विदित होता है। इसके दो कारण हो सकते हैं। या तो भोगीलाल का देहान्त हो गया हो अथवा ये ही किसी कारणवश वहाँ से चले आए हो।

जो हो, देवजी प्रतिभासम्पन्न महाकवि थे, इसमें कोई सन्देह नही। इनके बनाए हुए ५२ ग्रन्थ कहे जाते हैं। कोई कोई इन्हें ७२ ग्रन्थो का रचयिता भी मानते हैं। इनके बनाये हुए दो एक ग्रन्थ खोज में मिले हैं और अन्य ग्रन्थों के मिलने की भी आशा है। अतः अभी निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इन्होंने कितने ग्रन्थ लिखे। अब तक इनके लिखे हुए २५ ग्रन्थों का पता चल चुका है:—

१—भाव-विलास २—अष्टयाम ३—भवानी-विलास ४—सुंदरी-सिंदूर ५—सुजान-विनोद ६—प्रेमतरंग ७—रागरत्नाकर ८—कुशल-विलास ९—देवचरित्र १०—प्रेमचंद्रिका ११—जातिविलास १२—रस-विलास १३—काव्यरसायन १४—सुखसागरतरंग १५—देवमाया-प्रपंच-नाटक १६—वृत्तविलास १७—पावसविलास १८—देवशतक १९—प्रेम-दर्शन २०—रसानंदलहरी २१—प्रेमदीपिका २२—सुमिलविनोद २३—रधिका-विलास २४—नखशिख २५—दुर्गाष्टक।

भाव-विलास

यह देवजी की प्रथम रचना है। हिन्दी भाषा के रीति-ग्रन्थों में यह उच्चकोटि का ग्रन्थ माना जाता है। इन्होंने केवल सोलह वर्ष की अवस्था में इसकी रचना की थी। यह इनकी प्रथम रचना होने पर भी इसके छन्दों में कहीं भी शैथिल्य नहीं है और प्रौढ़ कविता मे जो गुण होने चाहिएं वे सभी इसमें विद्यमान हैं। इस ग्रन्थ को इन्होंने पहले-पहल बादशाह औरंगज़ेब के बड़े पुत्र आजमशाह को सुनाया। आजमशाह हिन्दी के प्रेमी तथा जानकार और गुणज्ञ थे। उन्होने उक्त ग्रन्थ की बड़ी प्रशंसा की। भाव-विलास के अंत मे लिखा है कि:—

दिल्लीपति नवरंग के, आज़मसाहि सपूत।
सुन्यो, सराह्यो ग्रन्थ यह, अष्टयाम संजूत॥

इस ग्रन्थ मे इन्होंने भाव, विभाव, अनुभाव, हाव, नायक, नायिका और अलंकारो का वर्णन किया है। परन्तु अन्य आचार्यों द्वारा वर्णित रसादि के वर्णनो से इन्होने कुछ विशेषता रखी है।

भावविलास की विशेषता—भरतादि आचार्यों ने संचारी भावों के केवल ३३ भेद माने हैं; परन्तु देवजी ने 'छल' को एक चौतीसवाँ भेद और माना है। रसो के इन्होंने दो भेद माने हैं। लौकिक और अलौकिक। फिर लौकिक के तीन भेद स्वप्न, मनोरथ और उपनायक तथा अलौकिक के श्रृंगार, हास्य आदि नौ भेद लिखे हैं। अलंकारों में इन्होंने केवल ३९ मुख्य माने हैं और उन्ही का इस ग्रन्थ में वर्णन किया है। शेष अलंकारों के सम्बन्ध में इनका मत है कि वे इन्हीं के भेद और उपभेद हैं।

इस ग्रन्थ का सम्पादन करके मैंने प्रत्येक दोहा, सवैया और कवित्त के आवश्यकतानुसार शब्दार्थ और भावार्थ दे दिये हैं; जिससे ग्रन्थ को समझने में कठिनाई न हो। जहाँ शब्दार्थ अथवा भावार्थ बोधगम्य

सरल प्रतीत हुआ वहां शब्दार्थ अथवा भावार्थ नहीं दिया गया। प्रत्येक 'विलास' के आदि मे उसमें वर्णित विषय की एक तालिका भी दे दी गयी है। इससे उस विलास में वर्णित विषय और भी स्पष्ट हो जाता है।

प्राचीन कविता के विद्यार्थियो और प्रेमियों ने यदि इस ग्रन्थ का कुछ भी आदर किया तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।

दारागंज, प्रयाग
विजयादशमी, १६६१

लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी

निवेदन

सन्तोष की बात है कि इधर कई वर्षों से हिन्दी की प्राचीन कविता के पठन-पाठन की ओर हिन्दी-पाठकों की रुचि बढ़ रही है। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ साहित्य-प्रेमी अब भी ऐसे हैं, जो प्राचीन कविता पर अश्लीलता इत्यादि का लाञ्छन लगाकर उसकी ओर से नाक-भौं सिकोड़ते रहते हैं; परन्तु इनकी संख्या अब दिन पर दिन कम ही होती जाती है। लोग प्राचीन कवियों के काव्यसौन्दर्य और रचना-कौशल को समझने लगे हैं। कहना नहीं होगा कि पहले पहल हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने ही अपनी ऊँची साहित्यिक परीक्षाएं प्रचलित कर के प्राचीन साहित्य के अध्ययन की ओर हिन्दी जनता का ध्यान आकर्षित किया; और अब तो भारत के कई सरकारी शिक्षाविभागों और अन्य कई सरकारी तथा ग़ैर-सरकारी संस्थाओं ने साहित्य की परीक्षाएं प्रचलित की हैं। इन सब संस्थाओं के परीक्षार्थियों को इस प्रकार के काव्यशास्त्र के ग्रन्थों के अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है। उनकी सुविधा के लिए साहित्यरत्न पंडित लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी का यह प्रयत्न अत्यन्त प्रशंसनीय है। "भाव-विलास" का कोई भी सुसम्पादित संस्करण अभी तक हमारे देखने में नहीं आया था। चतुर्वेदी जी ने इस ग्रन्थ का सम्पादन करके इस त्रुटि को कई अंशों में दूर कर दिया है। पं० लक्ष्मीनिधि जी महाकवि देव के ही प्रान्त के निवासी हैं; और माथुर होने के कारण आप की मातृभाषा भी ब्रजभाषा ही है। अतएव ब्रजभाषा से आप का स्वाभाविक प्रेम है, जो आप को मातृस्तन्य के साथ मिला है। ऐसे होनहार साहित्यप्रेमी नवयुवकों की इस ओर सुरुचि होना सचमुच ही अभिनन्दनीय है। हमें विश्वास है कि प्राचीन साहित्य के प्रेमी और प्रचारक सज्जन इस ग्रन्थ का समुचित समादर करके चतुर्वेदी जी का उत्साह बढ़ावेंगे।

लक्ष्मीधर वाजपेयी

विषय-सूची

विषय

भाव-विलास

प्रथम विलास

[भाव-विभाव-अनुभाव]

प्रथम और द्वितीय विलास
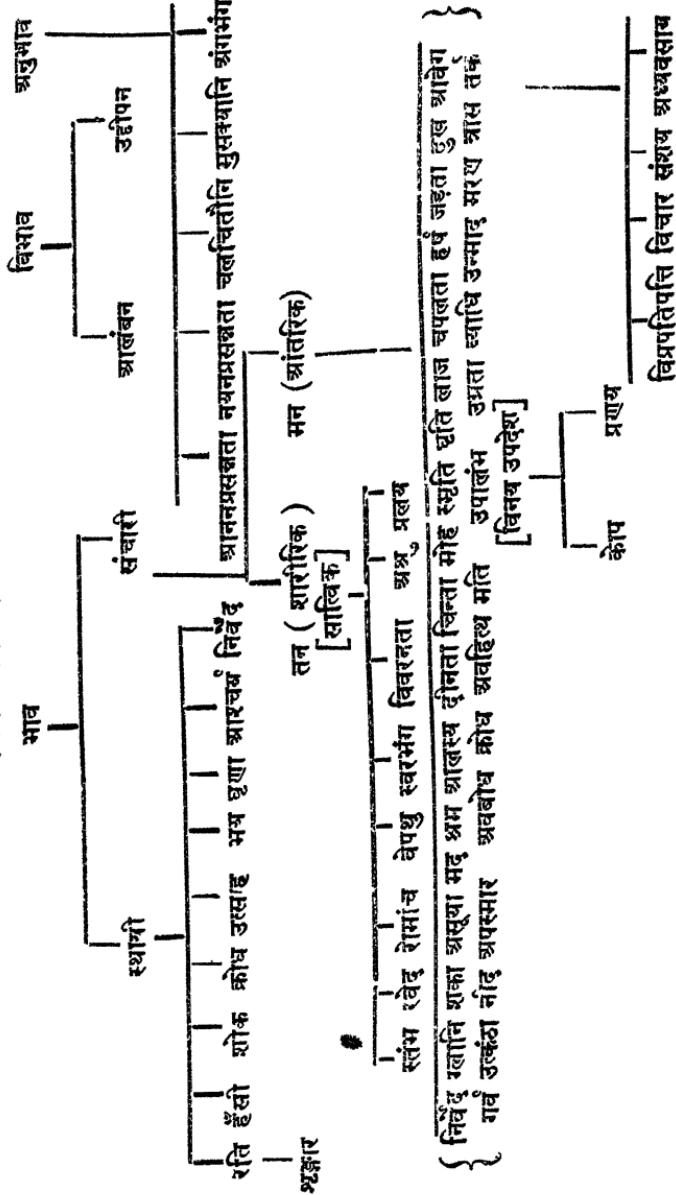
[देवजी ने 'छल' को ३४ वाँ संचारीभाव और माना है]

वन्दना

दोहा

राधाकृष्ण किसोर जुग, पग बंदों जगबंद।
मूरति रति शृङ्गार की, शुद्ध सच्चिदानंद॥

शब्दार्थ—जुग-दोनों। पग-चरण। बंदों-वन्दना करता हूँ। जगबंद (जगवंद्य)-जगत् के लिए वन्दनीय। मूरति-मूर्त्ति। रति-प्रेम। *सच्चिदानन्द-परब्रह्म परमेश्वर।

भावार्थ—मैं, प्रेम और शृङ्गार की मूर्त्ति, शुद्ध सच्चिदानन्द-स्वरूप, श्री राधाकृष्ण के संसार-पूज्य चरणों की वन्दना करता हूँ।

ग्रन्थ-परिचय

छप्पय

श्री वृन्दावन-चन्द चरणजुग, चरचि चित्त धरि।
दलमलि कलिमल सकल, कलुष दुख दोष मोष करि॥
गौरी-सुत गौरीस गौरि, गुरु-जन-गुण गाये।
भुवन-मात भारती सुमिरि, भरतादिक ध्याये॥
कवि देवदत्त शृङ्गार रस, सकल-भाव-संयुत सँच्यो।
सब नायकादि-नायक-सहित, अलंकार-वर्णन रच्यो॥

शब्दार्थ—श्रीवृन्दावन-चन्द-श्रीकृष्ण। चरचि-पूजाकरके। दलमलि-नष्ट करके। कलिमल-कलियुग के दोष। कलुष-पाप। मोष करि-नाश करके। गौरीसुत-श्रीगणेश। गौरीस-महादेव। गौरि-पार्वती। भुवनमात-संसार की माता, जगज्जननी। भारती-सरस्वती। भरतादिक-भरत आदि आचार्य। संयुत-सहित। सँच्यो-संचित किया। रच्यो-बनाया।

भाव

दोहा

अरथ धर्म तें होइ अरु, काम अरथ तें जानु।
तातें सुख, सुख को सदा, रस शृङ्गार निदानु॥
ताके कारण भाव हैं, तिनको करत विचार।
जिनहिं जानि जान्यो परै, सुखदायक शृंगार॥

शब्दार्थ—तें-से। अरु-और, तथा। तातें-इसलिए। निदानु-

कारण। ताके-उनके। जिनहिं जानि-जिनको जान लेने पर। जान्यो परै-ज्ञात होता है।

भावार्थ—धर्म से अर्थ, अर्थ से काम और काम से सुख प्राप्त होता है। सुख का कारण शृङ्गार रस है। शृङ्गार रस के कारण भाव हैं। यहाँ पर उन्ही का वर्णन किया जाता है; क्योंकि उन्हें जान लेने पर शृङ्गार सुखदायक प्रतीत होता है।

दोहा

थिति, बिभाव, अनुभाव अरु, कह्यो सात्विक भाव।
संचारी अरु हाव ये, वरण्यो षड्विधि भाव॥

शब्दार्थ—कह्यो-वर्णन किये हैं। षड्विधि-छः तरह के।

भावार्थ—स्थायी, विभाव, अनुभाव, सात्विक, संचारीभाव और हाव-ये भावों के छःभेद कहे गये हैं।

१—स्थायी-भाव-लक्षण

दोहा

जो जा रस की उपज में, पहिले अंकुर होइ।
सो ताको थिति भाव है, कहत सुकवि सब कोइ॥
नवरस के थिति भाव हैं, तिनको बहु बिस्तारु।
तिन मे रति थिति भाव तें, उपजत रस शृङ्गारु॥

शब्दार्थ—अंकुर होइ-पैदा होता है, उत्पन्न होता है। थिति भाव-स्थायी भाव। बहु-बहुत। बिस्तारु-फैलाव, वर्णन। उपजत-पैदा होता है।

भावार्थ—जिस रस के अनुसार जो भाव सर्व प्रथम हृदय मे उत्पन्न होता है उसे कवि लोग उसका स्थायी भाव कहते हैं। नव रसों मे नौ ही स्थायी भाव हैं और फिर उनके भी अनेक भेद हैं। इनमे जो रति स्थायी भाव है; उससे शृङ्गार रस की उत्पत्ति हुई है।

रति-लक्षण

दोहा

नेक जु प्रियजन देखि सुनि, आन भाव चित होइ।
अति कोविद पति कविन के, सुमति कहत रति सोइ॥

शब्दार्थ—नेक-थोड़ा भी। आन भाव-अन्य प्रकार का भाव। अतिकोविद-दिग्गज पंडित। पति कविन के-कवियों के सिरताज। सुमति-विद्वान। सोइ-उसे।

भावार्थ—अपने प्रियजन को देखकर अथवा उसके विषय मे सुनकर जो एक तरह का भाव (अर्थात् गुदगुदी या उमंग) हृदय मे उत्पन्न होता है, उसे कवि, पंडित तथा बुद्धिमान लोग रति कहते हैं।

उदाहरण पहला—(प्रियदर्शन से)

कवित्त

संग ना सहेली केली करति अकेली,
एक कोमल नवेली वर बेली जैसी हेम की।
लालच भरे से लखि लाल चलि आये सोचि,
लोचन लचाय रही रासि कुल नेम की॥

'देव' मुरझाय उरमाल उरझाय कह्यो,
दीजो सुरझाय बात पूछी छल छेम की ।
भायक सुभाय भोरें स्याम के समीप आय,
गांठि छुटकाइ गांठि पारि गई प्रेम की ॥

शब्दार्थ—सहेली-सखियाँ । केली-क्रीड़ा । वरबेली जैसी हेमकी-सोने की श्रेष्ठ लता के समान । लखि-देखकर । लोचन-आँखें । लचाय-झुकाकर । रासि-समूह । गरमाल-गले की माला । दीजो सुरझाय-सुलझा दो । छुटकाइ-खोलकर । गांठि छुटकाइ-गांठि को छुड़ाकर । गांठि·· प्रेम की-प्रेम की गाँठि बांध गयी ।

उदाहरण दूसरा—(प्रिय श्रवण से)

सवैया

गौने के चार चली दुलही, गुरु लोगन भूषन भेष बनाये ।
सील सयान सखीन सिखायो, सबै सुख सासुरेहू के सुनाये ॥
बोलिये बोल सदा हँसि कोमल, जे मन-भावन के मन भाये ।
यों सुनि ओछे उरोजनि पै, अनुराग के अंकुर से उठि आये ॥

शब्दार्थ—गौने-द्विरागमन । सील-शील, सम्मान करने का स्वभाव, लज्जा । सखीन-सखियों ने । सिखायो-सिखा दिया । सासुरे-ससुराल । मनभावन-पति । बोलिये-बोलना । मनभाये-मन को अच्छे लगनेवाले । ओछे-छोटे । उरोजनि-कुचद्वय । अनुराग-प्रेम ।

२—विभाव

दोहा

जे बिशेष करि रसनि को, उपजावत हैं भाव।
भरतादिक सतकवि सबै, तिनको कहत बिभाव॥
ते विभाव द्वै भांति के, कोविद कहत बखानि।
आलम्बन कहि देव अरु, उद्दीपन उर आनि॥

शब्दार्थ—रसनिको-रसो का। उपजावत-उत्पन्न करते हैं।

भावार्थ—जो भाव रसो को उत्पन्न करते हैं उन्हें भरतादिक आचार्य विभाव कहते हैं। विभावों को कवियो ने दो तरह का कहा है। एक आलम्बन और दूसरा उद्दीपन।

(क) आलम्बन

दोहा

रस उपजै आलम्बि जिहिं, सो आलम्बन होइ।
रसहि जगावै दीप ज्यों, उद्दीपन कहि सोइ॥

शब्दार्थ—उपजै-उत्पन्न हो। आलम्बि-आश्रय पाकर।

भावार्थ—जिनका आश्रय पाकर रसों की उत्पत्ति होती है, उसे आलम्बन और जो रसों को उद्दीप्त करते हैं वे उद्दीपन कहलाते हैं।

उदाहरण

सवैया

चितदै चितऊं जित ओर सखी, तित नन्दकिशोर की ओर ठई ।
दसहू दिस दूसरौ देखति ना, छबि मोहन की छिति माह छई ॥
कवि देव कहा लों कछू कहिये, प्रतिमूरति हौं उनही की भई ।
बृजबासिन कौ बृज जानि परै, न भयो बृजरी बृजराज मई ॥

शब्दार्थ—चितदै-मन लगाकर । चितऊं-देखती हूँ । जित ओर जिस तरफ़ । तित-उधर । दसहू दिस-दसों दिशाओ मे । छिति-पृथ्वी । प्रतिमूरति-प्रतिमूर्ति, छाया ।

(ख) उद्दीपन

दोहा

'गीत नृत्य उपवन गवन, आभूषन बन केलि ।
उद्दीपन शृङ्गार के, विधु, बसन्त, बन बेलि ॥

शब्दार्थ—नृत्य-नाच । उपवन गवन-बगीचो का जाना । बन-केलि-बनक्रीड़ा । विधु-चन्द्रमा ।

भावार्थ—गाना, नाचना, बगीचों में जाना, गहने पहनना, बन-क्रीड़ा करना, चन्द्रमा, और बसन्त ये शृङ्गार के उद्दीपन हैं ।

उदाहरण पहला—(गीत)

सवैया

आली अलापि बसन्त मनोरम मूरतिवन्त मनोज दिखावनि ।
पंचमनाद निखादहि में सुर, मूरछना गन ग्राम सुभावनि ॥

देव कहै मधुरी धुनि सौं, परवीन ललै कर बीन बजावनि ।
बावरी सी हौं भई सुनि आजु, गई गड़ि जी मै गुपाल की गावनि ॥

शब्दार्थ—आली-सखि । अलापि-गाकर । मूरतिवन्त-प्रत्यक्ष । मनोज-कामदेव । पंचम नाद, निखाद (निपाद)-स्वरो के भेद । सुर-स्वर । मूरछना-मूर्छना-जो दो स्वरो के बीच में बोली जाय । ग्राम-स्वरों का एक भेद । मधुरी-सुन्दर, मीठी । धुनि-ध्वनि, आवाज़ । बावरी सी-पागल सी, उन्मत्त सी । बीन-वाद्य विशेष । गई गडि-चुभ गयी । जी मै-मन मे, दिल में । गावनि-गीत, गाना ।

उदाहरण दूसरा—(नृत्य)

सवैया

पीरी पिछौरी के छोर छुटे, छहरै छबि मोर पखान की जामै ।
गोधन की गति बैनु बजैं, कविदेव सबै सुनि के धुनि आमै ॥
लाज तजी गृह काज तजे, मन मोहि रही सिगरी बृज बामै ।
कालिंदी कूल कदम्ब के कुंज, करैं तम तोम तमासौ सो तामै ॥

शब्दार्थ—पीरी-पीली । छहरै-शोभा देती है । जामैं-जिसमे । धुनि-ध्वनि । आमैं-आते हैं । तजी-छोड़ी । सिगरी-सब । बृजबामैं-बृज की स्त्रियाँ । कालिंदी-यमुना । कूल-किनारा । तमतोम-घना अन्धकार । तमासो तमाशा । सो-समान । तामैं-उसमें ।

उदाहरण तीसरा—(उपवन-गवन)

सवैया

बाग चली वृषभान लली सुनि, कुंजनि मै पिकपुञ्ज पुकारनि ।
तैसिय नूतन नूत लतान मै, गुञ्जत भौंर भरे मधु भारनि ॥

मोहि लई कविदेवन तें, अति रूप रचे बिकचे कचनारनि।
हेरत ही हरनीनयना को, हरो हियरा हरि के हिय हारनि॥

शब्दार्थ—वृषभानलली-राधिका। मैं-में। पिक-पुञ्ज-कोयलों का समूह। पुकारनि-बोल। तैसिय-वैसे ही। नूतन-नयी। नूत-अनोखा अनूठा गुञ्जत-गुंजारते हैं। भरे मधु भारनि-मधु के बोझ लदे हुए। बिकचे-खिले हुए। हेरत ही-देखते ही। हरनीनयना-हरिनी जैसे नैनों वाली। हरो-हरण किया, मोह लिया। हियरा-हृदय। हिय-हारनि-हृदय के हारों ने।

उदाहरण चौथा—(आभूषण)

खोरि मैं खेलन ल्याई सखी, सब बालको भेष बनाइ नवीनो।
आरसी में निज रूप निहारि, अनङ्ग तरङ्गनि सो मनु भीनो॥
जोति जवाहर हारन की मिलि, अञ्चल को छल क्यों पट झीनो।
हेरि इतै हरिनीनयना हरि, हैरत हेरि हरैं हंसि दीनो॥

शब्दार्थ—खोरि-गली, संकुचित मार्ग। नवीनो-नया। आरसी-दर्पण। अनङ्ग-कामदेव। पट-कपड़ा। झीनो-महीन। हेरि-देखकर।

उदाहरण पाँचवां—(बन-केलि)

सवैया

सोहे सरोवर बीच बधूबर, ब्याह को वेष बन्यो बर लीक सो।
लाज गड़े गुरु लोगन की पट, गांठि दै ठाड़े करैं इक ठीक सो॥
न्हात पमारी से प्यारी के ओठ ते, झूठौ मजीठ निहारि नजीक सो।
तीकी रंगी अँखियाँ अनुराग सों, पी की वहै पिकबैनी की पीक सो॥

शब्दार्थ—सोहे-अच्छी लगें। पमारी-मूंगा। मजीठ-लालरंग की औषधिविशेष। नजीक-निकट, पास। पी-पति। पिकबैनी-कोयल जैसी मधुर बोलनेवाली।

उदाहरण छठा—(विधु)

सवैया

दिन द्वैक तें सासुरे आई बधू, मन में मनु लाज को बीजबयो।
कविदेव सखी के सिखायें मरूकै, नह्यो हिय नाह को नेहनयो॥
चितवावत चैत की चन्द्रिका ओर, चितै पति को चित चोरिलयो।
दुलही के विलोचन वानन कौ, ससि आज को सान समानभयो॥

शब्दार्थ—मरूकैं-मुश्किल से। नह्यो-उत्पन्न हुआ। नाह-पति। नेह-स्नेह, प्रेम। चन्द्रिका-चांदनी। ससि-चन्द्रमा। सान-सिल्ली, धार रखने का पत्थर।

उदाहरण सातवां—(वसन्त)

सवैया

हेरत ही हरि लीनो हियो इन, आल रसाल सिरीष जम्हीरन।
चंपक बेली गुलाब जुही, पिचुमन्द मधूक कदम्ब कुटीरनि॥
खोलत काम कथा पिक बोलत, डोलत चंदन मन्द समीरनि।
केसर हार सिंगारन हू, करना कचनार कनैर करीरनि॥

शब्दार्थ—आल-वृत्तविशेष। रसाल-आम। सिरीष-वृत्तविशेष। जम्हीरनि-जम्बीरी नीबू, मरुआ। चंपक, गुलाब, जुही पिचुमन्द-पुष्प विशेष। पिक-पपीहा, कोयल। समीरनि-हवा। केसर, हार सिंगार, कचनार, कनैर, करीरनि-वृत्त विशेष।

दोहा

निज निज के संजोग तैं, रस जिय उपजतु होइ।
औरौ विविध विभाव बहु, बरनैं कवि सब कोइ ॥

शब्दार्थ—निज निज-अपने अपने। जिय-हृदय में। विविध-बहुत तरह के, अनेक प्राकर के।

भावार्थ—अपने अपने संयोगों के कारण हृदय में भिन्न भिन्न रसों की उत्पत्ति होती है अतः उनके अनुसार कवि लोगो ने विभागो के और भी बहुत से भेद बतलाये हैं।

उदाहरण

सवैया

सुनि के धुनि चातक मोरनि की, चहुँओरनि कोकिल कूकनि सों।
अनुराग भरे हरि बागन में, सखि रागतराग अचूकनि सों ॥
कविदेव घटा उनई जुनई, बन भूमि भई दल टूकनि सों।
रंगराती हरी हहराती लता, झुकि जाती समीर की झूकनि सों ॥

शब्दार्थ—अनुराग भरे-प्रेम में भरे हुए। अचूकनि सों-बिना चूके। घटा-बादल। उनई-उठी। हहराती-हिलती। समीर-हवा। झूकनि-झोंका।

३—अनुभाव

दोहा

जिनकों निरखत परस्पर, रस कौ अनुभव होइ ।
इनहीं कौ अनुभाव पद, कहत सयाने लोइ ॥१॥
आपुहि ते उपजाय रस, पहिले होंहि विभाव ।
रसहि जगावैं जो बहुरि, तौ तेऊ अनुभाव ॥२॥
आनन, नयन-प्रसन्नता, चलि-चितौनि मुसक्यानि ।
ये अभिनय सिंगार के, अङ्ग भङ्ग जुत जानि ॥३॥

शब्दार्थ—निरखत-देखने पर । सयाने-विद्वान । लोइ-लोग । बहुरि-फिर ।

भावार्थ—जिनको देखकर परस्पर रस का अनुभव हो उन्हें बुद्धिमान लोग अनुभाव कहते हैं। पहले रस की उत्पत्ति करनेवाले विभाव और फिर उसको अनुभव करानेवाले अनुभाव कहलाते हैं। मुख, आँखों की प्रसन्नता, कटाक्ष, मुस्काना, अङ्ग भङ्ग आदि अनुभावों के साधन हैं।

उदाहरण पहला—(आनन-प्रसन्नता)

सवैया

ठाढ़ो चितोत चकोर भयो, अनतै न इतौ तु कहूँ चित दीजतु ।
सामुहैं नंद किसोर सखी, कवि को मुसक्यानि सुधारस भीजतु ॥
भाग ते आइ उऔ 'कवि देव', सुदेख भटू भरि लोचन लीजतु ।
तेरे री चंदमुखी मुखचंद पै, पूरन चंद निछावरि कीजतु ॥

शब्दार्थ—ठाढो-खडा हुआ। चितौत-देखता है। चकोर-एक पक्षी जो चन्द्रमा को प्यार करता है। अनतै-दूसरी जगह। इतौ-इतना। चित-मन। सामुहैं-सामने। भागते-भाग्यवश। उग्यौ-उगा।

उदाहरण दूसरा—(नयन-प्रसन्नता)

सवैया

आई ही गाय दुहाइवे कों, सु चुखाइ चली न बछानको घेरति।
नैकु डराय नहीं कब की, वह माइ रिसाय अटा चढ़ि टेरति॥
यों कविदेव बड़े खन की, बड़रे दृग बीच बड़े दृग फेरति।
हौं मुख हेरति ही कबकी, जबकी यह मोहन को मुख हेरति॥

शब्दार्थ—बछान-बछड़े। नैकु-थोड़ा भी। डराय नहीं-नहीं डरती। माइ-माता। रिसाय-नाराज़ होती है। बड़े खन-बड़ी देर। बड़रे-बड़े। दृग-आँखें। हौं-मैं। हेरति ही-देखती थी।

उदाहरण तीसरा—(चल-चितौनि)

सवैया

हरि को इतै हेरत हेरत हेरि, उतै डर आलिन को परसै।
तनु तोरि के जोरि मरोरि भुजा, मुख मोरि कै बैन कहे सरसै॥
मिस सों मुसक्याइ चितै समुहें, 'कविदेव' दरादर सों दरसै।
दृगकोर कटाक्ष लगे सरसान, मनो सरसान धरैं बरसै॥

शब्दार्थ—इतै-इधर। हेरत हेरत देखते देखते। उतै-उधर। आलिन-सखियाँ। तनु-शरीर। मरोरि-मरोड़ कर के। भुजा-बाहें। बैन-

बातें। मिस-बहाना। दरसै-देखती है। दृगकोर-आँखों की कोर।

उदाहरण चौथा—(मुसक्यानि)

सवैया

जब तें जदुराई दई दुहिगाय, गये मुसक्याइ पछे घर के।
तब तें तन व्याकुल बालबधू, लखि लोग लुगाई सबै घर के॥
'कविदेव' न पावत बेदन बेद, रहे कुलदेवन के डर के।
नहिं जानत कान्ह तिहारे कटाछ, की कोरै करेजन मैं कर के॥

शब्दार्थ—बेदन-वेदना। बेद-वैद्य। कुलदेवन-कुल के देवता। तिहारे-तुम्हारे। कटाछ-कटाक्ष। कोरै-कोर। करेजन- कलेजे में। करके-कसकती हैं।

उदाहरण पांचवाँ—(अंगभंग)

सवैया

चंपक पात से गात मरोरि, करोरिक आप सुभाइ सचैयत।
मो मिस भेंटि भटू भरि अङ्क, मयङ्क से आनन ओठ अचैयत॥
देव कहे बिन बात चले नव, नील सरोज से नैन नचैयत।
जनति हौं भुजमूल उचाय, दुकूल लचाइ लला ललचैयत।

शब्दार्थ—चंपक-चंपा का फूल। पात-पत्ते। गात-शरीर। करोरिक-करोड़ों। मयङ्क-चन्द्रमा। नव-नली-सरोज-नये नीले कमल। नैन-आँखें। भुजमूल-बाँह का अग्रभाग। उचाय-उठाकर। दूकूल-कपड़ा। लचाइ-झुकाकर। ललचैयत-लुभाये जाते हैं।

दोहा

औरौ बिबिध बिभाव के, बहु अनुभावनु जानु ।
जिन सें रस जान्यो परै, ते कविदेव बखानु ॥

[illegible]—बहु [illegible] बहुत । जान्यो परै-ज्ञात हो ।

भावार्थ—भिन्न भिन्न विभावो के और भी अनेक तरह के अनुभाव होते है । जिनसे रसो का अनुभव हो वे सभी अनुभाव कहलाते है ।

सवैया

आवति जाति गली मैं लली, हरि हेरि हरै हियरा हहरैगी ।
बैरी बसैं घर घाल घरी मै, घरै घर घेरि घरी उघरैगी ॥
हौं कविदेव डरौं मन मै, मनमोहनी तू मन मै न डरैगी ।
हाहा बलाइ ल्यौं पीठ दै बैठुरी, काहू अनीठि की दीठि परैगी ॥

शब्दार्थ—बैरी-शत्रु । हौं-मैं । बलाइल्यौं-बलिहारी जांऊ, बलैया लूँ । दीठि-दृष्टि, नज़र ।

बातें। मिस-बहाना। दरसै-देखती है। दृगकोर-आँखों की कोर।

उदाहरण चौथा–(मुसक्यानि)

सवैया

जब तें जदुराई दई दुहिगाय, गये मुसक्याइ पछे घर के।
तब तें तन व्याकुल बालबधू, लखि लोग लुगाई सबै घर के॥
'कविदेव' न पावत बेदन बेद, रहे कुलदेवन के डर के।
नहिं जानत कान्ह तिहारे कटाछ, की कोरै करेजन में कर के॥

शब्दार्थ—बेदन-वेदना। बेद-वैद्य। कुलदेवन-कुल के देवता। तिहारे-तुम्हारे। कटाछ-कटाक्ष। कोरै-कोर। करेजन- कलेजे में। करके-कसकती हैं।

उदाहरण पांचवाँ–(अंगभंग)

सवैया

चंपक पात से गात मरोरि, करोरिक आप सुभाइ सचैयत।
मो मिस भेटि भटू भरि अङ्क, मयङ्क से आनन ओठ अचैयत॥
देव कहे बिन बात चले नव, नील सरोज से नैन नचैयत।
जनति हौं भुजमूल उचाय, दुकूल लचाइ लला ललचैयत।

शब्दार्थ—चंपक-चंपा का फूल। पात-पत्ते। गात-शरीर। करोरिक-करोडों। मयङ्क-चन्द्रमा। नव-नली-सरोज-नये नीले कमल। नैन-आँखें। भुजमूल-बाँह का अग्रभाग। उचाय-उठाकर। दूकूल-कपड़ा। लचाइ-झुकाकर। ललचैयत-लुभाये जाते हैं।

अनुभाव

औरौ बिबिध विभाव के, बहु अनुभावनु जानु।
जिन सें रस जान्यो परै, ते कविदेव बखानु ॥

शब्दार्थ—बहु-अनेक, बहुत। जान्यो परै-ज्ञात हो।

भावार्थ—भिन्न भिन्न विभावों के और भी अनेक तरह के अनुभाव होते हैं। जिनसे रसो का अनुभव हो वे सभी अनुभाव कहलाते हैं।

आवति जाति गली मैं लली, हरि हेरि हरैं हियरा हहरैगी।
बैरी बसैं घर घाल घरी मैं, घरै घर घेरि घरी उघरैगी ॥
हौं कविदेव डरौं मन मै, मनमोहनी तू मन मै न डरैगी।
हाहा बलाइ ल्यौ पीठ दै बैठुरी, काहू अनीठि की दीठि परैगी ॥

शब्दार्थ—बैरी-शत्रु। हौं-मैं। बलाइल्यौं-बलिहारी जाऊं, बलैया लूँ। दीठि-दृष्टि, नज़र।

प्रथम विलास
समाप्त

द्वितीय विलास

[संचारी-भाव]

(इस विलास की तालिका प्रथम विलास के साथ है)

सात्विक भाव

दोहा

थिति बिभाव अनुभाव तें, न्यारे अति अभिराम।
सकल रसनि मै संचरें, संचारी कउ नाम ॥
ते सारीर रु आंतर, द्विविध कहत भरतादि।
स्तंभादिक सारीर अरु, आंतर निरबेदादि ॥
आठ भेद स्तंभादि के, तिनको सात्विक नाम।
तेई पहले बरनिये, सरस रीति अभिराम ॥

शब्दार्थ—न्यारे-निराले, अलग। अभिराम-सुन्दर। द्विविध-दो तरह के। भरतादि-भरत आदि आचार्य।

भावार्थ—स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव से पृथक जो भाव रसों में सञ्चार करते हैं उन्हें सञ्चारी भाव कहते हैं। ये सञ्चारी भाव भी भरतादि आचार्यों ने दो तरह के माने हैं। एक शारीरिक और दूसरे मानसिक। इनमें स्तम्भ आदि शारीरिक कहलाते हैं और निर्वेद आदि मानसिक। स्तम्भादि के जो आठ भेद हैं; वे सात्विक कहलाते हैं पहले उन्हीं का वर्णन किया जाता है।

दोहा

स्तंभ, स्वेद, रोमांच, अरु, वेपथु अरु स्वर भङ्ग।
बिवरनता, आँसू, प्रलय, ये सात्विक रस अङ्ग॥

शब्दार्थ—अरु-और।

भावार्थ—स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, वेपथु, स्वरभङ्ग, वैवर्ण्य, आँसू, और प्रलय ये आठ सात्विक भाव हैं।

१—स्तम्भ

दोहा

रिस बिस्मय भय राग सुख, दुख बिषाद तें होय।
गति निरोध जो गात मैं, तम्भु कहत कवि लोय॥

शब्दार्थ—रिस-क्रोध। बिस्मय-आश्चर्य। गति निरोध-गति का रुकना। गात- शरीर। तम्भु-स्तम्भ। लोय-लोग।

भावार्थ—क्रोध, आश्चर्य, भय, सुख, दुख आदि कारणों से, शरीर के अवयवों की गति का जो निरोध होता है उसे कवि लोग स्तम्भ कहते हैं।

उदाहरण

दोहा

गोरी सी ग्वालिन थोरी सी बैस, जगी तन जोबन जोति नई है।
आवत ही अबही उततें, कविदेव सुनैंकु इतें चितई है॥
योहि कटाछनु मोहि चितौतु, चितौतहि मोहन मोहि लई है।
व्याध हनी हरिनी लौं बधू, वह वा घर लौं भिहराति गई है॥

शब्दार्थ—थोरी-थोड़ी, कम । बैस-उम्र । जोबन-यौवन । चितौतहि-देखते ही । मोहि लई-मोह लिया । [illegible] लौ-व्याध द्वारा घायल की गयी हरिणी के समान । वा घर-उस घर । लौं-तक । भिहराति-घबड़ाई हुई ।

२—स्वेद

दोहा

क्रोध, हर्ष, संताप, श्रम, घातादिक भय लाज ।
इनते सजल सरीर सो, स्वेद कहत कबिराज ॥

शब्दार्थ—इनते-इनसे । संताप-कष्ट ।

भावार्थ—क्रोध, हर्ष, संताप, परिश्रम, भय, लाज आदि के कारण अंग प्रत्यंग में जो जलकण दिखायी देने लगते हैं उन्हें कवि लोग स्वेद कहते हैं ।

उदाहरण

सवैया

हेलिन खेलिन के मिस सुन्दरि, केलि के मन्दिर पेलि पठाई ।
बाल बधू बिधु सौ मुख चूमि, लला छल सों छतियाँ सों लगाई ॥
लाल के लोल कपोलनि मैं, झलक्यो जल-दीपति दीप की झाँई ।
आरसी मैं प्रतिबिम्बत है, मनो देव दिवाकर देत दिखाई ॥

शब्दार्थ—हेलिन-सखियों ने । मिस-बहाने । केलि के मन्दिर-क्रीड़ा-गृह में । पेलि पठाई-जबर्दस्ती घुसादी । बिधु सौ मुख-चन्द्रमा के समान मुख । चूमि-चूमकर । लोल-सुन्दर । कपोलनि-गाल । मैं-में । झलक्यो जल दीपति दीप की झाँई-पसीने में दीपक की लौ झलकने लगी । आरसी......दिखाई-मानो दर्पण में सूर्य का प्रतिबिम्ब झलक रहा हो ।

३—रोमाञ्च

दोहा

आलिंगन, भय, हर्ष, अरु, सीत कोप तें जानु।
उठत अंग में रोम जे, ते रोमांच बखानु॥

शब्दार्थ—कोप-क्रोध।

भावार्थ—आलिंगन, भय, हर्ष, और शीतादि के कारण शरीर के रोएं जब खड़े हो जाते हैं तब उन्हें रोमाञ्च कहते हैं।

उदाहरण

कूल चली जल केलि के, कामिनि, भावते के सँग भाति भली सी।
भींजे दुकूल में देह लसै, कविदेव जू चम्पक चारु दली सी॥
बारि के बूंद चुवैं चिलकैं, अलकै छवि की छलकै उछली सी।
अञ्चल झीन झकैं झलकै, पुलकैं कुच कन्द कदम्ब कली सी॥

शब्दार्थ—कूल-किनारे। जल केलिके-जल-क्रीडा करके। कामिनि-स्त्री। भावते-पति, प्रेमी। भाति-शोभायमान। भींजे-भीगे हुए। दुकूल-कपड़े। लसै-शोभायमान। चम्पक-चम्पा पुष्प। चारु-सुन्दर। दली सी-कली के समान। झलकैं-दिखायी देते हैं। पुलकैं-पुलकायमान हो।

४—वेपथु

दोहा

प्रिय-आलिंगन हर्ष भय, सीत कोप तें जानु।
अंग कम्प प्रस्फुरन बिनु, वेपथु ताहि बखानु॥

शब्दार्थ—प्रस्फुरन-रोमाञ्च ।

भावार्थ—प्रिय के आलिंगन, हर्ष, भय, तथा शीत कोपादि के कारण जब शरीर कांपने लगता है और रोमाञ्च नहीं होता तब उसे वेपथु कहते हैं ।

उदाहरण

सवैया

देव दुहून के देखत ही, उपज्यो उरमैं अनुराग अनूनों ।
डोलत हैं अभिलाष भरे, सुलग्यौ विरह ज्वर अंग अभूनों ॥
तौ लौं अचानक ह्वै गई भेट, इतै उत ठौर निहारत सूनों ।
प्रीति भरे उर भीति भरे वन, कुंज मे कम्पति दम्पति दूनो ॥

शब्दार्थ—दूहून-दोनो । उर में-हृदय में । अनुराग-प्रेम । अनूनो अन्यून, बहुत । सूनों-एकान्त । भीति-भय, डर । दम्पति-पति-पत्नी ।

५—स्वरभङ्ग

दोहा

जो रिस भय मुदमद भये, निकसै गदगद बानि ।
ताही को स्वरभङ्ग कहि, कबिबर कहत बखानि ॥

शब्दार्थ—रिस-क्रोध ।

भावार्थ—क्रोध, भय, हर्ष आदि के कारण जो गद्गद् वाणी मुँह से निकलती है उसे कवि लोग स्वरभङ्ग कहते हैं ।

उदाहरण

सवैया

परदेस तें प्रीतम आये हिए, इक आइ के आली सुनाई यही ।

कविदेव अचानक चौंक परी, सुनि तें, बलि वा छतियाँ उमही ॥
तब लौं पिय आँगन आइ गये, धन धाय हिये लपटाय रही ।
अँसुवा ठहरात गरौ घहरात, मरू करि आधिक बात कही ॥

शब्दार्थ—आली-सखी । अचानक-यकायक, अकस्मात । छतियाँ उमही-हृदय भर आया । धाय-दौड़ कर । घहरात-घरघराता है । मरू करि-मुश्किल से, कठिनता से । आधिक-आधी ।

९—बिवरनता

दोहा

भय, बिमोह अरु कोप तें, लाज सीत अरु घाम ।
मुख दुति औरैं देखिये, सो बिबरनता नाम ॥

शब्दार्थ—कोप-क्रोध । सीत-शीत । घाम-धूप ।

भावार्थ—भय, मोह, क्रोध, लज्जा, शीत तथा घामादि के कारण मुख अथवा शरीर की कान्ति के बदल जाने को विवरनता कहते हैं

उदाहरण

सवैया

सुन्दरि सोवति मन्दिर मैं, कहूं सापने मैं निरख्यो नँदु नन्द सौ ।
त्यों पुलक्यौ जल सों झलक्यौ उर, औचक ही उचक्यौ कुचकंद सौ ॥
तौ लगि चौंक परी कहि देव, सुजानि परौ अभिलाष अमन्द सौ ।
आलिन कौ मुख देखत हीं, मुख भावती को भयो भोर कौ चन्दसौ ॥

शब्दार्थ—मन्दिर-गृह, घर । सापने-सपने में । निरख्यो-देखा । पुलक्यौ-पुलकित हुआ । उर-हृदय । औचक-यकायक । भोर के चन्द सौ-सबेरे के चन्द्रमा के समान अर्थात् फीका, निस्तेज ।

७—अश्रु

दोहा

विपल विलोकत धूम भय, हर्ष, अमर्ष, विषाद।
नैनन नीर निहारिये, अश्रु कहे निरबाद॥

शब्दार्थ—निरबाद-निश्चय, अवश्य।

भावार्थ—धुँवा, भय, हर्ष विषादादि के कारण आँखो मे जो पानी निकलने लगता है उसे अश्रु कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

बोलि उठो पपिहा कहूं पीव, सु देखिबे को सुनि के धुनि धाई।
मोर पुकारि उठे चहुँ ओर, सुदेव घटा घिरकी चहुँघाँई॥
भूलि गई तिय को तन की सुधि, देखि उतै बन भूमि सुहाई।
साँसनि सों भरि आयौ गरौ अरु, आँसुन सों अँखिया भरि आईं॥

शब्दार्थ—धाई-दौड़ी। चहुँघाँई-चारो ओर। साँसनि सो-श्वास भरने से। भरि आयौ गरौ-गला भर आया। आँसुन सों-आँसुओं से।

८—प्रलय

दोहा

प्रिय दर्शन, सुमिरन, श्रवन, होत अचलगति गात।
सकल चेष्टा रुकि रहै, प्रलय कहैं कवि तात॥

शब्दार्थ—सुमिरन-स्मरण

भावार्थ—अपने प्रिय के दर्शन, स्मरण, अथवा श्रवण से तन्मय होकर शरीर की चेष्टा के रुक जाने को प्रलय कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

गोरी गुमान भरी गज गामिनि, कालि धौं को वह कामिनि तेरे।
आई जु ती सुचितैं मुसक्याइ कै, मोहि लई मनमोहन मेरे॥
हाथन पाँय हलें न चलें अँग, नीरज नैन फिरैं नहिं फेरे।
ठौर सुठौर ही ठाढ़ी चितौति, लिखी मनु चित्र विचित्र चितेरे॥

शब्दार्थ—गुमान भरी-गर्वीली। गज-गामिन-हाथी की तरह चाल चलनेवाली। चितौति-देखती है। लिखी......चितेरे-मानो किसी कुशल चित्रकार ने चित्र में लिख दिया हो।

आंतर सञ्चारी भाव

दोहा

सात्विक होत शरीर ते, ताही तें सारीर।
अन्तर उपजै आंतरिक, ते तेंतिस कहि धीर॥

शब्दार्थ—उपजै-उत्पन्न होते हैं।

भावार्थ—सात्विक भाव शरीर से उत्पन्न होते हैं, इसलिए शारीरिक कहलाते हैं और आन्तर मन से पैदा होते हैं अतः आंतरिक कहे जाते हैं; ये तेंतीस तरह के होते हैं।

छप्पय

प्रथम होय निर्वेद ग्लानि संका सुयाकउ।
मद अरु श्रम आलस्य, दीनता चिंता बरनउ॥

मोह सुमृत धृति लाज, चपलता हर्ष बखानउ ।
जड़ता दुख आवेग, गर्व उत्कण्ठा जानउ ॥
अरु नींद अवस्मृति सुप्रति अब, बोध क्रोध अबहित्थ मति ।
उग्रत्व व्याधि उन्मादअरु, मरन त्रास अरु तर्कतति ॥

शब्दार्थ—सूया-असूया ।

भावार्थ—निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, मद, श्रम, आलस्य, दीनता, चिन्ता, मोह, स्मृति, धृति, लाज, चपलता, हर्ष, जडता, दुख, आवेग, गर्व, उत्कण्ठा, नींद, अपस्मार, अवबोध, क्रोध, अवहित्थ, मति, उपालम्भ, उग्रता, व्याधि, उन्माद, मरण, त्रास, औरतर्क ये ३३ आतरिक संचारी भाव हैं ।

१—निर्वेद

चिंता अश्रु प्रकाश करि, अपनोई अपमानु ।
उपजहि तत्व ज्ञान जहँ, सो निर्वेद बखानु ॥

शब्दार्थ—अश्रु-आँसू ।

भावार्थ—अपने को धिक्कारने तथा संसार के प्रति विरक्ति होकर तत्वज्ञान उत्पन्न होने को निर्वेद कहते हैं। इसमें चिंता, आँसू आदि लक्षण प्रकट होते हैं ।

उदाहरण

सवैया

मोह मढ़्यो चतुराई चढ़्यो, चित गर्व बढ़्यो करि मान सों नातौ ।
भूलि परौ तब तौ मद मन्दिर, सुन्दरता गुन जोबन मातौ ॥
सूझि परी कविदेव सबै अब, जानि परौ सिगरौ जग जातौ ।
नैसुक मो में जो होतो सयान तौ, हो तो कहा हरि सो हित हातौ ॥

शब्दार्थ—मढ़यो-मढ़ा हुआ, सना हुआ। मातौ-उन्मत्त। सिगरो-सब। नैसुक-थोड़ा भी।

२—ग्लानि

दोहा

भूख प्यास अरु सुरत सम, निरबल होय शरीर।
सिथिल होय अवयव सबै, ग्लानि कहत सो धीर॥

शब्दार्थ—सिथिल-शिथिल।

भावार्थ—भूख, प्यास आदि के कारण जब शरीर के समस्त अवयव शिथिल होकर निर्बल पड जाते हैं तब उसे ग्लानि कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

रंग भरे रति मानत दम्पति, बीत गई रतिआ छिन ही छिन।
प्रीतम प्रात उठे अलसात, चितै चित चाहत धाय गह्यो धन॥
गोरी के गात सबै अँगिरात, जु बात कही न परी सु रही मन।
भौहैं नचाय लचाय के लोचन, चाय रही ललचाय लला मन॥

शब्दार्थ—दम्पति-पति-पत्नी। रतिआ-रात। अलसाय-अलसाते हुए। अंगिरात-अँगड़ाते हैं। चाय रही-देखती रह गयी।

३—संका

दोहा

अपराधादि अनीति करि, कंपै करै छिपाय।
ताही को संका कहैं, सबै कविन के राय॥

शब्दार्थ—करै छिपाय-छिपाती है।

भावार्थ—अपराध अथवा किसी प्रकार की अनीति कर उसे छिपाने के भाव को शंका कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

या डर हौं घर ही मैं रहौं, कविदेव दुरो नहिं दूतनि को दुख।
काहू की बात कही न सुनी मन, माँहि बिसारि दियो सिगरो सुख॥
भीर मैं भूले भये सखि मैं, जब ते जदुराई की ओर कियो रुख।
मोहि भटू तब ते निस द्यौस, चितौत ही जात चवाइन कौ मुख॥

शब्दार्थ—दुरो-छिपा। सिगरो-सब। निस-रात। द्यौस-दिन। चितौत.....मुख-चवाव करनेवालों के मुख को देखते बीतता है। चवाइन-निंदा करनेवाले

४—असूया

दोहा

क्रोध कुबोध बिरोध ते, सहै न यह अधिकारु।
उपजै जहँ जिय दुष्टता, सु असूया अवधारु॥

शब्दार्थ—जिय-हृदय मे। अवधार-समझो, जानो।

भावार्थ—दूसरे के सुख को सहन न कर न मन में क्रोध, विरोधादि से दुःख पहुँचाने के भाव को असूया कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

गोकुल गाँव की गोपबधू बनि, कै निकसीं उर दै दै बुलायो ।
सोरही साज सिंगार सबै, बन देखन को बहु भेप बनायो ॥
राधिका के हिय हेरि हरा, हरि के हिय कौ पिय को पहिरायो ।
केती तहाँ तियती तिन भौतिन, मोतिन सों तिनको तन तायो ॥

शब्दार्थ—सिंगार-श्रृंगार । हेरि-देखकर ।

५—मद

दोहा

सो मद जहँ आसव पिये, हर्ष होत हिय बीच ।
नीद हास रोदन करै, उत्तम, मध्यम, नीच ॥

शब्दार्थ—आसव-मदिरा । हिय बीच- हृदय में । हास-हँसी । रोदन-रोना ।

भावार्थ—मद्यपान करने के कारण, हर्षित होने, सोने, हँसने तथा रोने आदि की वृत्तियो को मद कहते है ।

उदाहरण

सवैया

आसव सेइ सिखाये सखीन के, सुन्दरि मन्दिर मैं सुख सोवै ।
सापने मैं बिछुरै हरि हेरि, हरैं इ हरैं हरनी दृग रोवै ॥
देव कहै उठि के बिरहानल, आनंद के अंसुवान समोवै
आजुही भाजि गई सब लाज, हँसै अरु मोहन को मुख जोवै ॥

शब्दार्थ—आसव-मदिरा। हरिनीदृग-हरिनी जैसे नेत्रवाली। बिरहानल-वियोग की आग। जोवै-देखती है।

६—श्रम

दोहा

अति रति अति गति ते जहाँ, उपजै अति तन खेद।
सो श्रम जामें जानिये, निरसहता अरु स्वेद॥

शब्दार्थ—खेद-दुख।

भावार्थ—अति रति अथवा किसी अन्य कार्य के अधिक करने से शरीर मे जो थकावट आती है उसे श्रम कहते हैं। इसमें पसीना आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

उदाहरण

कवित्त

खरी दुपहरी बीच तरुन तरु नगीच,
सही परै तरनि के करनि की जोति है।
तामें तजि धाम चली श्याम पै विकल बाम,
काम सरदाम बपु रूपहि बिलोति है॥
बड़े बड़े बारनि तैं हारिन के भारनि तैं,
थाकी सुकुमारि अंग स्वेद रङ्ग धोति है।
संग न सहेली सु अकेली केली कुञ्जन मै,
बैठति, उठति, ठाढ़ी होति, चलि होति है।

शब्दार्थ—खरी दुपहरी-कड़ी धूप। नगीच-पास, निकट। तरनि सूर्य। करनि-किरणें। विकल-व्याकुल। बारनि तैं-बालो से। हारनि के

भारनि तें-हारों के बोझ से। स्वेद-पसीना। ठढ़ी होति-खडी होती है। चलि होति है-चल देती है।

७—आलस्य

दोहा

बहु भूषादिक भाव ते, कारजु कहौ न जाय।
सो आलस्य जहां रहै, तन अक्षमता छाय॥

शब्दार्थ—बहु-बहुत। कारजु-कार्य। अक्षमता-असमर्थता।

भावार्थ—बहुत भूषणादि के कारण शरीर असमर्थ हो जाने और अपना कार्य न कर सकने को आलस्य कहते हैं।

उदाहरण

कवित्त

ऊधौ आये ऊधौ आये, हरि कौ संदेसौ लाये,
सुनि, गोपी गोप धाये, धीर न धरत हैं।
बोरी लगि दौरीं उठीं भोरी लौं भ्रमति मति,
गनति न जनो गुरु लोगन दुरत हैं॥
ह्वै गई बिकल बाल बालम वियोग भरी,
जोग की सुनत बात गात त्यों जरत हैं।
भारे भये भूषन सम्हारे न परत अङ्ग,
आगे को धरत पग पाछे को परत हैं॥

शब्दार्थ—संदेसौ-संदेशा, हाल, समाचार। दौरी-दौड़ी। गात-शरीर। भारे भये-भारी हो गये। सम्हारे न परत-सम्हाले नहीं जाते। पग-पैर। पाछे-पीछे।

८—दीनता

दोहा

दुरगति बहु बिरहादि तै, उपजै दुःख अनन्त।
दीन बचन मुख ते कढ़े, कहैं दीनता सन्त॥

शब्दार्थ—दुरगति (दुर्गति)-बुरी दशा।

भावार्थ—वियोग के कारण अत्यन्त दुःख पाने पर जब मुख से दीन वचन निकल पड़ते हैं तब उसे दीनता कहते हैं।

उदाहरण

कवित्त

रैन दिन नैन दोऊ मास ऋतु पावस के,
बरसत बड़े बड़े बूंदनि सों झरिये।
मैन सर जोर मारे पवन झकोरनि सों,
आई है उमगि छिनि छाती नीर भरिये॥
टूटो नेह नांव छूटौ श्यामसों सुहानुगुन,
ताते कविदेव कहैं कैसे धीर धरिये।
बिरह नदी अपार बूड़त ही मँझधार,
ऊधौ अब एक बार खेइ पार करिये॥

शब्दार्थ—मैन सर-कामदेव रूपी तालाब। कैसे......धरिये-धैर्य कैसे रखा जाय। मंझधार-बीच धार में। खेइ-खेकर।

९—चिन्ता

दोहा

इष्ट वस्तु पायें बिना, एक आस चितु होइ।
स्वांस, ताप, वैवरण जँह, चिन्ता कहियतु सोइ॥

शब्दार्थ—इष्ट वस्तु-इच्छित वस्तु।

भावार्थ—अपनी इच्छित वस्तु को न पाने पर उसी की आशा में व्याकुल रहने को चिन्ता कहते है। इस चिन्ता मे श्वांस, ताप, विवरनता आदि लक्षण होते हैं।

उदाहरण

सवैया

जानति नाहि हरै हरि कौन के, ऐसी धौ कौन बधूमन भावै।
मोही सों रूठि के बैठि रहे, किधौं कोई कहूँ कछू सोध न पावै॥
वैसिय भाति भटू कबहूँ अब, क्योहूँ मिलै, कहूँ कोई मिलावै।
आँसुनि मोचति सोचति यों, सिगरौ दिन कामिनि काग उड़ावै॥

शब्दार्थ—सोध न पावै-खोज नहीं मिलती। आँसुनि मोचति-आँसू गिराती है। सिगरौ दिन-दिन भर। कामिनि काग उड़ावै-कौए उड़ाती रहती है (कोई आने वाला होता है तब स्त्रियां कौए को उसके आगमन का सूचक समझ उड़ाती हैं)

१०—मोह

दोहा

अद्भुत दरसन बेग भय, अति चिन्ता अति कोह।
जहाँ मूर्छा विस्मरन, लंभतादि कहु मोह॥

शब्दार्थ—कोह-क्रोध। विस्मरन-विस्मरण, भूलना।

भावार्थ—अद्भुत दरसन, भय, अत्यन्त चिन्ता आदि के कारण मूर्छा होकर शरीर का जब ज्ञान जाता रहता है तब उसे मोह कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

औरौ कहा कोऊ बालबधू है, नयो तन जोबन तोहि जनायो।
तेरेई नैन बड़े बृज मैं, जिनसो बस कीनों जसोमति जायो॥
डोलतु है मनों मोल लियो, कविदेव न बोलत बोल बुलायो।
मोहन कौ मन मानिक सौगुन, सो गुहिते उर सो उरझायो॥

शब्दार्थ—औरौ-दूसरी भी। जसोमति [illegible]। मनो... लियो-मानो मोल लिया हुआ है।

११—स्मृति

दोहा

संसकार सम्पति विपति, अधिक प्रीति अति त्रास।
प्रिय, अप्रिय, सुमिरन, सुमृति, इकचित मौन उसांस॥

शब्दार्थ—अतित्रास-अधिक भय। उसांस-श्वांस भरना।

भावार्थ—सम्पत्ति, विपत्ति, प्रीति, त्रास, प्रिय, अप्रिय बातों के एकचित्त होकर स्मरण करने को स्मृति कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

नीर भरे मृग कैसे बड़े दृग, देखति नीचे निचाइ निचोलनि।

लै-लै उसांसे लिखे धरनी धरि, ध्यान रहै करि दीठि अडोलनि ॥
बैठि रहै कबहूँ चुप ह्वै, कविदेव कहे कर चापि कपोलनि ।
बालम के बिछुरे यह बाल, सुने नहिं बोल न बोलति बोलनि ॥

शब्दार्थ—नीर भरे मृग कैसे बड़े दृग-हिरन के समान आँसुओं से भरी बड़ी-बडी आँखे । लै लै उसांसे-बार बार श्वांस भरकर । डीठि अडोलनि-एकटक दृष्टि । कर चापि कपोलनि-हाथ पर गाल रख कर । सुने... .....बोलनि-न किसी की सुनती है और न स्वयं कुछ कहती है ।

१२—धृति

दोहा

ज्ञान शक्ति उपजै जहाँ, मिटै अधीरज दोष ।
ताही सों धृति कहत जहँ, जथा लाभ सन्तोष ॥

शब्दार्थ—अधीरज-अधैर्य ।

भावार्थ—जब सत्संगादि किसी कारण से अधैर्य मिटकर ज्ञान शक्ति उत्पन्न होती है और मन सन्तोष लाभ करता है तब उसे धृति कहते हैं ।

उदाहरण

सवैया

रावरौ रूप रह्यो भरि नैननि, बैननि के रस सों श्रुति सानो ।
गात में देखत गात तुम्हारे, ये बात तुम्हारीये बात बखानों ॥
ऊधौ हहा हरि सों कहियो, तुम हौ न यहाँ यह हौं नहिं मानों ।
यातन तें बिछुरे तु कहा, मनते अनतै जु बसौ तब जानों ॥

शब्दार्थ—रावरौ-आपका । नैननि-आँखों में । श्रुति-कान ।

तुम......मानो-तुम यहाँ नहीं हो यह मैं नहीं मानती। बिछुरे-अलगहुए। अनतैं-अलग।

१३—लाज

दोहा

दुराचार अरु प्रथम रत, उपजै जिय संकोचु।
लाज कहै तासों जहाँ, मुख गोपन गुरु सोचु॥

शब्दार्थ—दुराचार-व्यभिचार। मुख गोपन-मुंह छिपाने का भाव।

भावार्थ—व्यभिचार अथवा प्रथम समागम के समय जो संकोच उत्पन्न होता है और जिसके कारण गुरुजनों के भयवश मुख छिपाने का भाव उत्पन्न होता है उसे लाज कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

आजु सखी सुख सोई सुतो, सखी सांचेहू सोच सकोच के हाते।
हातौ भयो कहु कैसे सकोच, बढ़ै निस नाह सों नेह के नाते॥
कैसी कही रति मानि रही, रति मन्दिर मैं मदिरा मद माते।
मारि हथेरी हरे हिय देव, सुदाबि रही अँगुरी इक दाँते॥

शब्दार्थ—नेह के नाते-प्रेम का रिश्ता। दाबिरही-दबा रही। अँगुरी-उँगली। दाँते-दाँतों तले।

१४—चपलता

दोहा

रागरु क्रोध बिरोध तें, चपल चेष्टा होय।
कारज की उत्तालता, कहत चपलता सोय॥

शब्दार्थ—उत्तालता-उतावली, अस्थिरता।

भावार्थ—[illegible], क्रोधादि के कारण, स्थिरता का न रहना चपलता कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

खेलत मै वृषभानु सुता, कहुँ जाइ धँसी बन कुंजन मै ह्वै।
डार सों हार तहाँ उरझ्यौ, सुरझाय रही कविदेव सखी द्वै॥
तौ लगि आप गयो उतते, सु नगीच मनो चित बीच परे छ्वै।
छोहरवा हरवा हरवाइ दै, छोरि दियो छल सों छतिया छ्वै॥

शब्दार्थ—वृष-भानु-सुता-राधा। जाइ धँसी–जा घुसी। डार... .उरझ्यौ-वहाँ डाल मे हार उलझ गया। [illegible]–सुलझाने लगी। तौलगि-तब तक। उततें-उधर से। नगीच-पास, निकट। छोहरवा-छोहरा।

१५—हर्ष

दोहा

प्रिय दर्शन श्रवनादि ते, होय जु हिये प्रसाद।
बेग, स्वेद, आँसू, प्रलय, हर्ष लखौ निरबाद॥

शब्दार्थ—प्रसाद-आनन्द।

भावार्थ—अपने प्रिय के दर्शन अथवा उसके बारे में सुनने से हृदय में जो आनन्द उठता है, उसे हर्ष कहते हैं। इस हर्ष के कारण पसीना, आँसू आदि चिन्ह दिखलायी पडते हैं।

उदाहरण

सवैया

बैठी ही सुंदरि मंदिर मैं, पति को पथ पेखि पतिव्रत पोखे।
तौ लगि आयेरी आइ कह्यो दुरि, 'द्वारते देवर दौरि अनोखे॥
आनन्द मे गुरु की गुरताउ, गनी गुनगौरि न काहू के ओखे।
नूपुर पाइ उठे झनकाइ, सुजाइ, लगी धन धाइ झरोखे॥

शब्दार्थ—बैठी ही-बैठी थी। पति.........पेखि-पति के आने की बाट देखती हुई। तौलगि . ..... अनोखे-तब तक देवर ने द्वार पर से आकर कहा कि, 'लो। वे आगये। आनन्द में गुरु .. . ...ओखे-मारे आनन्द के बड़े लोगों का भी कुछ ध्यान न रहा। नूपुर-बिछिया। धाइ-दौड़ कर। झरोखे-खिड़की पर।

१६—जड़ता

दोहा

हित अहितहि देखै जहाँ, अचल चेष्टा होइ।
जानि बूझि कारज थके, जड़ता बरनै सोइ॥

शब्दार्थ—अचल-अस्थिर।

भावार्थ—हित अथवा अहित को देख कर, कुछ देर के लिए कार्य को भूल जडवत हो जाने को जड़ता कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

कालिंदी के तट काल्हि भटू, कहूं ह्वै गईं दोउन भेंट भली सी।
ठौर ही ठाड़े चितौत इतौतन, नैकऊ एक टकी टहली सी॥

देव को देखती देवता सी, वृषभान लली न हली न चली सो।
नन्द के छोहरा की छवि सों, छिनु एक रही छवि छैल छली सी॥

शब्दार्थ—कालिन्दी-यमुना। तट किनारा। ठौर ही ठाढ़े-उस स्थान पर खड़े खड़े। चितौत-देखते हैं। नैकऊ-थोडा भी। वृषभान लली-राधा। न हली न चलीसी-बिल्कुल हिली नही। नन्द के छोहरा-श्रीकृष्ण। छवि-सुन्दरता। छिनुएक-एक क्षण तक। छलीसी-ठगीसी।

१७—दुख

दोहा

उत्तम, मध्यम, नीचक्रम, लघु चिन्ता अप्रसाद।
महासोक ये धन गये, हित संसो सुविषाद॥

शब्दार्थ—अप्रसाद-दुख, विषाद।

भावार्थ—अपने हित की सिद्धि न होने के कारण जो चिन्ता और विषाद होता है उसे दुख कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

केलि करैं जल में मिलि बाल, गुपाल तहीं तट गैयन घेरे।
चोरि सबै हरवा हरवाइ दै, दूरि तें दौरि बछानु कों फेरे॥
हार हरें हिय मैं हहरें, तिय धीर धरे न करै इक टेरे।
राधिका ठाड़ी हरेई हरें हरिके मुख, और हँसै अरु हेरे॥

शब्दार्थ—गैयन-गाओं को। बछानु-बछड़ों। हेरे-देखे।

१८—आवेग

दोहा

प्रिय अप्रिय देखें सुनें, गात पात से बेग।
होय अचानक भूरिभ्रम, सो बरनै आवेग ॥

शब्दार्थ—अचानक-अकस्मात; यकायक।

भावार्थ—किसी प्रिय अथवा अप्रिय बात को देखने या सुनने से जो हृदय में घबराहट उत्पन्न होती है उसे आवेग कहते हैं। इसमें शरीर काँपने लगता है और भ्रमादि लक्षण प्रकट होते हैं।

उदाहरण

सवैया

देखन दौरीं सबैं बृजबाल, सु आये गुपाल सुने बृज भूपर।
टूटत हार हिये न सम्हारती, छूटत बारन किंकिन नूपुर ॥
भार उरोज नितम्बन कौन सै, है कटिकौ लटिवौ दृग दूपर।
देव सुदै पथ आई मनों, चढ़ि धाई मनोरथ के रथ ऊपर ॥

शब्दार्थ—बृजभूपर-बृजमंडल में। न सम्हारतीं-नहीं संभालतीं। किंकिन-करधनी। नूपुर-बिछिया। दूपर-दोनों पर।

१९—गर्व

दोहा

बहु बल धन कुल रूपतें, सिरु उन्नतु अभिमान।
गिने न काहू आप सम, ताही गर्व बखान ॥

शब्दार्थ—काहू-किसी को भी।

भावार्थ—अधिक बल, धन, कुल, अथवा अधिक रूप के होने के कारण अहंकार वश अपने बराबर किसी को न गिनने के भाव को गर्व कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

देव सुरासर सिद्ध बधून को, एतौ न गर्व जितौ इह ती को।
आपने जोबन के गुन के, अभिमान, सबै जग जानत फीको॥
काम की ओर सकोरति नाक, न लागत नाक को नायक नीको।
गोरी गुमानिन ग्वारि गमारि, गिने नहिं, रूप रती को रती को॥

शब्दार्थ—एतौ न गर्व-इतना गर्व नहीं। जितौ इह ती को-जितना इस स्त्री को। सबै जग जानत फीको-सारे संसार को नगण्य समझती है। काम-कामदेव। सकोरतिनाक-नाकसिकोड़ती है अर्थात् तुच्छ समझती है। नाक को नायक-इन्द्र। नीको-भला, अच्छा। गुमानिन-अभिमानिनी। गमारि-गंवारिन। गिने नहि-नही गिनती। रती-कामदेव की स्त्री। रती को-रती भर भी।

२०—उतकण्ठा

दोहा

प्रिय सुमिरन ते गात मैं, गौरव आरसु होय।
देस न काल सह्यो परै, उत्कण्ठा कहु सोय॥

शब्दार्थ—आरसु-आलस्य।

भावार्थ—अपने प्यारे की याद कर उससे मिलने के लिए आतुर होकर कुछ भी अच्छा न लगने के भाव को उत्कण्ठा कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

कैधों हमारिये बार बड़ो भयौ, कै रवि को रथ ठौर ठयो है।
भोरते भानु की ओर चितौति, घरी पल तें गनते ही गयो है॥
आवतु छोर नहीं छिन कौ, दिन कौ न अभै लगि जाय गयो है।
पाइये कैसिक सांझ तुरन्तहि, देखुरी घोस दुरन्त भयो है॥

शब्दार्थ—कैधौं-अथवा, या। कै-या। रवि कोरथ-सूर्य का रथ। ठौर ठयो है एकही जगह खडा रह गया है। भोरतें-प्रातकाल से। चितौति-देखती हूं। घरी . ...गयो है-एक एक पल गिनते बीता है। आवतु छोर नहीं-अन्त नही आता। जाम-याम, समय। कैसिक-कैसे। घोस-दिन। दुरन्त-बड़ा भारी।

२१—नींद

दोहा

चिन्ता आरस खेद ते, बसे तुचां चितु जाय।
सुपन, दरस, अवयव चलन, एकउ नींद सुभाय॥

शब्दार्थ—आरस-आलस्य। सुपन-सपना।

भावार्थ—चिन्ता, आलस्य, खेद आदि के कारण एकाग्रचित हो सो जाने तथा सपने में दर्शनादि होने को नींद कहते हैं।

उदाहरण

सोवत तें सखी जान्यो नहीं, वह सोवत ते घर आयौ हमारे।
पीत पटी कटि सों लपिटी, अरु सांवरो सुन्दर रूप सँवारे॥
'देव' अबै लगि आंखिन तें, वह बांकी चितौनि टरै नहिं टारे।
सापने मे चित चोरि लियो, वह मोर-री मोर-पखौवन वारे॥

शब्दार्थ—पीतपटी-पीताम्बर। कटि-कमर। अभै लगि-अब-तक। चितौनि-चितवनि। टरै नहीं टारे-टाले नहीं टलती। सापने-स्वप्न में। मोरपखौवन वारे-मोरपक्ष वाले-श्रीकृष्ण।

२२—अपस्मार

दोहा

अधिक दुःख अतिभय असुचि, सूने ठौर निवास।
अपस्मार जहँ भूपतन, कम्प, फैन मुख स्वांस॥

शब्दार्थ—सूने-एकान्त।

भावार्थ—अधिक दुःख भय आदि के कारण शरीर में कंप होने तथा मुँह से फेन गिरने और लम्बी लम्बी सांसे भरने की अवस्था को अपस्मार कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

मोहन माई चले मथुरा, तब तें निस बासर बीतत ठाढ़े।
बौरी भईं बृज की बनिता, बहुभांतिन 'देव' वियोग के बाढ़े॥

भूलि गई गुरु लोग की लाज, गए ग्रह काज गली ग्रह गाढ़े ।
भीतिन सों अभिरे भहराइ, गिरैं फिर धाइ फिरैं मुख काढ़े ॥

शब्दार्थ—निसि बासर-राति-दिन । बीतत ठाढ़े-खड़े बीतता है । बौरी-उन्मत्त । भूलि......लाज-गुरु जनों की लज्जा करना भी भूल गयीं । भीतिन सो..... भहराइ-दीवालों पर भहरा कर गिरती हैं । फिरैं मुख काढ़े-मुँह बाए दौड रहीं हैं ।

२३—अवबोध

दोहा

नींद गये मीजै नयन, अंग भंग जमुहाइ ।
एक वार इन्द्रिय जगै, तेकउ नीद सुभाय ॥

शब्दार्थ—मीजै नयन-आंखे मींजती है । जमुहाइ-जमुहाई लेती है ।

भावार्थ—निद्रा के पश्चात् आँखो को मलकर, जमुँहाई लेने के बाद जो चेतनता आती है; उसे अवबोध कहते है ।

उदाहरण

सवैया

सापने में गई देखन हौं सुनि, नाचत नन्द जसोमति कौ नट ।
वा मुसक्याइ के भाव बताइ के, मेरोइ खैचिखरो पकरो पट ॥
तौ लगि गाय रम्हाइ उठी, कविदेव, वधूनि मथ्यो दधि को घट ।
चौंकि परी तब कान्ह कहूँ न, कदंब न कुंज न कालिंदी कौ तट ॥

शब्दार्थ—सापने में-स्वप्न मे। मेरोइ-मेरा ही। पकरो पट-कपडा पकड़ लिया। तौ लगि तब तक। रम्हाइ उठी- रँभाने लगी। दधि-को घट-दही की हाँड़ी। चौंकि .... तट-चौक पडने पर देखा कि न कहीं कृष्ण है न कदम्ब है, न, कुंज है और न यमुना का किनारा ही है।

२४—क्रोध

दोहा

अधिक्षेप अपमान ते, स्वेद कंप दृगराग।
अहंकार जिय में बढ़ै, क्रोध सुनहु बड़ भाग॥

शब्दार्थ—स्वेद-पसीना। दृग-आँखें।

भावार्थ—अपमानादि के कारण हृदय में गर्व का भाव उदय होकर काँपने आदि की क्रियाएँ क्रोध कहलाती है।

उदाहरण

सवैया

देव मनावत मोहन जू, कब के मनुहारि करैं ललचौहैं।
बातें बनाय सुनावैं सखी, सब तातें औसीरी रसौहैं रिसौहैं॥
नाह सो नेह तऊ तरुनी, तजि राति बितौति चितौतिन सौ हैं।
मानत नाहिं तिरीछेहि तानति, बान सी आँखें कमान सी भौहैं॥

शब्दार्थ—मनुहारि-विनता। नाह-पति। तऊ—तौ भी। राति-रात्रि। बितौति-बिताती है। मानति नाहिं-नहीं मानती। तिरछेहि-तानति-टेढ़ी भौंहे करती है। बानसीआँखे-बाण के समान नेत्र। कमान सी भौहैं-कमान के समान भौहैं।

२५—अवहित्थ

दोहा

लज्जा गोरव धृष्टता, गोपै आकृति कर्म्म।
और कहै औरे करै सु, अवहित्थ कौ धर्म॥

शब्दार्थ—और कहे औरे करे-कहे कुछ और तथा करे कुछ और

भावार्थ—अपनी लज्जा तथा मानादि को छिपाने के लिए अपने किए हुए कार्य को चतुरतापूर्वक; कुछ का कुछ कहकर छिपाना अवहित्थ कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

देखन को बन को निकसीं, बनिता बहु बानि बनाइ कै बागे।
देव कहैं दुरि दौरि के मोहन, आय गये उत तें अनुरागे॥
बाल की छाती छुई छल सो, घन कुंजन मैं बस पुंजन पागे।
पीछे निहारि निहारत नारिन, हार हियेके सुधारन लागे॥

शब्दार्थ—बनिता-स्त्रियां। बहु...बनाइकै-बहुत तरह के श्रृङ्गार करके। बागे-बागमें। दुरि-छिपकर। उततें-उधरसे। अनुरागे-प्रेम में सनेहुए। घनकुजंन में-घनी-कुंजों में। पीछे...लागे-पीछे जबदेखा कि सखियां देख रही है तब गले का हार संभालने लगे।

२६—मति

दोहा

शास्त्र चिंतना ते जहां, होइ यथारथ ज्ञान।
करैं शिष्य उपदेश जहँ, मति कहि ताहि बखान॥

शब्दार्थ—यथारथ-यथार्थ, ठीक-ठीक।

भावार्थ—शास्त्रादि के विचार से यथार्थ ज्ञान होने को मति कहते हैं। इसमें उपदेशादि अनुभव होते हैं।

उदाहरण

सवैया

स्याम के संग सदा बिलसी, सिसुता मैं सु तामैं कछू नहीं जान्यो।
भूले गुपाल सों गर्व्व कियो, गुन जोबन रूप वृथा अरि मानो॥
ज्यो न निगोड़ो तबै समुझौ, 'कविदेव' कहा अब जो पछितानो।
धन्य जियै जग मे जनते, जिनको मनमोहन तें मन मानो॥

शब्दार्थ—बिलसी-विलास किया। सिसुता मैं-बचपन में। सुता मैं......जान्यों-उस समय कुछ भी ज्ञान न रहा। भूलें गर्व्व कियो-व्यर्थ ही उनसे गरूर किया। गुन-गुण। जोबन-यौवन। बृथा-व्यर्थ। ज्यों......समुझौं-यदि यह दुष्ट उस समय न समझा। कहा...... पछितानो-तो अब पछताने से क्या होता है। जिनको-जिनका। मन-मानों-मन लगा।

२७—उपालम्भ

दोहा

उपालम्भ अनुनय विनय, अरु उपदेश बखान।
इनकौ अंतर भानु कहि, देव मध्य मति जान॥
उपालम्भ द्वै भाँति कौ, बरनि कहै कविराइ।
एक कहावै कोप ते, दूजौ प्रनय सुभाइ॥

शब्दार्थ—अनुनय विनय-प्रार्थना। द्वै भांति को-दोतरह का।

भावार्थ—विनय प्रार्थना उपदेशादि द्वारा अपने अभिप्राय को कहना उपालम्भ कहलाता है। यह दो तरह का होता है। एक कोप; दूसरा प्रणय।

उदाहरण पहला—(कोप)

सवैया

बोलत हौ कत बैन बड़े, अरु नैन बड़े बड़रान अड़े हौ।
जानति हौं छल छैल बड़े जू, बड़े खन के इह गैल गड़े हौ॥
देव कहै हरि रूप बड़े, ब्रजभूप बड़े हम पै उमड़े हौ।
जाउ जू जैये अनीठ बड़े, अरु ईठ बड़े ढीठ बड़े हौ॥

शब्दार्थ—बडे खन के-बड़ी देर के। इह गैल अड़े हौ-इस मार्ग में खड़े हो। ढीठ-धृष्ट।

उदाहरण दूसरा—(प्रणय)

सवैया

लाल भले हौ कहा कहिये, कहिये तौ कहा कहूँ कोऊ कहैये।
काहू कहू न कही न सुनी, सु हमैं कहिबे कहि काहि सुनैये॥
नैन परै न परै कर मैन, न चैन परै जुपै बैन बरैये।
'देव' कहे नित को मिलि खेलि, इतै हित कौ चित कौ न चुरैये।

शब्दार्थ—मैन—कामदेव।

उदाहरण तीसरा—(अनुनय-विनय)

सवैया

वे बड़भाग बड़े अनुराग, इतै अति भाग सुहाग भरी हौ।
देखौ बिचारि समौ सुख कौ तन, जोबन जोतिन सों उजरी हौ॥

बालम सों उठि बोलौ बलाइल्यों, यो कहि देव सयानी खरी हौ।
हेरत बाट कपाट लगै हरि, बाट खरे तुम खाट परी हौ॥

शब्दार्थ—अनुराग-प्रेम। देखो..... कौ-विचार कर देखो यह सुख का समय है। जोबन .....उजरी हौ-तुम यौवन के कारण प्रकाशित हो रही हो। बालम सं-पतिसे। बलाइल्यो-बलैया लूं। सयानी खरी हौ-चतुर हो, होशियार हो। हेरत बाट-इन्तज़ार करते हैं। कपाट लगै-किवाडो के पास खड़े हुए। हरि बाट..... खाट परी हो-हरि बाहर खड़े हैं और तुम खाट पर पडी हो।

उदाहरण चौथा—(उपदेश)

सवैया

कोप सें बीच परै पिय सों, उपजावत रङ्ग मै भङ्ग सु भारी।
क्रोध बिधान बिरोध निधान, सुमान महा सुख मै दुखकारी॥
तातें न मान समान अकारज, जाकौ अपानु बड़ौ अधिकारी।
देव कहै कहिहौं हित की, हरि जू सौ हितू न कहूँ हितकारी॥

शब्दार्थ—कोप से-क्रोध से। सुमान..... दुखकारी-मान सुख में दुख उत्पन्न करनेवाला है। तातें न मान......अकारज-इसलिए मान के समान अहितकर और कुछ नहीं। हितू-भलाई करनेवाला।

२८—उग्रता

दोहा

दोष कीरतन चौरता, दुर्जनता अपराध।
निरजनता सो उग्रता, जहँ तरजन बध बाध॥

शब्दार्थ—दुर्जनता-दुष्टता।

भावार्थ—दुर्जनता अपराधादि से उत्पन्न निर्दयता को उग्रता कहते हैं। इसमें ताडना, वध आदि अनुभव होते है।

उदाहरण

सवैया

मोहन माई भए मथुरापति, देव महामद सों मदमातौ।
गोकुल गाँव के गोप गरीब हैं, बासु बराबरि ही कौ इहाँतौ॥
बैठि रहौ सपने हूँ सुन्यो कहूँ, राजनि सो परजानि सों नातौ।
कोरे परै अब कूबरी के, अब याते कियो हमसो हित हातौ॥

शब्दार्थ—बासु बराबरि. . . तौ-यहाँ तो बराबर का ही व्यवहार है। सपने हूँ . . . नातौ-सपने में भी कहीं राजा और प्रजा का रिश्ता सुना है। हातौ-दूर किया-अलग किया।

२६—व्याधि

दोहा

धातु कोप प्रीतम बिरह, अन्तर उपजै आधि।
जुर बिकार बहु अङ्ग मैं, ताही बरनैं व्याधि॥

शब्दार्थ—जुर-ज्वर।

भावार्थ—शरीर की धातुओ के कोप अथवा अपने प्यारे के वियोग के कारण शरीर में किसी विकार के उत्पन्न हो जाने को व्याधि कहते हैं। इसमें ज्वरादि लक्षण प्रकट होते हैं।

उदाहरण

सवैया

तादिन ते अति व्याकुल है तिय, जा दिन ते पिय पन्थ सिधारे।
भूख न प्यास बिना ब्रजभूषन, भामिनि भूषन भेष बिसारे॥
पावत पीर नहीं कविदेव, करोरिक मूरि सबै करि हारे।
नारी निहारि निहारि चले, तजि बैद बिचारि बिचारि बिचारे॥

शब्दार्थ—तादिन ते-उस दिन से। जादिन ते जिस दिन से। भूख......ब्रजभूषन-बिना श्रीकृष्ण के भूख प्यास सब भूल गयी। भामिनि .....बिसारे-गहने आदि पहनना भी छोड दिया। मूरि-औषधि। पावत... . हारे-करोडो दवाइयाँ कर छोडी परन्तु व्याधि नहीं जाती। नारी-नाड़ी। नारी. ...बिचारे-बेचारे वैद्य नाडी देख देख कर उसे छोड कर चलदेते हैं।

३०—उन्माद

दोहा

प्रिय वियोग तें जहँ वृथा, वचनन लाय विखाद।
बिन बिचार आचार जहँ, सो कहिये उन्माद॥

शब्दार्थ—विखाद-विषाद दुःख।

भावार्थ—अपने प्यारे के विरह के कारण बिना विचारे चाहे जो कुछ कहने को उन्माद कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

आरिकै वह आज अकेली गई, खरि के हरि के गुन रूप लुही।
उनहू अपनों पहिराय हरा, मुसकाइ के गाइ के गाय दुही॥

'कविदेव' कह्यौ किनि काऊ कछू, तबतें उनके अनुराग छुही।'
सबही सो यही कहै बाल-बधू, यह देखौरी माल गुपाल गुही॥

शब्दार्थ—अरिकै-अड़कर, हठ करके। छुही-शोभायमान हुई।
उनहूं-उन्होंने भी।

३१—मरण

दोहा

प्रगटहिं लच्छन मरन के, अरु बिभाव अनुभाव।
जो निदान करि बरनिये, तौ सिंगार अभाव॥
निर्वेदादिक भाव सब, बरनै सरस सुभाइ।
ता बिधि मरनो बरनिये, जामें रस नहिं जाइ।

शब्दार्थ—लच्छन-लच्छण।

भावार्थ—जहाँ मरने के लच्चण प्रकट हों उसे मरण कहते है;
परन्तु इसके यथार्थ वर्णन से श्रृङ्गार रस में फीकापन आजाता है। अत.
इसका वर्णन इस प्रकार सरसता पूर्वक करना चाहिए जिस प्रकार निर्वेदादि
भावों का किया गया है। ऐसा करने से सरसता नष्ट नहीं होती।

उदाहरण

सवैया

राधिके बाढ़ी बियोग की बाधा, सुदेव अबोल अडोल डरी रही।
लोगन की वृषभान के भौन मैं, भोर तें भारियें भीर भरी रही॥
वाके निदान कै प्रान रहे कढ़ि, औषधि मूरि करोरि करी रही।
चेति मरू करिके चितई जब, चारि घरी लौं मरो सी धरी रही॥

शब्दार्थ—वियोग की बाधा-विरह की व्यथा। अबोल-बिना

जोखे। अडोल-बिना हिले। डरी रही-पडी रही। भौन-घर। भोरते ..... भरी रही-सवेरे से बडी भारी भीड लगी रही। करोरि-करोडों अर्थात अनेक। मरू कैकै-मुश्किल से कठिनता से। चितई-देखा। मरी...... रही मरे के समान पड़ी रही।

३२—त्रास

दोहा

घोर श्रवन दरसन सुमृति, तंभ पुलक भयगात।
छोभ होइ जो चित्त मैं, त्रास कहत कवि तात॥
चित्त छोभ द्वै भाँति कौ, एक त्रास अरु भीति।
अकसमात तै त्रास, अरु विचार ते भयरीति॥

शब्दार्थ—सुमृति-स्मृति स्मरण। भीति-भय, डर।

भावार्थ—कोई अप्रिय बात के सुनने, स्मरण करने आदि से चित्त में जो क्षोभ पैदा होता है उसे त्रास कहते हैं। यह चित्त क्षोभ भी दो तरह का होता है। एक त्रास जो अकस्मात् पैदा होता है और दूसरा भय जो (पूर्वापर के) विचार से उत्पन्न होता है।

उदाहरण पहला (त्रास)

सवैया

श्री वृषभानलली मिलिकै, जमुनाजल केलि कों हेलिनु आनी।
रोमवली नवली कहिदेव, सु सोने से गात अन्हात सुहानी॥
कान्ह अचानक बोलि उठे, उर बाल के व्याल-बधू लपिटानी।
धाइ को धाइ गही ससवाइ, दुहूं कर झारत अंग अपानी॥

शब्दार्थ—वृषभान लली-राधा। जमुना जल......आनी-सखियो के साथ यमुना नहाने आयी। रोमवली-रुँए, रोम, बाल। सोने सेगात-

सोने के समान सुन्दर शरीर। कान्ह......लपिटानी-कृष्ण अचानक कह उठे कि देखो शरीर में सापिन लपट गयी। धाइकों .....अपानी (यहसुन) वह घबडायी हुई दौडी और दोनों हाथों से शरीर को झाड़ने लगी।

उदाहरण दूसरा (भय)

सवैया

आजु गुपाल जू बाल-बधू सँग, नूतन नूतने कुञ्ज बसे निसि।
जागर होत उजागर नैननि, पाग पै पीरी पराग रही पिसि॥
चोज के चन्दन खोज खुले जहँ, ओछे उरोज रहे उरमें धिसि।
बोलत बात लजात से जात, सुआये इतौत चितौत चहूँ दिसि॥

शब्दार्थ—नूतन-नये, नवीन। पागपै-पगड़ी पर। पीरी-पीली। चितौत चहूं दिसि-चारो ओर देखते हुए।

३३-तर्क

दोहा

विप्रतिपत्ति बिचारु अरु, संसय अध्यवसाइ।
बितरक चौबिधि जानिए, भूचलनाधिक भाइ॥

शब्दार्थ—चौविधि-चार तरह के।

भावार्थ—विप्रतिपत्ति, विचार, संशय और अध्यवसाइ ये चार तरह के तर्क कहे गये हैं। (किसी प्रकार के संशय पैदा होने के भाव को ही तर्क कहते हैं)

उदाहरण पहला (विप्रतिपत्ति)

सवैया

यह तौ कछूभामिनी कोसौ लसै, मुख देखत ही दुख जात है ह्वै।
सफरी-मद-मोचन लोचन ये, परिहै कहुँ मानों चितौत ही च्वै॥
कवि देव कहै कहिए जुग जो, जल जात रहे जलजात में ध्वै।
न सुने तबौ काहू कहूँ कबहूँ, कि मयङ्क के अङ्क में पङ्कज द्वै॥

शब्दार्थ—सफरी-मछली। मद मोचन-गर्व तोड़नेवाले। मयङ्क-चन्द्रमा। पङ्कज-कमल।

उदाहरण दूसरा (विचार)

सवैया

काम कमान ते बान उतारि है, 'देव' नहीं मधु माधव रैहै।
कोकिलऊ कल कोमल बोल, बिसारि के आपु अलोप कहै है॥
मोहि महादुख दै सजनी, रजनीकर और रजनी घटि जैहै।
प्रान पियारे तु ऐहै घरै, पर प्रान पयान कै फेरि न एहै॥

शब्दार्थ—काम.......उतारि है-कामदेव अपने धनुष से बाण उतार लेंगे। मधु-चैतमास। कोकिलऊ .....कोमल बोल-कोयल भी अपने मीठे वचन बोलना छोड़ देगी। अलोप कहै है-गायब हो जायगी। रजनीकर-चन्द्रमा। रजनी-रात्रि। घरै-घर। पर.....एहै-परन्तु प्राण जाकर फिर नहीं लौटेंगे।

उदाहरण तीसरा (संशय)

सवैया

यह कैधों कलाधर ही की कला, अबला किधौं काम की कैधों सची।
किधौं कौन के भौन की दीप सिखा, सखी कौन के भाग है भालखची॥

तिहुँलोक की सुन्दरताई की एक, अनूपम रूप की रासि मची।
नर, किन्नर, सिद्ध, सुरासुरहून की, बञ्चि, बधूनि बिरञ्चि रची॥

शब्दार्थ—कैधों-या, अथवा। कलाधर-चन्द्रमा। अबलाकिधौ कामकी-अथवा रति है। कैधांसची-या इन्द्राणी है। भौन-घर। दीपसिखा-दीपक की ज्योति। बञ्चि-छोडकर। विरञ्चि-ब्रह्मा।

उदाहरण चौथा (अध्यवसाय)

सवैया

कहु कौन की चम्पक चारु लता, यह देखि सबै जनभूलि रहै।
'कविदेव' ए ती मै कहा बिलसे, बिवसी फल से धरि धूलि रहै॥
तिहि ऊपर को यह सोम नवोतम, तौम चहूँदिस भूलि रहै।
चित में चितु चोरत कोए तहाँ, नवनील सरोज से फूलि रहै॥

शब्दार्थ—सबै ....भूलिरहै-सभी मोहित हो रहे हैं। चहूंदिस-चारो ओर। नवलीलसरोज-नए नीले कमल।

दोहा

भरतादिक सत कवि कहै, विभचारी तैंतीस।
वरनत छल चौतीस यों, एक कविन केईस॥

शब्दार्थ—विभचारी-व्यभिचारी।

भावार्थ—भरत आदि आचार्यों ने कुल तैंतीस व्यभिचारी भाव कहे हैं, परन्तु कुछ कविवर 'छल' नामक एक चौंतीसवाँ व्यभिचारी भाव और मानते हैं।

३४—छल

दोहा

अपमानादिक करन कों, कीजै क्रिया छिपाव ।
वक्र उक्ति अन्तर कपट, सो बरनै छल भाव ॥

शब्दार्थ——छिपाव-छिपाने की क्रिया ।

भावार्थ——अपने अपमानादि को चतुरतापूर्वक छिपाकर, हृदय में कपट रखते हुए, वक्रोक्तियां कहना छल कहलाता है ।

उदाहरण

सवैया

स्याम सयाने कहावत हैं कहौ, आजु को काहि सयानु है दीनो ।
देव कहै दुरि टेर कुटीर मैं, आपनो बैर बधू उहि लीनो ।
चूमि गई मुँह औचक ही, पटु लै गई पै इन वाहि न चीन्हो ॥
छैल भले छिन ही मैं छले, दिन ही मैं छबीली भलोछलकीन्हो ॥

शब्दार्थ——सयाने-चतुर । दुरि-छिपकर । औचक-अचानक, अका-यक । पटु-वस्त्र । चीन्हो-पहचाना । छबीली-सुन्दर ।

छप्पय

सङ्का सूया भय गलानि, धृति सुमृति नीद मति ।
चिन्ता, विसमय, व्याधि, हर्ष, उत्सुकता जड़ गति ॥

मद, विषाद, उन्माद, लाज, अवहित्था जानौ।
सहित चपलता ए विशेष सिङ्गार बखानौ॥
अरु समान मत सम्भोग मैं, सकल भाव बरनन करौ।
आलस उग्रता भाव द्वै, सहित जुगुप्सा परिहरौ॥
आरस ग्लानि निर्वेद श्रम, उत्कण्ठा जड़ जोग।
सङ्कापसुमृति सुमृति अब, बोधोनाद वियोग॥

शब्दार्थ और भावार्थ—दोनो सरल है।

द्वितीय विलास
समाप्त

तृतीय विलास

[रस और हावादि]

तृतीय-विलास

रस
लौकिक
अलौकिक
स्वापनिक
मानोरथिक
औपनायक
शृङ्गार
हास्य
करुणा
रौद्र
वीर
भयानक
वीभत्स
अद्भुत
शांत
संयोग
वियोग
प्रच्छन्न
प्रकाश
प्रच्छन्न
प्रकाश
हाव
लीला
विलास
विच्छित्ति
विभ्रम
किलकिंचित
मोट्टायित
कुट्टमित
बिब्बोक
ललित
विहित
लाज
व्याज
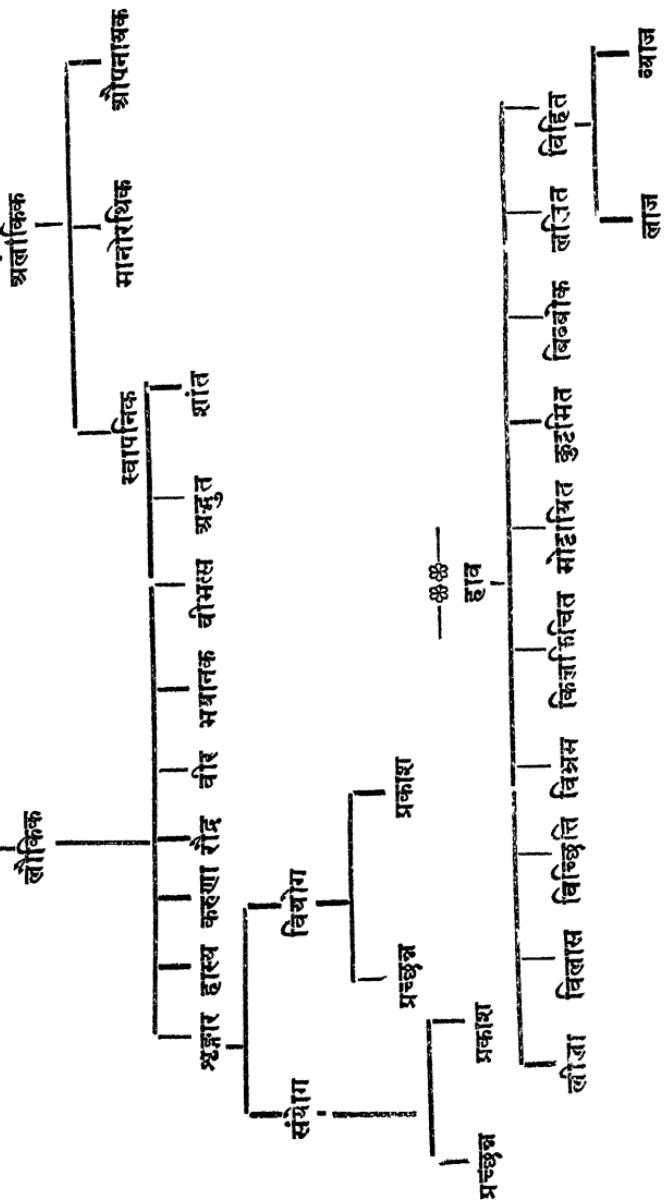
रस

दोहा

जो विभाव अनुभाव अरु, विभचारिनु करि होइ।
थिति की पूरन बासना, सुकवि कहत रस सोइ॥
जोहि प्रथम अनुराग मै, नहिं पूरब अनुभाव।
तौ कहिये दम्पतिनु के,जन्मान्तर के भाव॥
ताहि विभावादिकन ते, थिति सम्पूरन जानि।
लौकिक और अलौकिक हि, द्वै बिधि कहत बखानि॥
नयनादिक इन्द्रियनु के, जोगहि लौकिक जानु।
आतम मन संजोग तै, होय अलौकिक ज्ञानु॥
कहत अलौकिक तीनबिधि, प्रथम स्वापनिक मानु।
मानोरथ कविदेव अरु, औपनायक बखानु॥

भावार्थ—विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों द्वारा जो स्थायी भाव व्यक्त किये जाते हैं, उन्हे रस कहते हैं। ये रस लौकिक और अलौकिक दो प्रकार के होते हैं। नयनादि इंद्रियों से संबंध रखनेवाले लौकिक और आत्मा तथा मन से संबंध रखने वाले अलौकिक कहलाते हैं। अलौकिक के भी तीन भेद है। १—स्वापनिक २—मानोरथिक ३—औपनायक।

अलौकिक रस

उदाहरण पहला–(स्वापनिक)

सवैया

सोइ गई अभिलाषभरी तिय, सापने मे निरखे नंदनन्दन।
देव कछू हँसि बात कही, पुलके सु हिये झलके जल के कन॥
जागि परी नवनूढ़ वधू ढिंग, ढूढ़ति गूढ़ सनेहसनी घन।
सोच सकोच अगोचर तीय, त्रसे, बिलसै, बिहसै, मनही मन॥

शब्दार्थ––अभिलाष भरी-इच्छाओं को लिये हुए। निरखे-देखे। पुलके सुहिये-हृदय पुलकायमान होगया। झलके.....कन-पसीने की बूंदें दिखलायी पडने लगी। नवनूढ-नवविवाहिता। ढिगढूढ़त-पास में ढ़ूढ़ती है। गूढ सनेह सनी-प्रेम मे सराबोर। सकोच-संकोच। अगोचर-जो दिखलायी न पडे। त्रसे-डरे।

उदाहरण दूसरा–(मानोरथिक)

सवैया

कालिंदी कूल भयो अनुकूल, कहूं घरबार घिरो नहिं घेरौ।
मंजुल बंजुल साल रसाल, तमालनि के बन लेत बसेरौ॥
केलि करे री कदम्बनि बीच, जु कानन कुञ्ज कुटीन में टेरौ।
मोहनलाल की मूरति के सँग, डोलत माई मनोरथ मेरौ॥

शब्दार्थ––कालिंदी-यमुना। डोलत-घूमता फिरता है। मनोरथ अभिलाषा।

उदाहरण तीसरा—(औपनायक)

सवैया

झूमक रैन जसोमति के, जुवतीन कौ आज समाज सिधायो।
स्याम कौ सुन्दर भेष बनाइ कै, आइ बधू इक बैन बजायो॥
हास में रास रच्यो कविदेव, विलास के ही में हुलास बढ़ायो।
नाचत वाहि सखी सबही के, हिए सुखसिन्धु-कौ पार न पायो॥

शब्दार्थ—झूमक-एक तरह का नृत्य और गान। जुवतीन कौ-युवतियों का। हुलास-आनन्द। हिए... ...पार न पायो-हृदय मे सुख का अपार समुद्र उमड़ आया।

लौकिक रस

दोहा

कहत सु लौकिक त्रिविधि बिधि, यह बिधि बुधि बलसार।
अब बरनत कविदेव कहि, लौकिक नव सुप्रकार॥

शब्दार्थ—त्रिविधि-तीन तरह के।

भावार्थ—इस प्रकार विद्वानों ने अलौकिक रस के तीन भेद बतलाये हैं। अब लौकिक रसो का वर्णन किया जाता है। ये कवियो ने नौ प्रकार के माने हैं।

छप्पय

प्रथम होइ सिंगार, दूसरौ हास्य सु जानौ।
तीजौ करुना कहौ, चतुरथौ रौद्र-सु मानौ।
वीर पाँचवो जानि, भयानक छठो बखानो।
सतयों कहि बीभत्सु, आठओं अद्भुत आनो॥

यहि भांति आठ बिधि कहत कवि,नाटक मत भरतादिसब ।
अरु सांत यतन मत काव्य के,लौकिक रस के भेद नव ॥

शब्दार्थ—चतुर्थौ-चौथा । सातयो-सातवाँ ।

भावार्थ—पहला शृंगार, दूसरा हास्य, तीसरा करुण, चौथा रौद्र, पांचवाँ वीर, छठा भयानक, सातवाँ वीभत्स और आठवां अद्भुत ये आठ भरतादि आचार्यों ने नाटकों के रस माने हैं । काव्य में इन आठों के अतिरिक्त एक रस शान्त और होता है ।

दोहा

द्वै प्रकार सिंगार रस,है संभोग बियोग ।
सोप्रच्छन्न प्रकाश करि,कहत चारि विधि लोग ॥
देव कहै प्रच्छन्न सो, जाकौ दुरौ विलास ।
जानहिं जाको सकल जन, बरनैं ताहि प्रकास ॥

शब्दार्थ—द्वै-दो । सिंगार-शृङ्गार । प्रच्छन्न-छिपा हुआ ।

भावार्थ—शृङ्गाररस दो तरह का होता है, एक संयोग और दूसरा वियोग । इन दोनो के भी दो-दो भेद और होते हैं; प्रच्छन्न और प्रकाश । जो अप्रकट रहे वह प्रच्छन्न कहलाता है और जो प्रकट रहे वह प्रकाश ।

उदाहरण पहला—(प्रच्छन्न संयोग)

सवैया

बाजि रही रसना रसकेलि मैं, कोमल के बिछियानु की बानी।
प्यारी रही परजङ्क निसंक पै, प्यारे के अंक महासुख सानी ॥
भौं पर चापि चढ़ी उतरी, रंग रावटी आवत जात न जानी ।
छोल छिपाइ न खोलि हियो, कविदेव दुहूँ दुरि के रति मानी ॥

शब्दार्थ—रसकेलि मैं-क्रीड़ा के समय । परजङ्क-पलंग । निसंक-निडर । अंक-गोदी । महासुखसानी-बड़े आनन्द से । दुहूँ-दोनों ने । दुरिके-छिपकर ।

उदाहरण दूसरा—(प्रकाश संयोग)

कवित्त

सोंधे की सुबास आस-पास भरिभवन रह्यौ,
भरन उसांस बास बासन बसात है ।
कंकन झनित अगनित रब किंकनी के,
नूपुर रनित मिले मनित सुहात है ॥
कुण्डल हिलत मुखमण्डल झलमलात,
हिलत दुकूल भुजमूल भहरात है ।
करत बिहार 'कविदेव' बार बार बार,
छूटि छूटि जात हार टूटि टूटि जात है ॥

शब्दार्थ—सोंधे-सुगंधित द्रव्य विशेष । कंकन झनित-कंकनो की आवाज़ होती है । रब-शोर । किकनी-करधनी, मेखला । नूपुर-बिछिया । मनित-मणि । दुकूल-वस्त्र । बार-अनेक बार, बारम्बार । बार-बाल । हार-गले का आभूषण ।

हाव

दोहा

नारिन के संभोग ते, होत बिबिध बिधि भाव।
तिनमे भरतादिक सुकवि, बरनत हैं दस हाव ॥

शब्दार्थ——बिबिध बिधि-अनेक तरह के।

भावार्थ——स्त्रियों में संयोगवश जो अनेक प्रकार के भाव पैदा होते हैं, उनमें से भरतादि आचार्यों ने दस का वर्णन किया है। ये दस हाव कहलाते हैं।

छप्पय

पहिलै लीला हाव, बहुरि सुबिलास बरनिये।
ताते कउ बिछित्ति, बहुरि विभ्रम कहि गनिये ॥
किलकिंचित तब कह्यौ, तबै मौटाइतु मानहु।
तातें कहु कुटमित्त, बहुरि बिब्बोकहु जानहु ॥
कविदेव कहे फिर ललित कहु, ताते बिहित कहे सरस।
इहि भाँति बिबिध बिधि बिबुधवर, बरनत कबिवर हाव दस ॥

भावार्थ——लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, कुट्टमित, बिब्बोक, ललित और विहित इन दस हावों का कवियों ने वर्णन किया है।

१—लीला

दोहा

कौतुक तें पिय की करै, भूषन भेष उन्हार।
प्रीतम सों परिहास जँह, लीला लेउ विचारि ॥

शब्दार्थ—उन्हारि-नकल, अनुकरण।

भावार्थ—जहाँ कौतुकवश प्रिया अपने पति का भेष धारण कर उससे परिहास करे वहाँ लीला हाव कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

कालि भटू बनसीबट के तट, खेल बड़ो इक राधिका कीन्हो।
सांझनि कुजनि मांझ बजायो, जु श्याम को बेनु चुराइ कै लीन्हो॥
दूरि तें दौरत 'देव' गए, सुनि के धुनि रोसु महाचित चीन्हो।
सग की औरैं उठी हँसि के तब, हेरि हरे हरि जू हँसि दीन्हो॥

शब्दार्थ—बेनु-वंशी। चुराइकै लीन्हो-चुरा लिया। रोसु-क्रोध। संग .... औरैं-साथ की अन्य सखियाँ।

२—विलास

दोहा

प्रिय दरसनु सुमिरनु श्रवनु, जहँ अभिलाख प्रकाश।
बदन मगन नयनादिकौ, जो विशेष सुविलास॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—अपने पति अथवा प्रेमी के दर्शन, स्मरण अथवा उसका समाचार मिलने पर, हृदयगत आनन्द के कारण जो मुँह, नयनादि से प्रसन्नता सूचक जो चेष्टाएँ प्रकट होती है उन्हें विलास कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

आजु अटा चढ़ि आई घटानु मैं, बिज्जु छटासी बधू बनि कोऊ।
देव त्रिया कविदेवन केतिये, एतौ हुलास विलास न वोऊ॥

पूरन पूरब पुन्यन ते बड़भाग, विरंचि रच्यौ जन सोऊ।
जाहि लखैं लघु अंजन दै, दुखभंजन ये दृगखंजन दोऊ॥

शब्दार्थ—घटानु.....छटासी-बादलों के बीच बिजली के सदृश। पूरन-पूर्ण। पूरब पुन्यन तें-पूर्व जन्म कृत पुण्यों से। दुःख भंजन-दुःख को नाश करनेवाले। दृगखंजन-खञ्जन पक्षी जैसे नेत्र।

३—विच्छित्ति

दोहा

सुहाग रिस रस रूप तै, बढ़ै गर्व्व अभिमान।
थोरेई भूषन जहाँ, सो विच्छित्ति बखान॥

शब्दार्थ—थोरेई-थोड़े से।

भावार्थ—अपने भाग्य, रूपादि तथा अपने अपार सौन्दर्य के कारण थोड़े ही श्रृङ्गार से अधिक शोभा प्राप्त करने के कारण गर्व होना विच्छित्ति हाव कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

भाग सुहाग को गर्व बढ़ो, सु रहै अभिमान भरी अलबेली।
वेसरि बंदिन केसरि खौरि, बनावै न सेंदुर रंक सुहेली॥
भूलेहूँ भूषन वेषु न और, करै कहि देव विलास की बेली।
मोहनलाल के मोहन कौ यह, पैंधति मोहनमाल अकेली॥

शब्दार्थ—वेसरि-नाक का आभूषण विशेष। केसरि खौरि-केसर का तिलक। मोहनलाल ... अकेली-श्रीकृष्ण को रिझाने के लिए केवल मोहनमाला ही पहनती है।

४—विभ्रम

दोहा

उलटे जहँ भूषन वचन, वेष हँसै जन जाहि।
भाग रूप अनुरागमद, विभ्रम वरनै ताहि॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—आतुरता वश भूषण तथा पहनावे का स्थानान्तर पर धारण करना विभ्रम कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

स्याम सों केलि करी सिगरी निसि, सोत तें प्रात उठी थहराइकैं।
आपने चीर के धोखे बधू, पहिर्‌यौ पटुपीत भटू भहराइकैं॥
बाँधि लई कटि सों बनमाल, न किंकिनि बाल लई ठहराइकैं।
राधिका की रस रंग की दीपति, सँग की हेरि हँसी हहराइकै॥

शब्दार्थ—सिगरीनिसि-सारी रात। सोत . . . थहराइकै-सवेरे हड़बड़ाकर उठी। आपने..... धोखे-अपने वस्त्र के बदले। पटुपीत-पीताम्बर (श्रीकृष्ण का)। बाँधि . बनमाल-बनमाला कमर से बाँध ली। संग की . ...हहराइ कैं-साथ की सहेलियाँ यह देख ठठाकर हँस पड़ीं।

५—किलकिंचित

दोहा

किलकिंचित मैं चपलता, नहिं कारज निरधार।
सम, दम, भय, अभिलाष, रुख, सुमित गर्व्व इकबार॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—एक बार ही भय, हास, रस, सम, दम, अभिलाष, मान, गर्व आदि के उत्पन्न होने को किलकिंचित हाव कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

पाइँ परै पलिका पै परी, जिय सकति सोतिन होति न सौहीं।
ऐंचि कसी फुँफुदी की फुंदी, भुज दाबी दुहूँ छतियाँ हुलसौंहीं॥
काँपि कपोलनि चाँपि हथेरिन, झाँपि रही मुख डीठि लसौंहीं।
त्यो सकुचौंही, उचोंही, रुचोंही, ससोहीं, हँसोहीं, रिसोही, रसोहीं।

शब्दार्थ—जिय संकति-हृदय में डरती है। डीठि-दृष्टि। ऐंचि कसी-खींचकर कस ली। सकुचौंही-लज्जायुक्त। उचौंही-ऊँची। (कुछ क्रोधयुक्त)। हँसोही-हास्य युक्त। रिसोही-क्रोध युक्त। रसोहीं-प्रसन्नतायुक्त।

६—मोट्टाइत

दोहा

सौति त्रास कुल लाज तें, कपट प्रेम मन होइ।
सुमुख होइ चित विमुख हू, कहौ मोटायितु सोइ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—सौत के भय अथवा कुल की लज्जावश अपने हार्दिक अनुराग को प्रकट न कर सकना मोट्टाइत कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

राधिका रूठी कछू दिन तें, कविदेव बधू न सुने कछू बोले।
नैकु चितौति नहीं चितु दै, रस हाल किये हूँ हियेहू-न खोले॥

आवति लोक की लाज के काज, यहो मिस सौतिन को सुख छोले।
श्याम के अंग सौं अंग लगावै न, रंग मे संग सखीन के डोले॥

शब्दार्थ—चितौती-देखती है। चितुदै-मनलगाकर। छोले-नष्ट करती है।

७—कुट्टमित

दोहा

कुच ग्राहन रददान ते, उतकण्ठा अनुराग।
दुखहू मैं सुख होइ जहँ, कुटमित कहैं सभाग॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—कुच ग्रहण अथवा रदच्छद आदि के कारण उत-कंठित हो कर मनही मन सुखी होने पर भी ऊपर से मिथ्या दुख प्रकट करने को कुट्टमित हाव कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

नाह सो नाहीं ककै सुख सो सुख, सो रति केलि करै रतिया मैं।
देत रदच्छद सी सी करै, कर ना पकरै पै बकै बतिया मैं॥
देव किते रति कूजित के तन, कम्प सजे न भजे छतिया मैं।
जानु भुजानहू कों भहरावति, आवते छैल लगी छतिया मैं॥

शब्दार्थ—नाह-पति। रतिकेलि-कामक्रीडा। रतिया मैं-रातमें।

८—बिब्बोकु

दोहा

प्रिय अपराध धनादि मद, उपजै गर्व्व कि बारु।
कुटिल डीठि अवयव चलन, सो बिब्बोकु बिचारु ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—प्रेमी के अपराध पर अथवा धनादि के मद से हृदय मे अभिमान उत्पन्न होकर टेढ़ीनिगाह से देखना और भौंह आदि नचाकर मान दिखलाना बिब्बोकु हाव कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

स्यामले सौति के संग बसे निसि, आँगनि वाहि के रंग रचाइकै।
आए इतै परभात लजात से, बोलत लोचन लोल लचाइ कै ॥
देव कों देखि कै दोष भरे तिय, पीठि दई उत दीठि बचाइ कै।
ज्यो चितई अरसोंहें रिसोंहैं, सुसोहे सखीन के भौंहें नचाइ कै ॥

शब्दार्थ—स्यामले-श्रीकृष्ण। वाहिं. रंगरचाइकै-उसीके रंगमे रंगे हुए। इतै-यहां। परभात-प्रातःकाल, शुबह। बोलते...लचाइकै-लज्जा के मारे आँखे नीची करके बोलते हैं। पीठ दई-पीठ फेर के बैठगयी।

९—ललित

दोहा

मन प्रसाद पति बस करन, चमत्कार चित होइ।
सकल अंग रचना ललित, ललित बखानै सोइ ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—पति को वश में करने के लिए शृंगार युक्त सब अंगो को सुकुमारता से रखने को ललित हाव कहते है।

उदाहरण

सवैया

पूरि रहै पहिले पुर कानन, पान के गौन सुगन्ध समाजनि।
गान सों गुंज निकुज उठे,कविदेव सुभौरनि की भई भाजनि॥
दूरि ते देखी मसाल सी, बाल मिली मुख भूषन बेष बिराजनि।
जानि परि वृषभान सुता जब कान परी बिछियान की बाजनि॥

शब्दार्थ—दूरि तें-दूर से। मसाल सी बाल-सुन्दर युवती। बिछियान की बाजनि—बिछियो का बजना।

१०—विहित

दोहा

ब्याज लाज तें चेष्टा, औरे और बिचारु।
पूरे पिय अभिलाष तिय, ताही बिहित बिचारु॥

भावार्थ—लज्जावश अपने मनोरथ को प्रकट न कर किसी मिस से प्रेमी की इच्छा पूर्त्ति करने को विहित हाव कहते हैं। यह दो तरह का होता है-व्याज और लाज।

उदाहरण पहला (व्याज)

सवैया

वृषभान की जाई कन्हाई के कौतुक, आई सिंगार सबै सजि कै।
रस हास हुलास बिलासनि सों, कविदेव जू दोऊ रहे रजि कै॥

हरि जू हँसि रंग मैं अंग छुयो, तिय संग सखीनहू कौ तजि कै।
उठि धाई भटू भय के मिसि भामती, भीतरे भौन गई भजि कै।

शब्दार्थ—वृषभान की जाई-राधा। आई......सजिकै-सब शृंगार करके आयी।

उदाहरण दूसरा (लाज)

सवैया

भेट भई हरि भावते सो इक, ऐसे मैं आली कह्यो बिहँसाइ कै।
कीजे लला रस केली अकेली ए, केली के भौन नवेली को पाइ कै॥
भौंहें भ्रमाइ कछू इतराइ, कछूक रिसाइ, कछू मुसक्याइ कै।
खैचि खरी दई दौरि सखी के उरोजनि बीच सरोज फिराइ कैं॥

शब्दार्थ—भावते सों-प्रीतम से, प्यारे से। आली-सखी। बिहंसाइकै-हँसकर। केली के भौन-क्रीडागृह। नवेली-सुंदरी। कछूक...... मुसक्याइ कैं-कुछ क्रोधित होकर और कुछ मुस्कराकर।

वियोग शृङ्गार

दोहा

सुहृद श्रवन दरसन परस, जहां परस्परनाहिं।
सो वियोग शृङ्गार जहँ, मिलन आस मनमांहि॥
कहुँ पूरब अनुराग अरु, मान प्रवास बखान।
करुनातम इह भांति करि, वियोग चौविधि जान॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ अपने प्यारे से परस्पर दर्शन अथवा मिलन न हो और हर समय मिलने की आशा लगी रहे वहाँ वियोग शृङ्गार होता है।

यह वियोग चार तरह का होता है। १—पूर्वानुराग २—मान ३—प्रवास ४—करुणात्मक।

(क) पूर्वानुराग—(दर्शन)

दोहा

दंपतीन के देखि सुनि, बढ़ै परस्पर प्रेम।
सो पूरब अनुराग जँह, मन मिलिवे को नेम॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—एक दूसरे को देख अथवा सुनकर दोनों के मन में प्रेम की वृद्धि होकर, जो मिलने की अभिलाषा उत्पन्न होती है, उसे पूर्वानुराग कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

देवजू दोऊ मिले पहिले दुति, देखत ही तें लगे दृग गाढ़े।
आगे ही तें गुन रूप सुने, तबही तें हिये अभिलाषहि बाढ़े॥
ता दिन ते इत राधे उतै, हरि आधे भये जू वियोग के बाढ़े।
आपने आपने ऊँचे अटा चढ़ि, द्वारनि दोऊ निहारत ठाढ़े॥

शब्दार्थ—दुति-शोभा। लगे गाढ़े-भलीभांति आँखे लग गयी। आगे हीतें-पहले ही से। इत-इधर। उतै-उधर। आधे......बाढ़े-वियोग दुःख के कारण आधे रह गये। द्वारनि-दरवाज़ो पर। निहारत ठाढ़े-खड़े देखते हैं।

(ख) पूर्वानुराग—(श्रवण)

उदाहरण

सवैया

सुन्दरता सुनि देव दुँहू के, रहे गुन सो गुहि के मनमोती ।
लागे हैं देखिबे कों दिन रात, गिने गुरुहू नहिं सौकिन गोती ॥
देव दुहूँ की दहै विनु देखे सु, देखें दसा निसि सोवत कोती ।
होती कहा हरि राधिका सो, कहूँ नैकौ दई पहिचान जो होती ॥

शब्दार्थ—सौकिन-गोती-सगे संबंधी । होती......पहिचान जो होती-यदि कही राधिका और श्रीकृष्ण मे पहलेसे जान पहचान होती तो न जानें क्या होता ।

(ग) पूर्वानुराग—(श्रीकृष्ण)

उदाहरण

सवैया

बाल लतान मैं बाल को बोल, सुन्यों कहुँ संग सखीन के टेरत ।
काहू कही हरि राधा यही, दुरि देवजू देखी इतै मुख फेरत ॥
है तब तें पल एक नहीं कल, लाखनि लों अभिलाखनि घेरत ।
पाही निकुंजहि नन्दकुमार, घरीक मैं बार हजारक हेरत ॥

शब्दार्थ—दुरि छिपकर । है......कल-तब से एक घडी के लिए भी चैन नहीं । लाखनि . ...घेरत-लाखों अभिलाषाएँ मन में आती हैं । घरीक मैं. ....हजारक हेरत-एक घडी में हजार बार देखते हैं ।

(घ) पूर्वानुराग—(राधा)

उदाहरण

सवैया

सांसनि ही सो समीरु गयो अरु, आँसुन ही सब नीर गयोढरि।
तेज गयो गुन लै अपनों, अरु भूमि गई तनु की तनुता करि ॥
देव जियै मिलिवे ही की आस, कि आसहू पास अकास रह्योभरि ।
जादिन तें मुख फेरि हरै हँसि, हेरि हियो जू लियो हरि जू हरि ॥

[illegible]—[illegible] से ।

वियोग की दस अवस्थाएँ

छप्पय

प्रथम कहो अभिलाष, बहुरि चिन्ता सुमिरन कहु ।
तातें है गुन कथन, बहुरि उद्वेगहि बरनहु ॥
फिर प्रलाप उन्माद, व्याधि अरु जड़ता जानौ ।
बहुरि मरन यहि भाँति, अवस्था दस उर आनौ ॥
ए होंइ पूर्वअनुराग मै, दोउन के कविदेव कहि ।
अरु एक मरन बरनत न कवि, जो बरनै तो रसहिगहि ॥

दोहा

चिन्ता जड़ता, व्याधि अरु, सुमिरन नरनुन्माद ।
संचारिन मै है कहे, दम्पति विरह विषाद ॥

भावार्थ—अभिलाष, चिन्ता, स्मरण, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जडता और मरण ये पूर्वानुराग की दस अवस्थाएँ होती है। मरण का वर्णन कवि लोग पहले तो करते ही नहीं और यदि करते हैं तो इस प्रकार जिसमें उसकी सरसता नष्ट न हो। चिन्ता, जडता, व्याधि, स्मरण, और उन्माद का वर्णन संचारी भावों में हो चुका है।

१—अभिलाष

दोहा

प्रीतम जन के मिलन की, इच्छा मन में होय।
आकुलता सङ्कल्प बहु, कहु अभिलाष जुसोय॥

शब्दार्थ—आकुलता-घबड़ाहट।

भावार्थ—प्रेमी और प्रेमिका के परस्पर मिलने की उत्सुकता को अभिलाष कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

पहिले सतराइ रिसाइ सखी, जदुराइ पै पाइ गहाइये तौ।
फिरि भेंटि भटू भरि अंक निसङ्क, बड़े खन लों उर लाइयेतौ॥
अपनो दुख औरनि कौ उपहासु, सबै कविदेव बताइयेतौ।
घनश्यामहिं नैकहु एक घरी कौ, इहाँ लगि जोकरि पाइयेतौ॥

शब्दार्थ—सतराइ-ऐंठकर। रिसाइ-क्रोधित होकर। पाइ गहाइये-पैर पकड़वावें। बड़े खनलों उर लाइये-बहुत देर तक छाती से लगाये रहे। अपनो... बताइयेतौ-वियोगावस्था में जो दुख पाया है वह और दूसरे जो हँसी उड़ाते रहे हैं वह सब उन्हें सुनावें। घनश्यामहि.... तौ-यदि घनश्याम को एक घड़ी के लिए भी पा जाँय।

२—गुण कथन

दोहा

प्रिय के सुन्दरतादि गुन, बरने प्रेम सुभाइ।
साभिलाष जो गुन कथन, बरनत कोविदराइ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—अपने प्रीतम के गुणादि के साभिलाष वर्णन को गुणकथन कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

दामिन ह्वै रहिये मन आवत, मोहन को घन सौ तन घेरे।
वाही कौ देखिये री दिन रातिहू, कोई करौ किन कोटि करेरे॥
श्याम की सुन्दरताई कहौं कछु, होहिं जो जीभ हजारन मेरे।
केवल वा मुख की सुखमा पर, कोरि ससी गहि वारि के फेरे॥

शब्दार्थ—दामिन-बिजली। मोहन......घेरे-श्रीकृष्ण के बादलो जैसे शरीर को घेर कर। वाही कौं-उसी को। कोई करो......कोटि-करेरे-चाहे कोई कुछ भी करे। होइ जो......मेरे...यदि मेरे हजार जीभ हों। केवल...फेरे-केवल उस मुख की सुन्दरताई पर करोड़ो चन्द्रमा निछावर कर दिए।

३—प्रलाप

दोहा

अति उत्कण्ठा मन भ्रमन, पिय जनही कोलाप।
देव कहै कोविद सबै, बरनत ताहि प्रलाप॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—अपने प्रिय के उपस्थित न रहते हुये भी अत्यंत उत्सुकता से-उसी की याद कर चर्चा करते रहना प्रलाप कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

पुकारि कही मैं दही कोइ लेउ,यही सुनि आइ गयो उत धाई।
चितै कविदेव चलेई चले, मनमोहनी मोहनी तान सी गाई॥
न जानति और कछू तबतें, मनमाहि वही पै रही छबिछाई।
गई तौ हती दधि बेचन बीर, गयो हियरा हरि हाथ बिकाई॥

शब्दार्थ—उतधाई-उधर दौड़कर। मनमाँहि-मन में। गई...... बिकाई-हे सखी! मैं बेचने तो दही गयी थी परन्तु उनके हाथ अपने हृदय को बेच आयी।

४—उद्वेग

दोहा

जहँ प्रिय जन के अनमिले, होइ अनादर प्रान।
भली वस्तु नागा लगे, सो उद्वेग बखान॥

शब्दार्थ—नागा-बुरी।

भावार्थ—अपने प्यारे के वियोग में कुछ भी अच्छा न लगने को उद्वेग कहते हैं। ऐसी अवस्था मे भली वस्तुएँ भी बुरी प्रतीत होती हैं।

कवित

बिरह के घाम ताई बाम तजि धाम धाई,
पाई प्रतिकूल कूल कालिंदी की लहरी।

यातें न अन्हाई जरै जोतन जुन्हाई तातें,
चितै चहुँ ओर-देव कहै यहै हहरी ॥
बारिज बरत बिन वारें बारि बारु बीच,
बीच बीच बिचिका मरीचिका सी छहरी ।
चण्ड मारतण्ड कै अखण्ड बृजमण्डल है,
कातिक की राति किधों जेठ की दुपहरी ॥

शब्दार्थ—बिरह के घाम ताई-विरह रूपी घाम से तपी हुई । पाई प्रतिकूल-उलटा पाया । कालिंदी की लहरी-यमुना की लहरों को । चहुं ओर-चारो ओर । बारिज-कमल । बारु-बालू । मरीचिका-मृगतृष्णा । किधौं-या, अथवा ।

मान वर्णन

दोहा

पति परपतिनी रति करत, पतिनी करति जु मान ।
गुरु मध्यम लघु भेद करि, ताहू त्रिविध बखान ॥
पति पर परतिय चिह्न लखि, करति त्रिया गुरु मान ।
मध्यम ताको नाम सुनि, ता दरसन लघु जान ॥

शब्दार्थ—सरल है ।

भावार्थ—अपने पति को दूसरे की स्त्री से प्रेम करते देखकर जो क्रोध करती है उसे मान कहते हैं । यह तीन तरह का होता है-गुरु, मध्यम और-लघु । दूसरे की स्त्री से रति करने के चिह्न देखकर जो मान स्त्री करती है वह गुरु, उसकी प्रशंसा सुनकर जो मान करती है वह मध्यम और उसे देखते हुए देखकर जो मान करती है वह लघु मान कहलाता है ।

१—गुरु मानमोचन

उदाहरण

सवैया

सौति की माल गुपाल गरे लखि, बाल कियो मुख रोष उज्यारो।
भौहैं भ्रमी करिकै अधरा, निकर्‌यो रँग नैननि के मग न्यारो॥
त्यो 'कविदेव' निहारि निहोरि, दोऊ कर जोरि पर्‌यो पग प्यारो।
पी कों उठाइ कै प्यारी कह्यो, तुमसे कपटीन कौ काहि पत्यारो॥

शब्दार्थ—गरे-गले में। रोष-क्रोध। अधरा-ओष्ठ। नैननि के मग-आँखों की राह। निहारि-देखकर। निहोरि-खुशामद करके। परयो पग-पैरों पर गिर पड़ा। तुमसे......पत्यारो-तुमसे कपटी लोगों का क्या विश्वास?

२—मध्यम मानमोचन

उदाहरण

सवैया

बाल के सङ्ग गुपाल कहूँ, निस सोत मैं सौति को नाम उठे पढ़ि।
यों सुनिकैं पटु तानि परी तिय, देव कहैं इमि मान गयो बढ़ि॥
जागि परी हरि जानी रिसानी सी, सोंहैं प्रतीति करी चित में चढ़ि।
आँसुन सों संताप बुझ्यो, अरु साँसन सों सब कोप गयो कढ़ि॥

शब्दार्थ—निस-रात। सोत मैं-सोते हुए। पटु तानि परी-वस्त्र ओढ के सो गयी। रिसानी क्रोधित। सोहैं करी-शपथ खाने लगे। कोप गयो कढ़ि-क्रोध दूर हो गया।

३—लघु मानमोचन

उदाहरण

सवैया

बैठे हुते रँगरावटी मैं, जिनके अनुराग रँगी वृज भूम्यो।
किंकिनि काहू कहूँ झनकाइ, सुझाकन काहू झरोखे है झूम्यो॥
देव परत्रिय देखत देखि के, राधिका कौ मनु मान सौ घूम्यो।
बातें बनाइ मनाइ के लाल, हँसाइ के बाल हरे मुख चूम्यो॥

शब्दार्थ—बैठे हुते बैठे थे। अनुराग-प्रेम। किंकिनि-करधनी। परत्रिय-परस्त्री। बातें बनाइ-बातें बनाकर।

मानमोचन

साम दाम अरु भेद करि, प्रनति उपेछा भाइ।
अरु प्रसंग बिभ्रंस ये, मोचन मान उपाइ॥
साम छमापन को कहै, इष्ट दान को दान।
भेद सखी संमत मिलै, प्रनति नम्रता जान॥
वचन अन्यथा अर्थ जहँ, सुनुपेछा की रीति।
सो प्रसंग बिभ्रंस जहँ, अकस्मात सुख भीति॥

भावार्थ—साम, दाम, भेद, प्रनति, उपेक्षा, प्रसंग, और बिभ्रंस ये मान को दूर करने के उपाय हैं। क्षमा करना साम, इच्छित वस्तु प्रदान करना दाम, नम्रतापूर्वक व्यवहार प्रनति, सखी द्वारा अभिप्राय सिद्ध करना भेद, कहे हुए वचनों को ध्यान में लाना उपेक्षा, अकस्मात भयभीत कर सुख देना बिभ्रंस कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

आपनोई अपमान कियो, पहिराइवे को मनिमाल मंगाई।
लै मिलई मिस सों कुसखी, करि, पाय परेऊ न प्रीति जगाई ॥
केतिक कौतिक बाते कहीं, कविदेव तउ तिय तोरी सगाई।
आजु अचानक आइ लला, डरवाइ कें राधिका कण्ठ लगाई ॥

शब्दार्थ—मनिमाला-मणिमाला। केतिक-कितनीही। अचानक-अकस्मात।

दोहा

या बिधि छऊ उपाय हैं, न्यारे न्यारे जान।
लाघव तें एकत्र ही, सबको कियो बखान ॥
देसकाल सबिशेष लखि, देखि नृत्य सुनि गान।
जातु मनाये हूं बिना, माननितीनु को मान ॥

शब्दार्थ—लाघव तें-संक्षेप में।

भावार्थ—इस तरह मनमोचन के अलग अलग छः उपाय हैं जो संक्षेप में एक जगह वर्णन कर दिए गये हैं। देस काल आदि को देखकर अथवा नृत्य गीतादि को देख-सुनकर बिना मनाये भी, मानिनियों का मान चला जाता है।

सवैया

रूठिरही दिन द्वैक तें भामिनि, मानी नहीं हरि हारे मनाइकै।
एक दिना कहूँ कारी अंधारी, घटा घिरि आई घनी घहराइकै ॥

ओर चहूँ पिक चातक मोर के, सोर सुने सु उठी अकुलाइकै।
भेटी भटू उठि भामते कों, घन धोखे हीं धाम अंधेरे में धाइकै ॥

शब्दार्थ—*दिनद्वैकते-दो एक दिन से। भामते कों—प्यारेको।

प्रवास वियोग

दोहा

प्रीतम काहू काज दै, अवधि गयो परदेस।
सो प्रवास जहँ दुहुन कौ,कष्टक हैं बिबुधेस ॥

शब्दार्थ——प्रवास-विदेश गमन।

भावार्थ—पति के किसी कार्यवश परदेश चले जाने से जब दोनों को वियोग का कष्ट होता है तब उसे प्रवास वियोग कहते हैं।

उदाहरण पहला

सवैया

लाल बिदेस सु बालबधू, बहु भांति बरी बिरहानल ही मैं।
लाज भरी गृहकाज करै, कहि देव परे न कहूँ कलही मैं ॥
नाथ के हाथ के हेरि हरा हिय, लागि गई हिलकी गलही मैं।
आँखिन के अँसुवा लखि लोगन, लीलि लजीली लिये पलही मैं ॥

शब्दार्थ—बहु भांति ..बिरहानलही मैं-अनेक तरह से विरह-रूपी अग्नि में जलने लगी। ग्रहकाज-घर के काम। परे न...कलही में-कभी चैन नही मिलता। हेरि-देखकर। हिय...गलही मैं-गले में हिलकी बँधगयी अर्थात् जोर जोर से रोने लगी। आँखिन......पलही मैं-आँखों के आँसुओं को लोगों को निहारते देख, चट लील लिया अर्थात् आँखों के आँखों में रोक दिये।

उदाहरण दूसरा

सवैया

देव कहै बिन कन्त बसन्त न, जांउ कहूँ घर बैठि रहौरी।
हूक हिये पिक कूक सुने विष, पुज निकुजनी गुञ्जति भौंरी॥
नूतन नूतन के बन बेषन, देखन जाती तौ हौं दुरि दौरी।
बीर बुरौमति मानो बलाइ ल्यौं, होंहुगी बौर निहारत बौरी॥

शब्दार्थ— बिन कन्त-पति के बिना। हूक...कूकसुने-कोयल की बोली सुनतेही हृदय में हूक उठती है। विषपुंज . भौंरी-कुंजो में यह विषैली भ्रमरी गूंजती फिरती है। वीर . ल्यौं-हे सखी तुम्हारी बलैयां लूं तुम-मेरे बाहर न जाने का बुरा मत मानो। होंहुगी.. बौरी-क्योकि बौर देखते ही मैं पागल सी हो जाँऊगीं।

उदाहरण तीसरा

कवित्त

जागी न जुन्हैया यह आगी मदनज्वर की,
लागी लोक तीनों हियो हेरें हहरतु है।
पारि पर जारि जल-जन्तु जारि बारि बारि
बारिधि ह्वै बाडव पताल पसरतु है॥
धरती तें धाइ झर फूटी नभ जाइ,
कहै देव जाइ जोवत जगत ज्योंजरतु है।
तारे चिनगारे ऐसे चमकत चारौं ओर,
बैरी बिधुमण्डल बभूकौ सो बरतु है।

शब्दार्थ-जुन्हैया-चाँदनी। यह आगी मदन ज्वर की—यह काम ज्वर की तपनि है। हहरतु है-घबडाता है। बारिधि-समुद्र। झर-लपट। नभ-आकाश। जाहि-जिसे। जोवत देखने पर। जगत-संसार। तारे-नक्षत्र। चिनगारे ऐसे-चिनगारियों की तरह। बभूकौ-अग्नि की ज्वाला। बरतु है-जलता है।

उदाहरण तीसरा

सवैया

ब्याकुल ही बिरहाज्वर सो, सुभ पावनि जानि जनीनु जगाई।
घोरि घनारंग केसरि कौ, गहि बोरि गुलाल के रंग रँगाई॥
त्यों तिय सांस लई गहरी, कहिरी उनसों अब कौन सगाई।
ऐसे भये निरमोही महा, हरि हाय हमें बिनु होरी लगाई॥

शब्दार्थ-ब्याकुल ही-घबड़ाई हुई थी। घोरि-घोलकर। सांस ...गहरी-दीर्घ निःश्वांस छोडी। सगाई-संबंध।

नायक वियोग

उदाहरण

सवैया

सुधाधर से मुख बानि सुधा, मुसक्यानि सुधा बरसै रद पाँति।
प्रबाल से पानि मृनाल भुजा, कहि देव लतान की कोमल काँति॥
नदी त्रिबली कदली जुग जानु, सरोज से नैन रहे रस माँति।
छिनो भरि ऐसी तिया बिछुरे, छतियां सियराइ कहो किहि भाँति॥

शब्दार्थ—सुधाधर-चन्द्रमा। बानि सुधा-अमृतमय वचन। रदपांति-दंतपंक्ति। प्रबाल मूंगा। कदली-केला। सरोज से नैन-कमल के समान नेत्र। छतियां...किहि भांति-छाती कैसे ठंडी रहे।

करुनात्मक वियोग

दोहा

दम्पतीन में एक के, विषम मूरछा होइ।
जहँ अति आकुल दूसरौ, करुनातम कहि सोइ॥

शब्दार्थ—आकुल-व्यग्र।

भावार्थ—जहाँ दम्पति (पति-पत्नी) में एक को विरह के मारे मूर्छा आजाय और दूसरा अति व्याकुल हो जाय वहाँ करुनात्मक वियोग होता है।

उदाहरण पहला—(लघु)

कवित्त

कन्त की बियोगिन बसन्त की सुनत बात,
व्याकुल ह्वै जाति बिरहज्वर सों जरिकैं।
देव जू दुरन्त दुखदाई देखो आवतु सो,
तामैं तुम्हे न्यारी भई प्यारी जैहे मरिकैं॥
एती सुनि प्यारे कह्यो हाय हाय ऐसी भयें,
होय अपराधी कौन कहौ सो सुधरिकैं।
हरि जू तौ हेरि जौं लो फेरि कहैं दूती कछु,
टेरि उठी तूती तौलौं तुही तुही करिकैं॥

शब्दार्थ—कन्त की वियोगिन-पति से विछुड़ी हुई। दुरन्त दुखदाई-अत्यन्त कष्ट देनेवाला। तामैं-उसमें (बसन्त में)। तुम्हें न्यारी भई-तुमसे विछुड़ी हुई। टेरि उठी-पुकार उठी। तूती-मादा तोता।

उदाहरण दूसरा—(मध्यम)

सवैया

गोकुल गाँव तें गौन गुपाल को, बाल कहूँ सुनि आई अलीपर ।
व्याकुल ह्वै बिरहानल सों, तजि घूमि गिरी गुन गौरि गलीपर ॥
हाइ पुकारत धाइ गये, न सम्हारत वे थिरु नाँहि थलीपर ।
जानि न काहू की कानि करी, हरि आनि गिरे वृषभानललीपर ।

शब्दार्थ—गौन-जाना, गमन । थिरु-स्थिर । थली-स्थान । कानि-लज्जा । वृषभानलली-राधा ।

उदाहरण तीसरा—(दीर्घ)

सवैया

कालिय कालि महाविष व्याल, जहाँ जल ज्वाल जरै रजनीदिनु ।
ऊरध के अधके उबरें नहिं, जाकी बयारि बरै तरु ज्यों तिनु ॥
ता फनि की फन-फाँसिनु पै, फँदि जाइ फँसै उकसै न कहू छिनु ।
हा वृजनाथ सनाथ करौ, हम होती अनाथ पै नाथ तुम्हे बिनु ॥

शब्दार्थ—रजनीदिनु-रात दिन । बयारि-हवा । बरै-जले । उकसै-निकल सके ।

दोहा

जहाँ आस जिय जियन की, सो करुनातम जानु ।
जामे निहचै मरन को, करुना ताहि बखानु ॥
करुनातम सिंगार जहँ, रति और शोक निदानु ।
केवल सोक जहाँ, तहाँ भिन्न करुन रस जानु ॥

या विधि बरनत चारि बिधि, रस वियोग शृङ्गारु।
यातें कहे न और रस, बाढ़े बहु विस्तारु॥
रस संभोग वियोग को, यह बिधि करउँ बखानु।
या रस बिनु सबरस बिरस, कवि सब नीरस जानु॥

शब्दार्थ—निहचै-निश्चय। या......बिरस-इस रस के बिना सब रस फीके जान पड़ते हैं।

भावार्थ—सरल है।

चतुर्थ विलास

[नायक और नायिका]

[पररतिदुःखिता, प्रेमगर्विता, रूपगर्विता और मानवती ये चार भेद स्वकीयादि नायिकाओं के और होते हैं। इन सब नायिकाओं की आठ अवस्थाएँ भी होती हैं—वे ये हैं:—१–स्वाधीना २–उत्कंठिता ३–वासकसज्जा ४–कलहंतरिता ५–खंडिता ६–विप्रलब्धा ७–प्रोषितप्रेयसी और अभिसारिका प्रकृति के अनुसार इस सबके उत्तमा, मध्यमा और अधमा ये तीन तीन भेद और भी हैं]
नायक
अनुकूल
दक्षिण
शठ
धृष्ट
नायिका
स्वकीया
परकीया
गणिका या सामान्या
मुग्धा
मध्या
प्रगल्भा
[प्रौढ़ा]
प्रौढ़ा
कन्यका
वयःसन्धि
नववधू
नवयौवना
नवलअनङ्गा
सलज्जरति
रूढ़यौवना
प्रादुर्भूतमनोभवा
प्रगल्भवचना
विचित्रसुरता
लब्धापति
रतिकोविदा
आक्रान्तनायका
सविभ्रमा
गुप्ता
विदग्धा
लक्षिता
कुलटा
अनुसयना
मुदिता
[वाक्विदग्धा; क्रियाविदग्धा]
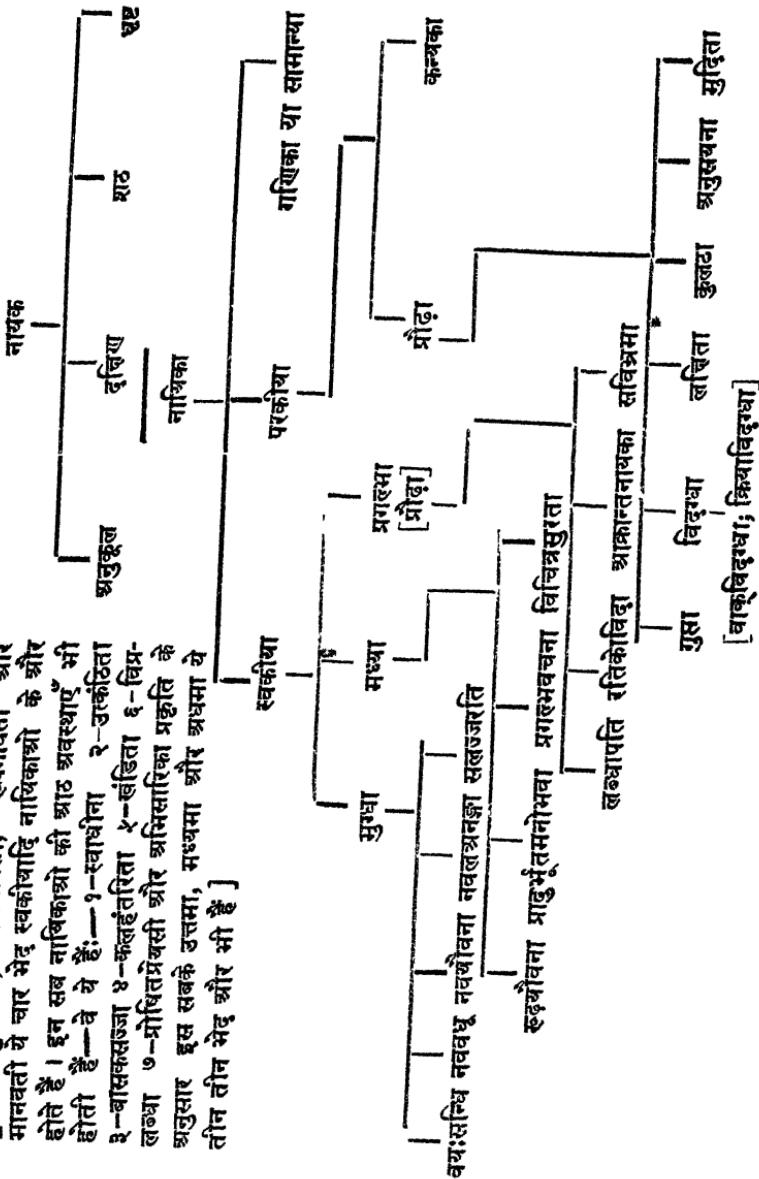
नायक नायिका विचार

दोहा

भाव सहित सिंगार कौ, जो कहियतु आधारु।
सो है नायक नायिका, ताको करत बिचारु॥

शब्दार्थ—आधारु-आधार।

भावार्थ—शृङ्गार रस के आधार नायक और नायिका माने गये हैं। अब यहाँ उन्हीं का वर्णन किया जाता है।

नायक भेद

दोहा

नायक कहियतु चारि बिधि, सुनत जात सब खेद।
चौरासी अरु तीन सै, कहत नायिका भेद॥
प्रथम होइ अनुकूल अरु, दच्छिन अरु सठ धृष्ट।
या बिधि नायक चारि बिधि, बरनत ज्ञान गरिष्ट॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—नायक के चार तथा नायिकाओं के ३८४ भेद होते हैं। नायकों के चार भेदों मे पहला अनुकूल, दूसरा दच्छिण, तीसरा शठ और चौथा धृष्ट है।

१—अनुकूल

दोहा

निज नारी सनमुख सदा, विमुख बिरानी बाम।
नायक सो अनुकूल है, ज्यों सीता को राम॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—केवल अपनी स्त्री से ही प्रेम कर परस्त्री से विमुख रहनेवाला नायक अनुकूल कहलाता है। जैसे सीता के लिए राम।

२—दक्षिण

दोहा

सब नारिन अनुकूल सो, यही दक्ष की रीति।
न्यारी ह्वै सब सों मिलै, करै एकसी प्रीति॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—अनेक स्त्रियों पर एक समान प्रीति रखनेवाला नायक दक्षिण कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

सौगुने सील सुभाइ भरे, जिनके जिय औगुन एक न पावै।
मेरिये बात सुनै समुझै, मनभावन मोहि महा मन भावै॥
देव को चित्त चितौनिन चंचल, चंचलनैनी कितौ चितवावै।
आँखिहू राखिहू नाखर के, हरि क्यों तिन्हे लीक अलीक लगावै॥

शब्दार्थ—जिय-हृदय, मन। मनभावन-पति,प्यारा। चितौनिन-चितवनि। चंचलनैनी-चंचल नेत्रवाली।

३—शठ

दोहा

आगे आपनु ह्वै रहै, पीछे करै चबाव।
दोष भरौ कपटी कुटिल, सठ को यही सुभाव॥

शब्दार्थ—आपनु-अपना। चबाव-निंदा।

भावार्थ—छल कपट से अपने कार्य को साधनेवाला तथा मुँह पर चिकनी-चुपड़ी कहकर, पीछे चवाव करनेवाला नायक सठ कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

राति रहै रति मानि कहूँ, अरु दोष भरो नित ही इत आवै।
जो कहिये कि कहा है कहौ, तब झूठी हजारुक बातें बनावै॥
और सी और के आगे कहे, कवि देवजू मेरी सी मोहि सुनावै।
या सठ कों हटको न भटू, उठि भोर की वार किवार खुलावै॥

शब्दार्थ—हजारुक-हजार तरह की, अनेक। और.... .सुनावै। दूसरों के आगे उनको अच्छी लगनेवाली और मेरे आगे मुझे अच्छी लगनेवाली बाते कहता है। हटको-मना करो। भटू-सखी। भोर की वार-सुबह के वक्त, प्रातःकाल। किवार-किवाड़।

४-धृष्ट

दोहा

दोष भरो प्रत्यच्छ ही, सदा कर्मअपकृष्ट ।
सहै मार गारी; रहै, निलज पाँइ परिधृष्ट ॥

शब्दार्थ--अपकृष्ट-निन्दनीय, बुरे ।

भावार्थ—दोषी, लज्जाहीन, अपमानित होने तथा भर्त्सना गालियाँ आदि सह कर पैरो पड के खुशामद कर बार बार अपराध करने वाले नायक को धृष्ट कहते हैं ।

उदाहरण

सवैया

द्वार तें दूरि करौं बहु बारनि, हारनि बाँधि मृनालनि मारो ।
छाड़तु नाअपनो अपराधु, असाधु सुभाइ अगाधु निहारो ॥
बैरिन मेरी हँसै सिगरी, जब पाँइ परै सु टरै नहिं टारो ।
ऐसे अनीठ सों ईठ कहै यह ढीठ बसीठ नहीं को बिगारो ॥

शब्दार्थ—बहु बारनि-अनेक बार । छाड़तु......अपराधु-अपना अपराध नहीं छोड़ता । सिगरी-सब । पाँइ परै-पैरों पडता है । टरै नहि टारौ-हटाये नहीं हटता । ठीठ-धृष्ट ।

नर्म सचिव

दोहा

दूरि होइ जा बात मैं, मानवतिन को मान ।
सोई सोई जौ कहे, पीठिमरद सु बखान ॥

शब्दार्थ - मानवतिन-मान करने वाली।

भावार्थ—जिन जिन बातों के कहने से मानिनी का मान दूर होता है उन उन बातों को कहनेवाला पीठ मर्द कहलाता है।

सवैया

देखि जिन्हे उमगै अनुराग, सु फूलि रहौ बन बाग चहूँ है।
मानु तजौरी पुकारि पिकी कहै, जोबन की करिबे न अहूँ है॥
सोर करें सब ओर अलीगन, कोप कठोर हिये अजहूँ है।
देखौ जू बूझि मने अपने हू को, ऐसो समो सपने हू कहूँ है॥

शब्दार्थ—उमगै अनुराग-प्रेम उत्पन्न हो। अहूँ-अहंकार, घमंड। अजहूँ-अबभी। सोर-शोर, कोलाहल। अलीगन-भौंरे। समौ-समय। सपने हूँ कहूँ है-कही सपने मे भी है?

विट्

दोहा

बचन चातुरी कों रचै, जानै सकल कलानि।
ताही सों विट् सचिव कहि, कविवर कहत बखानि॥

शब्दार्थ—कलानि-कलाओ को।

भावार्थ—बातें करने में चतुर तथा सब कलाओं को जानने वाला विट् कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

जाहि जपै त्रिपुरारि मुरारि, सबै असुरारि सुरारि हने हैं।
जाके प्रताप त्रिलोक तचै न, बचै मुनि सिद्धि समाधि सने हैं॥

ताहि डरै नहिं तू सजनी, उत आतुर वे कविदेव घने हैं।
मेरौ मनायो तू मानि लै मानिनि, मैन महीप के मान मने हैं॥

शब्दार्थ—जाहि-जिसके। जाके प्रताप-जिसके प्रभाव से। सजनी-सखी। आतुर-अधीर। मैन-कामदेव।

विदूषक

दोहा

अङ्ग भेष भाषानुकरि, करै अन्यथा भाइ।
ताहि विदूषक कहत जो, देइ हाँस के दाइ॥

शब्दार्थ—हाँस-हँसी।

भावार्थ—अनेक भाषाओं का जानकार तथा तरह तरह के वेष बनाने में चतुर, बात बात पर हँसा देनेवाला-विदूषक कहलाता है।

उदाहरण

सवैया

ऊंक सो वो रहिहै अभई, ऊं विलोकत भूमि पै घूमि गिरोंगी।
तीर सौ सीरौ समीर लगै, तें सरीर मे पीर घनीये घिरोंगी॥
मेरो कह्यो किन मानती मानिन, आपुही तें उतको उनिरोगी।
भौन के भीतर हीं भ्रम भोरी लों, बौरी लों नैक मैं दौरी फिरोंगी॥

शब्दार्थ—अभई-अभी। तीर सौ-तीर के समान। सीरौ-ठंडा। समीर-हवा। पीर-पीडा। घनीये-अधिक। भौन-घर। बौरी लों-पागल की भाँति।

नायिका वर्णन

दोहा

नायक नर्म सचिव कहे, यह विधि सब कविराइ।
अब बरनत हौं नायका, लच्छण भेद सुभाइ॥
तीनि भाँति कहि नाइका, प्रथम स्वकीया होइ।
परकीया सामान्या, कहत सुकवि सब कोइ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—नायक और नर्म सचिव के भेद कहे जा चुके। अब नायिकाओं का वर्णन किया जाता है। नायिकाओं के मुख्य तीन भेद हैं। स्वकीया, परकीया और सामान्या।

१—स्वकीया

दोहा

जाके तन मन वचन करि, निज नायक सों प्रीति
बिमुख सदा पर पुरुष सों, सो स्वकिया की रीति॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—तन, मन, वचन से केवल अपने पति से प्रेम कर अन्य पुरुषों से बिमुख रहनेवाली स्वकीया कहलाती है।

उदाहरण

सवैया

कविदेव हरे बिछियानु बजाइ, लजाइ रहे पग डोलनि पै।
गुरु डीठि बचाइ लचाइ कै लोचन, सोचनि सों मुख खोलनि पै॥

हँसि हौंस भरे अनुकूल विलोकनि, लाल के लोल कपोलनि पै।
बलि हो बलिहारी हौं बार हजारक, बाल की कोमल बोलनि पै॥

शब्दार्थ—डीठि-दृष्टि। लचाइ कै लोचन-आँखे नीची कर के। हौंस उत्साह। लोल-सुन्दर। कपोलनि-गालों।

दोहा

मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा, स्वकिया त्रिविधि बखानु।
सिसुता मै जोबन मिलै, मुग्धा सो उर आनु॥
वयःसन्धि अरु नवबधू, नवजोबना विचारु।
नवलअनङ्गा सलजरति, मुग्धा पाँच प्रकार॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—मुग्धा, मध्या और प्रगल्भा ये स्वकीया के तीन भेद हैं। इनमे (बाल्यावस्था बीतने पर) जिसके शरीर के अङ्ग प्रत्यङ्ग में यौवन का आगमन दिखलायी दे अर्थात् अंकुरित यौवना नायिका मुग्धा कहलाती है। इस मुग्धा के भी पाँच भेद हैं। १—वयःसन्धि २—नववधू ३—नवयौवना ४—नवलअनङ्गा और सलज्ज रति।

१—वयः सन्धि

सवैया

औरनु के अंग भूषन देखि, सुहाँसनि भूषन वेष सकेलै।
मन्द अमन्द चलै चितवै, कविदेव हंसै बिलसै बपु बेलै॥
फूल बिथोरि के बारनु छोरि कें, हारनु तोरि उतै गहि मेलै।
मूरि के भाव बिसूरि सखीनु कों, दूरितें दूरि के धूरि मैं खेलै॥

शब्दार्थ—चितवै-देखे । बपु-शरीर । बिसुरि-भूलकर । धूरि मैं-धूल मैं ।

२—नवबधू

सवैया

गोकुल गांव की गोपसुता, कविदेवन केतिक कौतिक ठाने ।
खेलत मोही पै नंदकुमार री, बार हि बार बड़ाई बखाने ॥
मोरिये छाती छुवें छिपि के, मुख चूमि कहै कोई और न लाने ।
काहे तें माई कछू दिन ते, मन मोहन कौ मनमोहीं सों माने ॥

शब्दार्थ—कौतिक-कौतुक, खेल । बड़ाई-तारीफ़ । छुवें-छुएं । लाने-उपाय । मनमोहन......माने-मनमोहन का मन मुझी से लगता है ।

३—नवयौवना

सवैया

जानति ना बहु कौ बड़ भाग, बिरंच रच्यौ रसिकाई बसी है ।
देव कहैं नवबेस बसन्त, लता फल जाके नवत्तत दीहै ॥
मेटि वियोग समैटि सबै सुख, सो भरि भेंटि भटू जुग जीहै ।
या मुख सुद्ध सुधाधर तें, अधरा रसधार सुधार से पीहै ॥

शब्दार्थ—विरंचि-ब्रह्म । नवबेस-नयी उम्र । सुधाधर-चन्द्रमा ।

४—नवल अनङ्गा

कालि परों लगि खेलत ही, कबहूं न कहूं यह घूंघट काढ्यो ।
आजु ही भौंह मरोरि चली, तनु तोरि जनावत जोबन गाढ्यो ॥

नैननि कोटि कटाक्ष करै, कविदेव सु बैननि कौ रस बाढ्यो।
नेकु जितै चितवै चितदै तित, मैन मनो दिन द्वैक कौ ठाढ्यो॥

शब्दार्थ—कालिपरों लगि-कल परसों तक। भौंह मरोरि-भौंह मड़ोर कर। तनुतोरि-शरीर को मरोड कर। जोबन-यौवन। चितवै-देखे। तित-उधर। मैन-कामदेव। मनों . ठाढ्यो-मानों दो दिन से खडा हो।

५—सलज्जरति

सवैया

कूजत हैं कलहंस कपोत, सुकी सुक सोरु करैं सुनिता हू।
नैक हू क्यों न लला सकुचौ, जिय जागत हैं गुरु लोग लजाहू॥
हाथ गह्यो न कह्यो न कछू, कविदेवजू भौन मैं देखो दिया हू।
हाहा रहौ हरि मोहि छुऔ जिनि, बोलत बात लजात न काहू॥

शब्दार्थ—कूजत है-बोलत है। सुकी-तूती। सुक-तोता। सकुचौ-लजाओ, लज्जा करो। जिय-मन में, हृदय में। गुरु लोग-बड़े लोग। भौन-घर। दिया-दीपक।

मुग्धा सुरत

सवैया

खाट की पाटी रहै लपिटाइ, करौंट की ओर कलेवर काँपै।
चूमत चौंकत चन्दमुखी, कविदेव सुलोल कपोलनि चाँपै॥
बालबधू बिछियान के बाजतें, लाज तें मूंदि रहै अँखियाँ पै।
आँसू भरे सिसके रिसके, मिसके कर झारि झुके मुख झाँपै॥

शब्दार्थ—खाट-पलंग। करौंट-करवट। लोल-सुन्दर। सिसके-सिसकी भरे। रिसके-क्रोधकर। मुख झाँपै-मुँह छिपाती है।

मुग्धा मान

सवैया

सौति कु मान लियो सपने कहूँ, सोति को सङ्ग कियो पिय जाइ कै ।
देव कहै उठि प्यारे की सेज ते, न्यारी परी पिय प्यारी रिसाइ कै ॥
नाह निसङ्क गही भरि अङ्क, सु लै परजङ्क धरी धन धाइ कै ।
आँसुन पोंछि उरोज अँगौछि, लई मुख चूमि हिये सों लगाइ कै ॥

शब्दार्थ—न्यारी-अलग । रिसाइ कै- क्रोधित होकर । परजङ्क-पलका । उरोज-कुच ।

मध्या स्वकीया

दोहा

जाके होहि समान द्वै, इक लज्जा अरु काम ।
ताको कोविद कवि सबै, बरनत मध्या नाम ॥

सोरठा

रूढ़जैाबना नाम, प्रादुर्भूतमनोभवा ।
प्रगल्भबचना बाम, हैं विचित्रसुरता बहुरि ॥

दोहा

मध्या चार प्रकार की, यह बिधि बरनत लोइ ।
उदाहरण तिनको सुनौ, जाको जैसो होइ ॥

शब्दार्थ—सरल है ।

भावार्थ—लज्जा और काम जिसमें समान होता है वह मध्या नायिका कहलाती है । इसके चार भेद हैं । १—रूढ़यौवना २—प्रादुर्भूत मनोभवा ३—प्रगल्भवचना ४—विचित्रसुरता ।

१—रूढ़यौवना

सवैया

राधिका सी सुर सिद्ध सुता, नर नाग सुता कवि देव न भूपर ।
चन्द करौं मुख देखि निछावरि, केहरि कोटि लटो कटि ऊपर ॥
काम कमानहुँ को भृकुटीन पै, मीन मृगीनहूँ को दृगदू पर ॥
बारों री कञ्चन कञ्ज कली, पिक बैनी के ओछे उरोजन ऊपर ॥

शब्दार्थ—चन्द करौं... . निछावरि-मुख पर चन्द्रमा को निछावर करदूं । मीन-मछली । मृगील-हिरनियाँ । दृगदू पर-दोनों आँखों पर । कञ्चन-सोना । ओछे-छोटे । उरोज-कुच ।

२—प्रादुर्भूति मनोभवा

सवैया

बाल बधू के बिचार यहो, जु गुपाल की ओर चितैवोइ कीजे ।
त्यो चितवै चित चातुरी सों, रुचि की रचना बचनामृत पीजे ॥
भूषन भेष बनावै सबै, अरु केसर के रँग सो आँग मींजे ।
आपने आगे औ पीछे तिरीछे, है देह को देखि सनेह सों भींजै ॥

शब्दार्थ—चितैवोइ कीजै-देखती ही रहूँ ।

३—प्रगल्भवचना

सवैया

मेरेऊ अङ्क जो आवै निसङ्क तौ, हौं उनके परजङ्कहि जैहों ।
पान खबाइ उन्हें पहिलैं तब, नाथ के हाथ के पाननि खैहों ॥

ऐसी न होइ जू देह की दीपति, देव को दीप समीप दखैहौ।
मोहन को मुख चूमि भटू तब, हौं अपनो मुख चूमन दैहौं ॥

शब्दार्थ—मेरेऊ-मेरे भी । परजङ्क-पलङ्ग । पाननि-पानो को । देह की दीपति-देह की ज्योति अर्थात् सुन्दरता ।

४—विचित्रसुरता

सवैया

केलि करै रसपुञ्ज भरी, बन कुञ्जन प्यारे सों प्रीति की पैनी ।
झिल्लिन सों झहनाइ के किंकिनि, बोले सुकी सुक सो सुखदैनी ॥
यों बिछियान बजावति बाल, मराल के बालनि ज्यों मृगनैनी ।
कोमल कुंज कपोत के पोत लों, कूँकि उठे पिक लो पिकबैनी ॥

शब्दार्थ—प्रीति की पैनी-प्रेम करने में चतुर । कपोत-कबूतर ।

मध्या सुरत

सवैया

जागत ही सब जामिनि जाइ, जगाइ महा मदनज्वर पावक ।
अँजन छूटि लगै अधरान मैं, लोइन लाल रंगे जनो जावक ॥
कामिनि केलि के मन्दिर मैं, कविदेव करै रतिमान तरावक ।
सङ्ग ही बोलि उठे तजि, कावक लाव कपोत कपोत के सावक ॥

शब्दार्थ—जामिनि-रात । मदन ज्वर-काम ज्वर । अधरान-ओठ । लोइन-आँखे । जावक-महावर । कावक-कबूतरों के बैठने की छतरी । सावक-बच्चे ।

मध्या सुरतान्त

सवैया

रँग रावटी तै उतरी परभात ही, भावती प्यारे के प्रेम पगी।
अलसाति जम्हाति सुदेव सुहाति, रदच्छद मै रद पाँति लगी॥
सब सौतिन की छतियाँ छिनही मैं, सुहागिन की दुति देखि दगी।
उतराती सी बैन तराती भई इतराती बधू इतराती जगी॥

शब्दार्थ—अलसाति-अलसाती हुई। जम्हाति-जम्हाई लेती हुई। रद-दाँत। दुति-सुन्दरता। इतराती-इतराती हुई।

प्रौढ़ा

दोहा

मति गति रति पति सो रँचै, रतपति सकल कलान।
कोविद अति मोहित महा, प्रौढ़ा ताहि बखान॥
लब्धापति रतिकोविदा, क्रान्तनाइका सोइ।
सविभ्रमा यह भाँति करि, प्रौढ़ा चौविधि होइ॥

शब्दार्थ—चौविधि-चार तरह की।

भावार्थ—अपने पति से परम प्रीति करनेवाली, सब काम कलाओ में प्रवीण नायिका को कविलोग प्रौढा कहते हैं। इसके भी चार भेद है। १—लब्धापति २—रति कोविदा ३—आक्रान्तनायका ४—सविभ्रमा।

१—लब्धापति

सवैया

स्याम के संग सदा हम डोलें, जहाँ पिक बोले अलीगन गुंजै।
छाहन माँह उछाहनि सों, छहरें जहाँ बीरी पराग को पुंजै॥

बोलनि मैं रस केलिन कै कवि, देव करी चित की गति लुंजै।
कालिंदी कूल महा अनुकूल ते, फूलति मंजुल मजुल कुंजै॥

शब्दार्थ—अलीगन-भौंरे। मॉह-मे। छहरें-शोभायमान हों। बोलनि मैं-बात चीत मे। चित......लुंजै-चित की गति को लुंज कर दिया अर्थात् चित्त लोभायमान हो गया। मंजुल-सुन्दर।

२—रतिकोविदा

सवैया

कलि मैं केतिक कौतिक कै, रस हाँस हुलास विलासनि सोहै।
कोमल नाद कथा रस बादुनि, काम कला करिके मन मोहै॥
छेदि कटाक्ष की कोरनि सों गुन, सों पति को मन मानिक पोहै।
जानति तूं रति की सिगरी गति, तोसी बधू रतिकोविद कोहै॥

शब्दार्थ—केतिक-कितने ही। कौतिक-खेल। सिगरी गति-सब कलाएँ। तोसी-तेरे समान। रति कोविद-रति-चतुर। को है-कौन है।

३—आक्रान्तनायका

सवैया

हार बिहार में छूटि परै अरु, भूषन छूटि परे हैं समूलनि।
जोरि सबै पहिरायौ सम्हारि के, अङ्ग सम्हारि सुधारि दुकूलनि॥
सीतल सेज बिछाइ कै बालम, बालमृनालनि के दल मूलनि।
वैसीय बैनी बनाइ लला, गहि गूंधौ गुपाल गुलाब के फूलनि॥

शब्दार्थ—दुकूलनि-कपड़े वस्त्र। गहि-पकड़ कर।

४—सविभ्रमा

कवित्त

हँसत हँसत आई भावते के मन भाई,
देवकवि छवि छाई बर सोने से सरीर सों।
तैसी चन्द्रमुखी के वा चन्द्रमुख चन्द्रमा सो,
ह्वै है परे चाँदिनी औ चाँदिनी से चीरसों ॥
सोंधे की सुबासु अङ्ग बासु वो उसास बासु,
आस पास बासी रही सुखद समीर सों।
कुंजत सी गुजत गँभीर गीर तीर-तीर रहो,
रंग भवन भरी भौंरन की भीर सों ॥

शब्दार्थ—भावते-प्यारे, पति। समीर-हवा। गँभीर-गहरा। भौंरन-भौंरे। भीर-झुंड।

प्रौढ़ा सुरत

सवैया

साजि सिंगारनि सेज चढ़ी, तबहीं तें सखी सब सुद्धि भुलानी।
कंचुकी के बँद छूटत जानें न, नीवी की डोरि न टूटत जानी ॥
ऐसी बिमोहित ह्वै गई है जनु, जानति रातिक मैं रतिमानी।
साजी कबै रसना रस केलि में, बाजी कबै बिछुवान की बानी ॥

शब्दार्थ—सुद्धि भुलानी-सुधि बुधि भूल गई। कंचुकी अँगिया। नीवी-फुंफुंदी (लंहगे की)। कबै-कब। बिछुवान-बिछुए।

प्रौढ़ा सुरतान्त

कवित्त

आगे धरि अधर पयोधर सधर जानि,
जोरावर जंघन सघन लरै लचिके ।
बार बार देति बकसीस जैतिवारनि को,
बारनि को बाँधे जौ पिछार से सुबचिके ॥
उरुन दुकूल दै उरोजनि को फूलमनि,
ओठनि उठाए पान खाइ खाइ पचिके ।
देव कहे आजु मानो जीतो है अनङ्गरिपु,
पीके सग संग रस सुरत रङ्ग रचिके ॥

शब्दार्थ—अधर-ओष्ठ । पयोधर-कुच । जोरावर-सुदृढ़ । जंघन-जाँघें । जैतिवारनि-जीतनेवाले । बारनि-बाल । उरुन-जंघाएं । दुकूल-वस्त्र । अनङ्ग-कामदेव । रिपु-बैरी ।

मध्या प्रौढ़ा मान

दोहा

मध्या औ प्रौढ़ा दुओ, होंहि बिविध करि मानु ।
धीरा अरु मध्यम कह्यो, औरु अधीरा जानु ॥
वक्र युक्ति पति सो कहै, मध्या धीरा नारि ।
मध्या देहि उराहनो, वचन अधीरा गारि ॥

भावार्थ—मध्या और प्रौढ़ा इन दोनो के धीरा, मध्यमा और अधीरा ये तीन तीन भेद और होते हैं । व्यंग वचन कहने वाली मध्या धीरा, उलाहना देनेवाली मध्यमा और क्रोधपूर्वक भर्त्सना करने वाली अधीरा होती है ।

१—मध्या धीरा

सवैया

भारेहौ भूरि भराई भरे अरु, भांति सभांतिनु के मनभाये।
भाग बड़े वही भामतो के जिहि, भामते लै रंगभौन बसाये॥
भेषु भलोई भली बिधि सो करि, भूलि परे किधौं काहू भुलाये।
लाल भले हौ भलो सुखदीनो, भली भइ आजु भले बनि आये॥

शब्दार्थ—मनभाये-अच्छे लगे। भेषु-वेष। भले-अच्छे।

२—मध्या मध्यमा

सवैया

आजु कछू अँसुवानि भरे द्दग, देखिय सो न कहौ जिय जोहै।
चूक परी हमही तें कछू किधौं, जापर कोप कियो वह कोहै॥
चूक अचूक हमारी यहै कहो, को नहि जोबन को मद मोहै।
स्याम सुजान सुजाने बलाइ ल्यों, जोई करौ सु तुम्हें सब सोहै॥

शब्दार्थ—अँसुवानि-आँसुओ से। द्दग-आँखें। चूक-भूल। जापर-जिसपर। कोप-क्रोध। बलाइ ल्यो-बलैया लूं। जोई सोहै-तुम जो करो, वही ठीक है।

३—मध्या अधीरा

सवैया

भोरही भौन मैं भावतो आवत, प्यारी चितै कै इतै द्दग फेरे।
बाल बिलोकि कै लाल कह्यो कहु, काहे ते लाल विलोचन तेरे॥

बोलि उठी सुनि के तिय बोल, सुदेव कहै अति कोप करेरे।
काहू के रग रंगे दृग रावरे, रावरे रग रगे दृग मेरे॥

शब्दार्थ---भौन-घर, गृह। भावतो-पति, प्रेमी। इतै-इधर। दृग-आँखें। बाल-स्त्री। बिलोकि-देखकर। कोप-क्रोध। करेरे-बहुत। काहू के-किसी-के। रावरे-आपके। दृग-आँखे।

प्रौढ़ा मान

दोहा

उदासीन अति कोप रति, पति सों प्रौढ़ाधीर।
तजैं मध्य उदास ह्वै, ताहि न करै अधीर॥

शब्दार्थ---सरल है।

भावार्थ---सरल है।

१—प्रौढ़ा धीरा

सवैया

क्रोध कियो मनभावन सों सु, छिपाइ लियो इकबेनी के बोलनि।
राख्यो हिये अति ईर्षा बाँधि, खुल्यो उन घूंघट की पट खोलनि॥
ज्यो चितई इत आली की ओर, सुगांठि छुटी भरि भौंह बिलोलनि।
लोइन कोइन ह्वै उभक्यो, सु बताय दियो कवि कोप कपोलनि॥

भावार्थ---अति-बहुत। हिए-हृदय में। आली-सखी। लोइन-आंखें। कोइन-आँखों के कोए। कोप-क्रोध।

२–प्रौढ़ा मध्यमा

सवैया

सूधिये बात सुनों समुझो अरु, सूधी कहा करि सूधौ सबै संग।
ऐसी न काहू के चातुरता चित, जो चितवै 'कविदेव' दई अग ॥
वाही के गैये बलाइ ल्यो बालम, हौ तुम्हे नीको बतावति हौ ढंग।
प्यारौ लगे यह जाको सनेह, महाउर बीच महाउर को रंग ॥

शब्दार्थ—सूधी-सीधी, सरल।

३–प्रौढ़ा अधीरा

सवैया

पीक भरीं पलकैं झलकैं अलकैं, जुगड़ी सुलसैं भुज खोज की।
छाइ रही छवि छैल की छाती मै, छाप बनी कहूं ओछे उरोज की ॥
ताही चितौति बड़ी अँखियान तें, तीकी चितौनि चली अति ओज की।
बालम ओर बिलोकि के बाल, दई मनों खैंचि सनाल सरोज की ॥

शब्दार्थ—पीक-पान की पीक। छाप बनी-छाप लग गयी। ओछे-छोटे।

दोहा

मध्या प्रौढ़ा दोय विधि, ज्येष्ठा और कनिष्ट।
अधिक नून पिय प्यार करि, बरनत ज्ञान गरिष्ट ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—मध्या प्रौढ़ा के दो भेद होते हैं। ज्येष्ठा और कनिष्ठा। जिसको पति अधिक प्यार करे वह ज्येष्ठा और जिसे कम प्यार करे वह कनिष्ठा कहलाती है।

सवैया

खेलत फाग खिलार खरे, अनुराग भरे बड़ भाग कन्हाई।
एक ही भौन में दोउन देखि के, देव करी इक चातुरताई॥
लाल गुलाल सो लीनी मुठी भरि, बाल के भाल की ओर चलाई।
वा दृग मूंदि उतै चितयौ, इन भेटो इतै वृषभान की जाई॥

शब्दार्थ—खिलार-खेलनेवाले। भौन-भवन, घर। चातुरताई-चालाकी। उतै-उधर। भेंटी आलिंगन किया। वृषभान की जाई-राधा।

परकीया वर्णन

दोहा

जाकी गति उपपति सदा, पति सों रति गति नांहि।
सो परकीया जानिये, ढकी प्रीति जग मांहि॥
ताहि परौढ़ा कन्यका, द्वै विधि कहत प्रवीन।
गुपित चेष्टा परौढ़ा, कन्या पितु आधीन॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जो स्त्री अपने पति से किसी कारण वश प्रेम न कर अन्य पुरुष से गुप्त प्रेम करती है, उसे परकीया कहते हैं। इसके दो भेद होते है। प्रौढ़ा और कन्यका।

१—प्रौढ़ा

सवैया

मोहन मोहि न जान्यो यहाँ बलि, बाल को बोल सुनायो नजीकतें।
चौंकि परो चहुँओर चितै, गुरु लोगन देखि उठी नहिं ठीकतें॥

देखियो बात चलै न कहूँ, यह छूटिहैगी कुल लोक की लीकते।
घूमति है घर ही मै घनी, यह घायल लों घर घाल घरीकते॥

शब्दार्थ—नजीकतें पास से। चहुँओर-चारो ओर।

दोहा

तामै गुप्ता विदग्धा, लक्षितारु कुलटानु।
अन्तरभूत बखानिए, अनुसयना मुदितानु॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—प्रौढा परकीया के गुप्ता, विदग्धा, लक्षिता, कुलटा और मुदिता ये पाँच भेद और होते हैं।

क—गुप्ता

सवैया

झँझरी के झरोखनि ह्वै के झकोरति, रावटीहू मैं न जाति सही।
'कविदेव' तहाँ कहौ कैसिक सोइये, जी की विथा सु परै न कही॥
अधरानु को कोरति, अंग मरोरति, हारनि तोरति जोर यही।
घर बाहिर जाहिर भीतर हूँ, बन बागनि चीर बयारि बही॥

शब्दार्थ—झँझरी-खिड़की। हारनि-हारो को। बयारि-हवा।

दोहा

कहत विदग्धा भाँति द्वै, सकल सुमति वर लोइ।
वाकविदग्धा वहुरि अरु, क्रियाविदग्धा होइ॥

शब्दार्थ—लोइ-लोग।

भावार्थ—विदग्धा के पुनः दो भेद और होते हैं। वाक्विदग्धा और क्रिया विदग्धा।

(ख) विदग्धा (वाक)

सवैया

ब्याह की बोधि बुलाये गये सब, लोगनु लागि गये दिन दूने।
'देव' तुम्हारी सौ बैठी अकेलिये, हौ अपने उर आनति ऊने॥
क्यो तिन्हे बासर बीतत बीर, बनाये है जे विधि बन्धु बिहूने।
कौन घरी घर के घर आवे, लगैं घर घोर घरीक के सूने॥

शब्दार्थ—अकेलिये-अकेलीही। हौ-मैं। बासर-दिन। बन्धुबिहूने-बन्धुरहित। सूने-शून्य।

विदग्धा (क्रिया)

सवैया

मुसुरी सुनि देखन दौरि चली, जमुना जल के मिस बेग तवै।
'कविदेव' सखी के सकोचन सो, करि ऊठ सु औसर को बितवै॥
वृषभान कुमारि मुरारि की ओर, बिलोचन कोरनि सों चितवै।
चलिवे को घरै न करै मन नैकु, घड़ै फिर फेरि भरै रितवै॥

शब्दार्थ—जमुना जल के मिस-जमुना से पानी लाने के बहाने। करि ऊठ-बहाना करके।। बितवै-बिताती है। बिलोचन कोरनि-आँखों की कोर। चितवै-देखती है। घड़े..... रितवै-घड़े को बार बार भरती और खाली करती है।

ग—लक्षिता

सवैया

जौ लगि जोबन है जग मै, नहिं तौ लगि जीघ सुभाव टरैगो।
'देव' यही जिय जानिये जू, जन जो करि आयो है सोई करैगो॥
कोटि करौ काई प्रान हरे बिन, हारिल की लकडी न हरैगो।
भूलेहूँ भौर चलावै न चित्त, जो चम्पक चौगुने फूल फरैगो॥

शब्दार्थ—जौ लगि-जब तक। जगमै-संसार मे। सुभाव... टरैगो-स्वभाव नही बदल सकता। जो ...करैगो-जो करता आया है वही करेगा। कोटि करो-चाहे करोडो उपाय करो। भूलेहू.. फरैगो-चाहे चम्पक चौगुना फूले परन्तु भौंरा उसपर अपना मन नही चलावेगा।

घ—कुलटा

सवैया

छोरि दुकुल सकोरि कें अंग, मरोरि के बारनि हारिन छूटे।
मींड़ि नितंबहि पीड़ि पयोधर, दाबत दन्त रदच्छद फूटे॥
ज्यो कररी करि केलि करै, निकरै न कहूँ कुल सों किनि टूटे।
तौ लगि जाने कहा जुवती सुख, जो न जुवा दिन जामिन जूटे॥

शब्दार्थ—जुवा-युवा। जामिन-राति।

ङ—अनुसयना

दोहा

थानि हानि तिहि हानि भय, तहँ प्रिय गम अनुमान।
अनुसयना इहि विधि त्रिविध, बरनत सकल सुजान॥

शब्दार्थ और भावार्थ—दोनो सरल हैं।

सवैया

सब ऊजर भौन बसे तब ते, तरुनी तन तापि रही भरिकें।
सुनि चेत अचेत सी ह्वै चित सोचति, जैहै निकुंज घने झरिके॥
ततकालहिं 'देव' गुपाल गये, बनते बनमाल नई धरिके।
जदुनाथहिं जोवत ज्वाल भई, जुवती बिरहज्वर सों जरिके॥

शब्दार्थ—उजार-उजड़े हुए, सूने। भौन-घर। तरुनी-युवतियाँ। जोवत-देखते ही।

च—मुदिता

सवैया

सांझ को कारी घटा घिरि आई, महा झरसों बरसे भरि सावन।
धौरि हूँ कोरिये आइगई सु, रम्हाइ के धाइ के लागी चुखावन॥
माइ कह्यो कोई जाइ कहै किनि, मोहू सो आज कह्यो उन आवन।
यो सुनि आनन्द ते उठि धाई, अकेलिये बाल गुपाल, बुलावन॥

शब्दार्थ—महाझरसों-मूसलाधार, जोर से। अकेलिये-अकेली।

२—कन्यका

सवैया

भूमि अटा उझकै कहूँ देव, सु दूरि तें दौरि झरोखनि भूली।
हांस हुलास बिलास भरी मृग, खञ्जनि मीन प्रकासनि तूली॥
चारिहू ओर चलै चपलै, जु मनोज की तेगै सरोज सी फूली।
राधिका की अँखियां लखिकै, सखियां सब संग की कौतिक भूली॥

शब्दार्थ—झरोखनि खिड़कियां। मीन मछली। मनोज-कामदेव। तेगैं-तलवारें, किरचैं।

दोहा

चित्र स्वप्न परतच्छकरि, दरसन त्रिविधि बखानु।
देस काल भङ्गीनु करि, श्रवन तीनि विधि जानु॥

शब्दार्थ—परतच्छ-प्रत्यक्ष।

भावार्थ—सरल है।

क—दरसन

सवैया

चारु चरित्र विचित्र बनाइ कै, चित्र मै जे निरखे अबरेखे।
चोरि लियो जिन चित्त चितौतही, त्योही बने सपने महिदेखे॥
आजु ते नन्द के मन्दिर तें, निकसे घन सुन्दर रुप बिसेखे।
होंहू अटारी भटू चढ़ी भागतें, मै हरजू भरिजू हगदेखे॥

शब्दार्थ—घन सुन्दररूप-बादल के समानरूपवाले। मैं . देखे-मैने हरि को मनभर के आँखों से खूब देखा।

ख—श्रवन

सवैया

ऊँचे अटा सजि सेज सजी तो, कहा हरि जो न जहाँ निसजागे।
फूलि रहे बन कुञ्ज कहा तो, बसन्त मैं जौ न लला अनुरागे॥
देव सबै गहिनें पहिरे चुनि, चाइ सो चारु बनाये हैं बागे।
सुन्दरि सुन्दर लागि है तौ, कहिहै जब सुन्दर स्याम सभागे॥

शब्दार्थ—निस-रात। चाइ सो-चाव से।

वैस्या

दोहा

रीझ नहीं गुन रूप की, सामान्या के जीय।
जौही लों धन देइ जो, तो लौं ताकी तीय॥

शब्दार्थ—जीय-मन, हृदय। तीय-स्त्री।

भावार्थ—रूप अथवा गुण पर मोहित न होकर केवल धन पर अपने को निछावर कर देनेवाली स्त्री वेश्या कहलाती है। मनुष्य जब तक उसे धन देता रहे तब तक वह उसकी प्रेमिका बनी रहती है।

कवित्त

सोहति किनारी लाल बादला की सारी,
गोरे अङ्गनि उज्यारी कसी कंचुकी बनाइ कें।
जेवर जड़ाऊ जगमगत जवाहिर के,
जूती जोती जावक की जोती पग पाइ कें॥
भौंहनि भ्रमाइ भूरि भाइ करि नैनन सों,
सैननि सौं वैननि कहति मुसक्याइ कें।
चीकनी चितौनि चारु चेरे करि चतुरनि,
चितु लियो चाहै, चितु लियो है चुराइ के॥

शब्दार्थ—जेवर-गहने, आभूषण। जड़ाऊ-जड़े हुए, रत्नजटित जावक-महावर। चेरे-गुलाम। अधीन-वश में।

दोहा

पररतिदु:खित प्रेम अरु, रूप गर्व्विता जानु।
मानवती अरु चारि विधि, स्वीयादिकनु बखानु॥

शब्दार्थ—अरु-और। चारि विधि-चार तरह की।

भावार्थ—स्वकीयादि नायिकाओं के चार भेद और होते हैं। (१) पररति दुःखिता (२) प्रेमगर्विता (३) रूपगर्विता और (४) मानवती या मानिनी।

(१) पर रति दुःखिता

उदाहरण

सवैया

सांझही स्याम को लैन गई, सुबसी बन मैं सब जामिनि जाइ कै।
सीरी बयारि छिदे अधरा, उरझे उरझाखर झार मझाइ के॥
तेरी सौं को करिहै करतूति, हुती करिबें सो करी तैं बनाइ के।
भोरहीं आई भटू इत मो, दुखदाइनि काज इतौ दुख पाइ के॥

शब्दार्थ—जामिनि-रात, रात्रि। सीरी-ठंडी। बयारि-हवा। छिदे-छिद जाँय। उरझे-उलझे, उलझ जाय।

(२) प्रेमगर्विता

उदाहरण

सवैया

ये बिन गारी दये गुरुलोगन, टेरेईं सैन न नैनन टेरेईं।
देव कहै दुरि द्वार लौं जात, कितौ करि हारी तऊ हरि हेरेईं॥
पाय यही घर बैठि रहौं, जु तौ वे मिलि खेलन आवत मेरेईं।
घेरु करैं घर बाहिर के अरु, ये सुफिरैं घर बाहिर घेरेईं॥

शब्दार्थ—सैन=इशारा, संकेत। दुरि=छिपकर। कितौ=कितनाही घेरु-निंदा, चवाव।

३—रूपगर्विता

उदाहरण

सवैया

हरिजू सों हहा हटकोरी भटू, जनि बात कहे जिय सोचनि की ।
कहि पंकजनैनो बुलाइ के मोहि, दई सुखमा सुख मोचनि की ॥
उनहीं सों उराहनो देऊ त तौ, उमगै उरराशि सकोचनि की ।
बलिवारों री बीर जु बारिज कौ, जु बराबरि बीर बिलोचनि की ॥

शब्दार्थ—हटको-बरजो, मना करो । पंकजनैनी-कमल जैसे नेत्र वाली । मोहि-मुझे । उराहनो-उलाहना । सकोचनि-संकोच । बारिज-कमल । बिलोचनि-आँखे ।

दोहा

हैं बियोग सिंगार मै, बरन्यो मान प्रकार ।
ताही के मतमानिनी कविवर करत विचार ॥

शब्दार्थ—बरन्यो-वर्णन किया है ।

भावार्थ—मान का वर्णन वियोग शृंगार में हो चुका है, अतः उसी के अनुसार मानिनी का वर्णन समझना चाहिए ।

अवस्था भेद

दोहा

स्वाधीना उतकण्ठिता, बासकसज्जा बाम ।
कलहन्तरिता खण्डिता, विप्रलब्धका बाम ॥

तातें प्रोषितप्रेयसी, अभिसारिका बखान।
आठ अवस्थाभेद ये, एक एक प्रति जान॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—स्वाधीना, उत्कण्ठिता, बासकसज्जा, कलहन्तरिता, खण्डिता, विप्रलब्धा, प्रोषितप्रेयसी और अभिसारिका अवस्था भेद से ये आठ प्रकार, नायिकाओं के और होते हैं।

१—स्वाधीना

दोहा

बँध्यौ रहै गुन रूप सों, जाको पति आधीन।
स्वाधीना सो नाइका, बरनत परम प्रवीन॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—रूप और गुणों के कारण जिसका पति सर्वदा उसके अधीन रहे, उस नायिका को स्वाधीनपतिका नायिका कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

मालिनि ह्वै हरि माल गुहैं, चितवे मुख चेरी भये चित चाइनि।
पान खवावै खवासिन ह्वै कै, सवासिन ह्वै सिखवैं सब भाइनि॥
बैंदी दै देव दिखाइ कै दर्पन, जावक देत भये अब नाइनि।
प्रेमपगे पिय पीतपटी पर, प्यारी के पोंछिय मारी से पाइनि॥

शब्दार्थ—मालिनि ह्वै-मालिनि बनकर। माल गुहैं-माला गूंथते है। खवासिन-पान खिलानेवाली। बैंदी दे-मस्तक पर बिंदी लगाकर। दिखाइकें दर्पन-दर्पण दिखलाकर। जावक-महावर। पाइनि-पैर।

२—उत्कंठिता

दोहा

पति कों गृह आए बिना, सोच बढ़ै जिय जाहि।
हेतु बिचारै चित्त मैं, उतकण्ठा कहु ताहि॥

शब्दार्थ—सोच बढ़ै-चिन्ता बढ़ै। जिय-हृदय में। जाहि-जिसके।

भावार्थ—पति के घर न आने पर जिसके हृदय में चिन्ता बढ़े और जो उसके न आने का कारण सोचती रहे, उसे उत्कण्ठिता नायिका कहते है।

उदाहरण पहला

सवैया

पिया जा हितप्यारिह के पदपकञ्ज, पूजिबे कों पकरौ पन सो।
सुबिसारि दियो तिहि मेहीं निरादरे, घोर पतिग्रह कौ धन सो॥
इन पायनही विष बीरी भई, अरु सीरी बयारि बरै तन सो।
कहु क्यों न अगारु सो हारु लगै, हिय मै घनसार घन्यो घन सो॥

शब्दार्थ—अंगारु सो-अंगारे के समान। हारु-हार। घनसार-कपूर। घन सो-हथौड़े की चोट के समान।

उदाहरण दूसरा

सवैया

मारग हेरति हौं कब की, कहौ काहे ते आये नहीं अवहूँ हरि।
आवत हैं किधौ ऐहैं अबै, कन्दिदेव कै राखे है कोहू कछू करि॥

मोह तें न्यारी कै प्यारी गुपाल के, हाथ बिचारिये री चित मै धरि।
जो रमनी रमनीय लगै, बसि बाके रहे सजनी रजनी भरि ॥

शब्दार्थ—मारग-मार्ग, रास्ता। हेरति हौ-देख रही हूं। किधौं-अथवा, या। ऐहैं-आवेंगे। कै... करि-अथवा किसी ने उन्हें, मोहित कर अपने यहाँ रख लिया है। रमनी-रमणी, स्त्री। रमनीय लगै-अच्छी लगे। बसि रहे-बास करें, रहै। बाके उसके। सजनी-सखी। रजनी भर-रात भर।

३—बासकसज्जा

दोहा

जाने पिय को आइबो, निहचै चारु बिचारि।
मग देखै भूषन सजै, बासकसज्जा नारि ॥

शब्दार्थ—आइबो-आना। निहचै-निश्चय। मगदेखै-बाट देखे, इन्तज़ार करे, प्रतीक्षा करे। भूषन सजै-गहने पहने।

भावार्थ—अपने पति का आना निश्चित समझकर जो नायिका गहनों आदि से सजकर, अपने पति की प्रतीक्षा करती है, उसे बासकसज्जा कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

चोरि घनी घनसारु सों केसरि, चंदन गारि कें अंग सम्हारै।
मोतिन माँग के बार गुहै, अरु हार गुहै बलि बाल संवारै ॥
देव कहैं सब भेष बनाइ कें, आइ कें फूलनि सेज सुधारै।
बैठि कहा उठि देखौ भटू, हरि आवत हैं घर आजु हमारै ॥

शब्दार्थ—चदन गारि-चन्दन घिसकर। अंग सम्हारै-शरीर को सजाती है। फूलनि सेज सुधारै-फूलों की सेज सजाती है।

४—कलहन्तरिता

दोहा

पहिले पति अपमान करि, फिरि पीछे पछिताइ।
कलहन्तरिता नाइका, ताहि कहैं कविराइ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—पहले पति का अपमान करके फिर उसके लिये मन में पछतानेवाली नयिका को कलहन्तरिता नायिका कहते है।

५—खण्डिता

दोहा

जाके भवन न जाइ पति, रहै कहूँ रति मानि।
खण्डितबारि सुखण्डिता, कबिबरकहतखानि॥

शब्दार्थ—जिस स्त्री का पति किसी दूसरी स्त्री के साथ प्रेमकर वहीं रहे, और घर न आवे उस स्त्री को खण्डिता नायिका कहते है।

उदाहरण

सवैया

सेज सुधारि सँवारि सबै अँग, आँगन के मग मैं पग रोपै।
चन्द की ओर चितौति गई निसि, नाहकी चाह चढ़ी चित चोपै॥
प्रातही प्रीतम आये कहूँ, बसि देव कहीं न परै छबि मोपै।
प्यारी के पीक भरे अधरा ते, उठी मनो दम्पत कोप की कोपैं॥

शब्दार्थ—चन्द.....निसि- चन्द्रमा की ओर देखते देखते रात बीत गयी। नाह की चाह-पति को देखने की अभिलाषा। प्रातही-प्रातः काल ही। कहूं बसि-(रात भर) कहीं रहकर। कम्पत-कांपती हुई। कोप की-क्रोध की।

९—विप्रलब्धा

दोहा

जाकों पति की दूतिका, लै पहुचै रतिधाम।
तहँ पिय मिलै न जाहि सो, विप्रलब्धिकाबाम॥

भावार्थ—जिसके प्रेमी की दूती उसे सकेत स्थल पर ले जाय और वहां जाने पर प्रेमी न मिले उसे विप्रलब्धानायिका कहते है।

उदाहरण

सवैया

दूती लिवाइ चली तहँ बालको, जा बन बालम सों मिलि खेल्यो।
भेषु बनाइकें भूषन साजि, सुगन्धित मोर कों साजु सकेल्यो॥
आन दही तें यहाँ तें गई तिय, देखि उहाँ रति कुंज अकेल्यो।
बीरी बिगारि सखीन सों रारि कै, हार उतारि उतै गहि मेल्यो

शब्दार्थ—लिवाइ-लेजाकर। बालम-पति। बिगारि-बिगाड़ कर। सखीन सों-सखियों से। रारिकै-झगड़ा करके। हार उतारि-हार को उतार कर।

७—प्रोषितप्रेयसी

दोहा

सो तिय प्रोषितप्रेयसी, जाकौ पति परदेस।
काहू कारन ते गयो, दै कें अवधि प्रबेस॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जिसका पति आने की अवधि निश्चित करके परदेश चला गया हो उसे प्रोषितप्रेयसी नायिका कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

होरी हरें हरे आइ गई, हरि आए न हेरि हिये हहरैगी।
बानि बनी बनबागनि की, कविदेव बिलोकि वियोग बरैगी॥
नाउँ न लेऊ बसन्त कौ री, सुनि हाय कहूँ पछिताय मरैगी।
कैसे कि जीहै किसोरी जो केसरि, नीर सों बीर अबीर भरैगी॥

शब्दार्थ—हेरि-देखकर। हहरैगी-दुःखी होगी। बियोग बरैगी-बिरह की अग्नि में जलेगी-अर्थात् विरह से दुखीहोगी। नाउँन लेउ-नाम मत लो।

८—अभिसारिका

दोहा

जो घेरी मद मदन करि, आपहि पति पर जाइ।
वेष अङ्ग अभिसारिका, सजै समान बनाइ॥

शब्दार्थ—घेरी-सताई जाकर। मदन करि-कामदेव से।

भावार्थ—जो स्त्री काम वश होकर, स्वंय भूषण वस्त्रादि से सजकर पति के पास जाती है, वह अभिसारिका नायिका कहलाती है।

उदाहरण

कवित्त

घटा घहराति बिज्जुछटा छहराति आधी,
राति हहराति कोटि कीट रवि रुञ्ज लों।
हूकत उलूक बन कूकत फिरत फेरु,
भूकत जु भैरो भूत गावे अलिगुंज लों॥
झिल्ली मुख मूंदि तहाँ बीछीगन गूंदि विष,
व्यालनि कों रूदि के मृनालनि के पुञ्ज लों।
जाई वृषभान की कन्हाई के सनेहबस।
आई उठि ऐसे मैं अकेली केलिकुञ्ज लों॥

शब्दार्थ—घटाघहराति-बादल गरजते हैं। बिज्जुछटा छहराति-बिजली चमकती है। उलूक-उल्लू। अलिगुञ्ज-भौरोंकीगूंज। भिल्ली-कीड़ा विशेष। व्यालनि-साँप। जाईबृषभान की बृषमान की पुत्री, राधा। कन्हाई-श्रीकृष्ण।

आठ अवस्थाएं

दोहा

स्वीया तेरह भेद करि, द्वै जु भेद परनारि।
एक जु बेस्या ये सबै, सोरह कहो विचारि॥

एक एक प्रति सोरहीं, आठ अवस्था जानु।
जोरि सबै ये एक सौ, अट्ठाईस बखानु॥
उत्तम, मध्यम, अधम करि, ये सब त्रिविधि बिचार।
चोरासी अरु तीनि सै, जोरें सब बिस्तार॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—स्वकीया के तेरह, परकीया के दो और एक गणिका, इस तरह कुल १६ तथा सोलहो के आठ आठ भेद मिला देने पर १२८ भेद हुए। फिर इन १२८ भेदों की उत्तम, मध्यम और अधम ये तीन-तीन अवस्थाएँ और होती हैं। इस तरह सब मिलाकर ३८४ भेद नायिकाओं के हुए।

उत्तमा

दोहा

सापराध पति देखि कै, करै जु मन मैं मानु।
दोष जनावै सहजहीं, सो उत्तमा बखानु॥

शब्दार्थ—सापराध-अपराधी।

भावार्थ—पति को अपराधी पाकर जो नायिका उसके दोषों को प्रकट कर मान करती है, उसे उत्तमा कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

केसरि सों उबटो सब अंग, बड़े मुक्तानि सों माँग सम्हारी।
चारु -सुचम्पकहार हिये उर, ओछे उरोजन की छवि न्यारी॥

हाथ सों हाथ गहें कविदेव, सुसाथ तिहारेई नाथ निहारी।
हाहा हमारी सौं साँची कहौं, वह थी छोहरी छीवरवारी॥

शब्दार्थ—मुक्तानि-मोती। छोहरी-बालिका।

मध्यमा

दोहा

जाहि जानि जिय मानिनी, कन्त करै मनुहारि।
पाइ परें कोपहि तजै, कहौ मध्यमा नारि॥

शब्दार्थ—कन्त-पति। मनुहारि-ख़ुशामद, विनती।

भावार्थ—जिस स्त्री को रूठा हुआ (मानिनी) समझ कर, उसका पति उसकी ख़ुशामद करे और पति के ख़ुशामद करने पर अपना मान त्याग दे उसे मध्यमा कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

नेह सों नीचे निहारि निहोरत, नाहीं कै नाह की ओर चितैवो।
पीठि दै मोरि मरोरि कैं डीठि, सकोरि कैं सौंह सौ भौंह चढ़ैवो॥
प्रीतम सों कविदेव रिसाइ के, पाइ लगाइ हिये सों लगैवो।
तेरौ री मोहि महासुख देत, सुधारसहू तैं रसीलौ रिसैवो॥

शब्दार्थ—नेह-प्रेम। निहोरत-ख़ुशामद करते। मरोरिकैं डीठि-दृष्टि फेर कर। भौंह चढ़ैवो-भौंहों का चढ़ाना-टेढ़ा करना। रिसाइके-क्रोधित होकर। सुधारस......रिसैवो-तेरा रूठना अमृत से भी बढ़कर अच्छा लगता है।

अधमा

दोहा

बिनु दोषहि रूठै तजै, बिना मनाये मानु।
जाको रिस रस हेतु बिन, अधमा ताहि बखानु॥

शब्दार्थ—रूठै-क्रोधित हो।

भावार्थ—जो नायिका बिना किसी दोष के अपने पति से रूठे और बिना किसी कारण के क्रोध करे उसे अधमा नायिका कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

आजु रिसौंही न सोहीं चितौति, कितौ न सखी प्रति प्रीति बढ़ावै।
पीठि दै बैठी अमैठो सो ठोठि कै, कोइन कोप की ओप कढ़ावै॥
नाह सो नेह कौ तातौ न नैक, ज ऊपर पाइ प्रतीति बढ़ावै।
तीर से तानि तिरीछी कटाच्छ, कमान सी भामिन भौहै चढ़ावै॥

शब्दार्थ—सोही-सामने। कोइन-आँख के कोए। ओप-आभा। तीर से-बाणों के सदृश। कमानसी-धनुष के समान।

सखी-भेद

दोहा

बहु विनोद भूषन रचै, करै जु चित्त प्रसन्न।
प्रियहि मिलावै उपदिसै, रहै सदा आसन्न॥
पति कों देइ उराहनो, करै बिरह अस्वास।
ऐसी सखी बखानिये, जाके जी बिस्वास॥

शब्दार्थ—करै प्रसन्न-जो मन को प्रसन्न करती रहे। प्रियहि मिलावे-प्रेमी से मुलाकात करवावे। उपदिसै-उपदेश दे। रहै... . आसन्न-हर समय निकट रहे। उराहनो-उलाहना। जाके......विस्वास-जिस पर अत्यन्त विश्वास हो।

भावार्थ—जो स्त्री सदा पास मे रहे, भूषण आदि सजाने में सहायता दे, पति से मुलाकात करवावे, हर समय चित्त के प्रसन्न करने की चेष्टा करे, समय पडने पर उचित उपदेश देकर शान्ति करे, नायिका की ओर से पति को उलाहना दे, और जिस पर अत्यन्त विश्वास हो उसे सखी कहते है।

उदाहरण

सवैया

बालबधू के बिनोद बढ़ाइ, भली बिधि भूषन भेष बनावै।
चाइ सो चित्त प्रसन्न करै, रसरंग मैं संग सयानि सिखावै॥
उराहनो दोउन को मन राखि, कहे कवि देव दुहून मिलावै।
नाह सो नेह ततौ निबहै जब, भाग तें ऐसी सखी करि पावै॥

शब्दार्थ—चाइसों-प्रेम पूर्वक। रसरंग-काम क्रीडा।

दूती

दोहा

धाइ, सखी, दासी नटी, ग्वालि सिलपनी नारि।
मालिनि नाइन बालिका, बिधवा बिधू बिचारि॥
सन्यासिन भिक्षुक बधू, सम्बन्धी की बाम।
एती होती दूतिका, दूतप्पन अभिराम॥

शब्दार्थ—धाइ-धाय। सिलपनी-दस्तकारिन।

भावार्थ—धाय, सखी, दासी, नटी, ग्वालिनी, दस्तकारिन, मालिन, नाइन, कन्या, विधवा, संन्यासिन, भिखारिन, और अपने किसी संबन्धी की स्त्री, ये स्त्रिया दूतपने (प्रेमी से प्रेमिका को मिलाने तथा संदेश आदि कहने) का कार्य अच्छा कर सकती है।

उदाहरण

कवित्त

देव जू की दूती वृषभानजू के भौंन जाइ,
राधिका बुलाइ बहु बातनि खिलाइ के।
हास रस सानी दुरि आङ्गन ते द्वार आनी।
हित को कहानी कहि, हिय सो हिलाइ कें॥
हरें हँसि कह्यो कैसे, सहौधों पर तुम्हे,
है जैहै नदनन्दु तौ बियोग सी बिलाइ कें।
बिरह बढ़ाइ, प्रेम पद्धति पढ़ाइ चित्त,
चोपहि चढ़ाइ दीनी मोहने मिला कें॥

शब्दार्थ—भौन-घर। सानी-पगी हुई। हिलाइ कें-मेल करके।

चतुर्थ विलास
समाप्त

पञ्चम विलास

[अलङ्कार]

पञ्चम विलास

अलंकार

देवजी ने निम्न अलंकार मुख्य माने है और उन्हीं का भाव-विलास में वर्णन किया है। शेष अलंकारों के सम्बन्ध में उनका मत है कि वे इन्हीं के भेद और उपभेद है।

१—स्वभावोक्ति
२—उपमा
३—उपमेयोपमा
४—संशय
५—अनन्वय
६—रूपक
७—अतिशयोक्ति
८—समासोक्ति
९—वक्रोक्ति
१०—परयायोक्ति

११—सहोक्ति
१२—विशेषोक्ति
१३—व्यतिरेक
१४—विभावना
१५—उत्प्रेक्षा
१६—आक्षेप
१७—दीपक
१८—उदात्त
९१—अपन्हुति
२०—श्लेष

२१—अर्थान्तरन्यास
२२—व्याजस्तुति
२३—अपस्तुतिस्तुतिया प्रशंसा
२४—आवृत्ति दीपक
२५—निर्दशना
२६—विरोध
२७—परिवृत्ति
२८—हेतु
२९—रसवत
३०—उर्जस्वल

१३—सूक्ष्म
३२—प्रेम
३३—क्रम
३४—समाहित
३५—तुल्ययोगिता
३६—लेस
३७—भाविक
३८—संकीर्ण
३९—आशिष

अलंकार

कवित्त

प्रथम स्वभावउक्ति उपमोपमेय संस,
अनन्वय अरु रूपक बखानियें।
अतिसय समास बक्रयुक्ति पर यायउक्ति।
सहित सहोक्ति सविशेष उक्ति जानियें॥
तातें व्यतिरेक हैं विभाव उतप्रेक्षाक्षेप,
दीपक उदात हैं अपन्हुति आनियें।
अरु असलेखा न्यासअर्थान्तर व्याजस्तुति।
अप्रस्तुत अस्तुति सु अलङ्कार मानियें॥
आवृत निर्दसन बिरोध परिवृत्ति हेतु,
रसवत उरज ससूछम बताइये।
प्रियक्रम समाहित तुल्ययोग्यता औ लेस सवै।
भाविक औ संकोरनि आसिख सुनाइये॥
अलङ्कार मुख्य उनतालीस है देव, कहैं,
येई पुराननि मुनि मतनि मैं पाइये।
आधुनि कविन के संमत अनेक और,
इनहीं के भेद और बिबिध बताइये।

शब्दार्थ—स्वभावोक्ति, उपमा, उपयोपमा, संशय, अनन्वय, रूपक, अतिशयोक्ति, सामासोक्ति, वक्रोक्ति, पर्यायोक्ति, सहोक्ति, विशेषोक्ति, अर्थान्तरन्यास, व्यतिरेक, विभावना, उत्प्रेक्षा, आक्षेप, दीपक, उदात्त,

अपन्हुति, श्लेष, अप्रस्तुति-स्तुति, व्याजस्तुति, आवृत्तिदीपक, निदर्शना, विरोध, परिवृत्ति, हेतु, उर्जस्वल, रसवत, सूक्ष्म, प्रेम, क्रम, समाहित, तुल्ययोगिता, लेस, भाविक, सङ्कीर्ण तथा आशिष ये मुख्य ३९ अलङ्कार प्राचीन आचार्यों के मत से हैं। आधुनिक कवियो के मत से इनसे अधिक अलंकार हैं, जो इन्हीं के अनेक भेद औरउपभेद कहे जा सकते हैं।

१—स्वभावोक्ति

दोहा

जहाँ स्वभाव बखानिये, स्वभावोक्ति सो नाम।
सुकवि जाति बर्णन करत, कहत सुनत अभिराम॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ——जहाँ पर किसी के स्वाभाविक गुण का वर्णन हो वहाँ-स्वभा वोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण

कवित्त

आगे आगे आस पास फैलति बिमल बास,
पीछे पीछे भारी भीर भौंरनि के गान की।
तातें अति नीकी किकिनी की झनकार होति,
मोहनी है मानों मदमोहन के कान की॥
जगर मगर होति जोति नव जोबन की,
देखें गति भलें मति देव देवतान की।
सामुहैं गली के जु अली के संग भली भाँति,
चली जाति देखी वह ललो वृषभान की॥

शब्दार्थ—विमल-निर्मल, स्वच्छ। किंकिनी-करधनी, कमर का आभूषण विशेष। जगर मगर-प्रकाशमान। लली वृषभान की-राधा।

२—उपमा

दोहा

नून गुनहिं जहँ अधिक गुन, कहिये बरनि समान।
अलङ्कार उपमा कहत, ताही सुमति सुजान॥

शब्दार्थ—नून-न्यून, कम।

भावार्थ—किसी वस्तु की किसी अन्य वस्तु के साथ न्यून अथवा अधिक गुण के कारण, समानता की जाय; उसे उपमा अलंकार कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

राति जगी अँगिराति इतै, गहि गैल गई गुनकी निधि गोरी।
रोमबली त्रिबली पै लसी, कुसमी अँगियाहू लसी उर ओरी॥
ओछे उरोजनि पै हँसि कें, कसि के पहिरी गहरी रंग बोरी।
पैरि सिवार सरोज सनाल, चढ़ी मनों इन्द्रवधूनि की जोरी॥

[illegible]—[illegible] अंगड़ाती है। गुन की निधि- गुणों की खानि, गुणवती। रोमबली-रोमावलि। त्रिबली-उदर की तीन रेखाएँ। कुसुमी-कुसुम्भी रंग की। पैरि-पहनकर। सिवार-जल मे होनेवाली लताविशेष। इन्द्रवधूनि-बीरबहूटी। जोरी-जोड़ी, युग, दो।

अपन्हुति, श्लेष, अप्रस्तुति-स्तुति, व्याजस्तुति, आवृत्तिदीपक, निदर्शना, विरोध, परिवृत्ति, हेतु, उर्जस्वल, रसवत, सूक्ष्म, प्रेम, क्रम, समाहित, तुल्ययोगिता, लेस, भाविक, सङ्कीर्ण तथा आशिष ये मुख्य ३९ अलङ्कार प्राचीन आचार्यों के मत से हैं। आधुनिक कवियों के मत से इनसे अधिक अलंकार हैं, जो इन्हीं के अनेक भेद औरउपभेद कहे जा सकते हैं।

१—स्वभावोक्ति

दोहा

जहाँ स्वभाव बखानिये, स्वभावोक्ति सो नाम।
सुकवि जाति बर्णन करत, कहत सुनत अभिराम॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ पर किसी के स्वाभाविक गुण का वर्णन हो वहाँ-स्वभा वोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण

कवित्त

आगे आगे आस पास फैलति बिमल बास,
पीछे पीछे भारी भीर भौंरनि के गान की।
तातें अति नीकी किंकिनी की झनकार होति,
मोहनी है मानों मदमोहन के कान की॥
जगर मगर होति जोति नव जोबन की,
देखे गति भले मति देव देवतान की।
सामुहैं गली के जु अली के संग भली भाँति,
चली जाति देखी वह लली वृषभान की॥

शब्दार्थ—विमल-निर्मल, स्वच्छ। किंकिनी-करधनी, कमर का आभूषण विशेष। जगर मगर-प्रकाशमान। लली वृषभान की-राधा।

२—उपमा

दोहा

नून गुनहि जहँ अधिक गुन, कहिये बरनि समान।
अलङ्कार उपमा कहत, ताही सुमति सुजान॥

शब्दार्थ—नून-न्यून, कम।

भावार्थ—किसी वस्तु की किसी अन्य वस्तु के साथ न्यून अथवा अधिक गुण के कारण, समानता की जाय; उसे उपमा अलंकार कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

राति जगी अँगिराति इतै, गहि गैल गई गुनकी विधि गोरी।
रोमबली त्रिबली पै लसी, कुसमी अँगियाहू लसी उर ओरी॥
ओछे उरोजनि पै हँसि के, कसि कं पहिरी गहरी रंग बोरी।
पैरि सिवार सरोज सनाल, चढ़ी मनो इन्द्रवधूनि की जोरी॥

शब्दार्थ—अंगराति अंगड़ाती है। गुन की निधि- गुणों की खानि, गुणवती। रोमबली-रोमावलि। त्रिबली-उदर की तीन रेखाएँ। कुसुमी-कुसुम्भी रंग की। पैरि-पहनकर। सिवार-जल में होनेवाली लताविशेष। इन्द्रवधूनि-बीरबहूटी। जोरी-जोड़ी, युग, दो।

३—उपमेयोपमा

दोहा

उपमा अरु उपमेय कौ, जहँ क्रम एकै होइ।
सोई उपमेयोपमा, बरनि कहै सब कोइ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ उपमा और उपमेय का एक ही क्रम हो, उसे उपमेयोपमा कहते हैं।

उदाहरण

सवैया

तेरी सी बेनी है स्याम अमा अरु, तेरीयो बेनी है स्याम अमा सी।
पूरनमासी सी तू उजरी, अरु तोसी उजारी है पूरनमासी॥
तेरौ सो आनन चंद लसै, तुअ आनन मै सखी चंद समा सी।
तोसी बधू रमणीय रमा, कविदेव है तू रमणीय रमा सी॥

शब्दार्थ—अमा-अमावस्या। उजारी-उज्ज्वल। आनन-मुख। लसै-शोभायमान हो। तुअ-तैरे। तोसी-तेरे समान। रमणीय-सुन्दर। रमा-लक्ष्मी।

४—संशय

दोहा

जहाँ उपमा उपमेय को, आपुस में संदेहु।
ताही सों संसै उकति, सुमति जानि सब लेहु॥

शब्दार्थ—संसै-संशय ।

भावार्थ—जहाँ उपमा और उपमेय में संदेह उपस्थित हो, वहाँ संशय अलंकार होता है ।

उदाहरण

सवैया

श्री वृषभानकुमारी के रूप की, न्यारी कै को उपमा उपजावै ।
चंचल नैन के मैन के बान, कि खञ्जन मीनन कोई बतावै ॥
आनँद सो बिहसाति जबै, कविदेव तबै बहुधा मनधावै ।
कै मुख कैधो कलाधर है, इतनो निह्च्योई नहीं चित आवै ॥

शब्दार्थ—मैन के बान-कामदेव के बाण । खञ्जन-पक्षी विशेष जिसकी आँखें बहुत सुन्दर मानी गयी है । निह्च्योई-निश्चय ! कलाधर-चन्द्रमा । कै .. . आवे-निश्चय नहीं होता कि यह मुख है अथवा चन्द्रमा ।

५—अनन्वय

दोहा

तैसो सोई बरनिये, जहां न और समान ।
ताहि अनन्वय नाम कहि, बरनत देव सुजान ॥

शब्दार्थ—सरल है ।

भावार्थ—जिसकी उपमा के लिए; कोई अन्य वस्तु न हो अर्थात् उसके समान वही हो उसे अनन्वय अलंकार कहते है ।

उदाहरण

सवैया

कस से कंस लसैं मुख सौ मुख, नैन से नैन रहे रङ्ग सो छकि ।
देव कहै सब अङ्ग से अङ्ग, सुरङ्ग दुकूलनि मैं झलकै झकि ॥

आर नहीं उपमा उपजै जग, ढूंढ़ो सबै सब भांतिन सोंतकि।
राधिका श्री वृषभानुकुमारी, तोसी तुहीं अरु कौन सरै बकि॥

शब्दार्थ—दुकूलनि-वस्त्र। ढूंढ़ो .. ...तकि-हरएक तरह से खोजकर देखने पर भी। तोसी तुही...बकि-तेरे समान तूही है और अधिक बकने से क्यालाभ।

६-७—रूपक और अतिशयोक्ति

दोहा

सम समान जैसे जनो, जिमि ज्यों मानो तूल।
और सरिस कबिदेव ए, पद उपमा के मूल॥
जहँ उपमा मैं ये न पद, सोई रूपक जानु।
सीमा ते अति बरनिये, अतिसय ताहि बखानु॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—सम, समान, जैसे, जनो, जिमि, ज्यो, मानो, तुल्य तथा सरिस ये उपमासूचक शब्द जिस उपमा में न आवें, उसे रूपक और जहाँ सीमासे अधिक किसी का वर्णन हो, उसे अतिशय अलंकार कहते हैं।

उदाहरण

कवित्त

मन्दहास चन्द्रका कौ मन्दिर बदन चन्द,
सुन्दर मधुरबानि सुधा सरसाति है।
इन्दिर के ऐन नैन इन्दीबर फूलिरहे,
बिद्रुम अधर देत मोतिन की पांति है॥
ऐसो अद्भुत रूप राधिका कौ देव देखौ,
जाके बिनु देखे छिन छाती न सिराति है।

रसिक कन्हाई बलि पूछन हौं आई तुम्हैं,
ऐसी प्यारी पाइ कैसे न्यारी रखि जाति है ॥

शब्दार्थ—मन्दहास-मृदुहास। इन्दीवर-नीला कमल। बिद्रुम-मूंगा। मोतिन-मोती। पांति-पंक्ति। छाती न सिराति है-हृदय को शान्ति नहीं मिलती। कैसे...जाति है-भला कैसे अलग रखी जाती है।

८—समासोक्ति

दोहा

कछू वस्तु चाहै कहो, ता सम बरनै और।
सुसमासोक्ति सो जानिये, अलङ्कार सिरमौर॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ प्रस्तुत किसी वस्तु का वर्णन करते समय उसी के समान किसी अन्य अप्रस्तुत वस्तु का वर्णन किया जाय वहाँ समासोक्ति अलङ्कार होता है।

उदाहरण

सवैया

मालती सों मलिये निस द्योस हू, या सुखदानि ह्वै ज्यों समुझैये।
प्रीति पुरानी पुरैनि के रैनि, रहौ नियरे न बिपत्ति बहैये॥
ऊपर ही गुनरूप अनूप, निरन्तर अन्तर मैं पतियैये।
ये अलि दूलह भूलेहू देव जू, चम्पक फूल के मूल न जैये॥

शब्दार्थ—निसद्योस-रात-दिन। पुरैन-कमल। नियरे-पास, निकट। निरन्तर-सदा, सर्वदा। पतियैयै-विश्वास करिए। भूले हू-भूल-कर भी।

९—वक्रोक्ति

दोहा

काकु बचन अश्लेष करि, और अरथ ह्वै जाइ ।
सो बक्रोक्ति सु बरनियें, उत्तम काव्य सुभाइ ॥

शब्दार्थ—सरल है ।

भावार्थ—किसी के द्वारा कही हुई बात का सुनने वाला जहाँ ध्वनि विशेष से अर्थ लगा लेता है वहाँ वक्रोक्ति अलङ्कार होता है ।

उदाहरण

सवैया

मति कोप करै पति सो कबहूँ, मति को पकरै पतिसो निबहैं ।
कबि देव न मानबधूरत हैं, सब भाखत आन बधूरत है ॥
अब लौं न कहूँ अबलोकि तुम्है, अब लोक तुम्हैं सुख देत रहैं ।
किनि नाम कहौ हमसो तिन कौ, हम सौतिन कौ किहिभांति कहै ॥

शब्दार्थ—मति कोप करै-क्रोध मत कर । मति को पकरै-बुद्धि को काम में लाने से । अवलोकि-देख कर । किनि-क्यो नही । हम सोतिनको-हमसें उनका । हम सौतिन कौं-हम सोतो से । किह... कहैं-किस तरह कहें ।

१०—पर्यायोक्ति

दोहा

मन की कहे न तात्पर्य, बरने और प्रकार ।
परजायोक्ति सुनाम जो, अलङ्कार निरधार ॥

शब्दार्थ—सरल है ।

भावार्थ—जब किसी बात को व्यङ्गपूर्वक स्पष्ट न कह कर, हेर फेर से कहा जाय तब पर्यायोक्ति अलंकार होता है ।

उदाहरण

सवैया

मैं सुनी कालि परो लगि सासुरे, जैहो सुसांचो कहौ किनि सोऊ।
देव कहै केहि भांति मिलै अब, को जाने काहि कहा कब कोऊ ॥
भेटि तो लेहु भटू उठि स्याम को, आजुही की निस आये हैं ओऊ।
हौं अपने द्दग मूंदति हो धरि, धाइ के आज मिलो तुम दोऊ ॥

शब्दार्थ—साँची कहौ किनि-सच सच क्यों नहीं कहतीं। हौ मैं। द्रग-आँखें।

११—सहोक्ति

दोहा

सो सहोक्ति जहँ सहित गुन, कीजे सहज बखान।
अलङ्कार कवि देव कहि, सो सहोक्ति उर आनि ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—'सहित' शब्द के साथ जहाँ किसी गुण का वर्णन किया जाय वहाँ सहोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण

सवैया

प्यारी के प्रान समेत पियो, परदेस पयान की बात चलावै।
देव जू छोभ समेत छपा, छतियाँ मैं छपाकर की छबि छावै ॥
बोलि अली बन बीच बसन्त कौ, मीचु समेत नगीच बतावै।
काम के तीर समेत समीर, सरीर में लागत पीर बढ़ावै ॥

शब्दार्थ—छपा-शोभा। छपाकर-चन्द्रमा। मीचु-मृत्यु। नगीच पास, निकट। समीर-हवा, वायु। पीर-पीड़ा।

१२—विशेषोक्ति

दोहा

जाति कर्म गुन भेद को, बिकलपता करि जाहि।
वस्तुहि बरनि दिखाइये, विशेषोक्ति कहु ताहि॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ किसी वस्तु के गुण कर्मादि की विकलपता वर्णन की जाय वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण

सवैया

जोबन व्याधु नहीं अरु बैननि, मोहनी मन्त्र नहीं अवरोह्यो।
भौंह कमान न बान बिलोचन, तानि तऊ पति कौ चितु पोह्यो॥
देव घृताची सची न रची तूं, दियो नहीं देवता को नन तो ह्यो।
तापर बीर अहीर की जाई री, तै मनमोहन कौ मन मोह्यो॥

शब्दार्थ—जोबन-यौवन। भौंह . पोह्यो-न तो तेरी भौंहे कमान हैं और न नेत्र बाण परन्तु फिर भी तूने पति का चित्त वेध लिया है; मोह्यो-मोहित किया।

१३—व्यतिरेक

दोहा

जहँ समान बिवि वस्तु की, कीजे भेद बखानु।
अलङ्कार व्यतिरेक सो, देव सुमति पहिचानु॥

शब्दार्थ—बिवि-दो।

भावार्थ—जहाँ दो समान वस्तुओं का वर्णन कर के, एक में कुछ विशेषता वर्णन की जाय वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है।

उदाहरण

सवैया

कौन के होइ नहीं मैं हुलासु, सुजात सबै दुख देखत ही दवि।
जाहि लखैं बिलखैं यह भाँति, परै मनु सौति सरोजन पै पबि ॥
याही तें प्यारी तिहारी मुखद्युति, चन्दसमान बखानत हैं कबि।
आनन ओप मलीन न होति, पै छीनि कै जाति छपाकर की छबि।

शब्दार्थ——पबि-पत्थर। ओप-प्रकास, शोभा। आनन ... छबि-मुख की शोभा कभी मलीन नहीं होती परन्तु चन्द्रमा की कलाक्षीण हो जाती है।

१४—विभावना

दोहा

हेतु प्रसिद्धि निरास करि, कहिये हेतु सुभाउ।
अलङ्कार कबिदेव कहि, सो बिभावना गाउ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ——जहाँ प्रसिद्ध हेतु के बिनाही कार्य का वर्णन किया जाय वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदाहरण

सवैया

ये अँखियाँ बिनु काजर कारी, अयाँरी चितै चित मे चपटीसी।
मीठो लगै बतियां मुख सीठी, यों सौतनि के उरमैं दपटीसी॥
अङ्गहू राग बिना अँग अङ्ग, झकोरें सुगन्धन की झपटी सी।
प्यारी तिहारी ये एड़ी लसै, बिन जावक पावक की लपटी सी॥

शब्दार्थ—सीठी-फीकी। एडी ...... लपटीसी-एडी में बिना महावर के लगे हुए भी वे अग्नि की लौ के समान लाल लगती हैं।

१५—उत्प्रेक्षा

दोहा

और बस्तु कौ तर्ककरि, बरने निहचै और।
सो कहिये उतप्रेक्षा, अनुमानादिक दौर॥

शब्दार्थ—निहचै-निश्चय।

भावार्थ—किसी वस्तु का तर्क कर के अनुमान द्वारा किसी दूसरी वस्तु की कल्पना कर ली जाय वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उदाहरण

कवित्त

हियौ हरै लेती पशु पक्षी बस करै लेतीं,
छिनो बिछुरे ही छिदि छिदि उठै छतियां।
सुनि सुनि मोही हिय जानति हौ कोही,
अब ओही रूप रहै अबरोही दिन रतियां॥
रह्यो न परत मौन मान को करैरी कौन,
भूल्यो भौन गौन गई लोक लाज घतियां।
मेरे मान आवति मुनिन मन मोहिवे कों,
मोहनी के मंत्र हैं री मोहनी की बतियां॥

शब्दार्थ—छिद छिद उठै-छाती में बार बार पीडा हो उठती है। मेरे...... ......बतियाँ-मुझे ऐसा ज्ञात होता है मानो मोहन की बाते मोहनी मंत्र है जो मुनियो तक का मन मोह लेती हैं।

१६-१७—आक्षेप और उदात्त

दोहा

करत कहत कछु फेर सौ, बर्जन बच आक्षेप ।
उदात्त मै अति बरनिये, सम्पति दुति अवलेप ॥

शब्दार्थ—फेर सौ-हेर फेर से ।

भावार्थ—जो बात कहनी हो उसे विशेष जोर देने के लिए हेर फेर के साथ, ऊपर से मनाकरते हुए वर्णन करना आक्षेप कहलाता है और जहाँ असम्भव धनादि का वर्णन हो वहाँ उदात्त अलंकार होता है ।

उदाहरण (आक्षेप)

कवित्त

नूतन गुलाल नूत मञ्जरी की मालनि सों,
कोजे गजमुख सन मुख सनमान कौ ।
करिहै सकल सुख विमुख बियोग दुख,
जानियो न न्यारे ये हमारे पिय प्रान कौ ॥
बाये बोलैं मोर पिक सोर करे सामुहे हूँ,
दाहिने सुनोजू मत्त मधुकर गान को ।
सगुन भले हैं चलिबे को जो पै चलो चितु,
आवतु बसन्त कन्त करिये पयान को ॥

शब्दार्थ—बायें-बायी ओर । सामुहे-सामने । सगुन-शकुन । कन्त-पति ।

उदाहरण (उदात्त)

सवैया

बाल कों न्योति बुलाइबे कों, बरसाने लों हौं पठई नन्दरानी।
श्रीवृषभान की संपति देखि, थकी अतिही गति औ मति बानी॥
भूलि परी मनिमन्दिर मैं, प्रतिबिंबन देखि विशेष भुलानी।
चारि घरी लों चितौत चितौत, मरू करि चन्दमुखी पहिचानी॥

शब्दार्थ—न्योति-न्योता देकर, निमन्त्रण देकर। बरसाने लौं-बरसाने (ग्राम विशेष) तक। पठई-भेजी। चारि पहिचानी-चार घड़ी तक देखती रही तब कही कठिनता से चन्द्रमुखी को पहचान सकी। मरू करि-मुश्किल से, कठिनता से।

१८—दीपक

दोहा

अरथ कहैं एकै क्रिया, जहाँ आदि मधि अन्त।
अथवा जहँ प्रतिपद क्रिया, दीपक कहत सुसंत॥

शब्दार्थ—आदि-आरम्भ। मधि-बीच।

भावार्थ—जहाँ किसी समस्त पद के आदि, मध्य और अन्त की क्रिया एक ही हो वहाँ दीपक अलंकार होता है।

उदाहरण

सवैया

मोहि लई हिरनी लखि कै, हरि नीरज सी बड़री अँखियानसों।
सारिका, सारसिका, रसिका, सुकपोत कपोती पिकी मृदुबानिसों॥
देव कहै सब भूपसुता अनुरूप, अनूपम रूप कलानिसों।
गोपबधू बिधु से मुख की घन, सुन्दर हेरि हरी सुसक्यानिसों॥

शब्दार्थ—मोहिलई-मोहित करली। नीरजसी-कमल के समान। बड़री-बड़ी। सारिका-मैना। उरासिका-सारसी (मादा सारस)

१९—अपन्हुति

दोहा

मन को अरथ छिपाइये, और अर्थ प्रकास।
श्लेष बचन काकु स्वरनि, कहत अपन्हुति तास॥

शब्दार्थ—तास-उसे

भावार्थ—मनका अर्थ छिपा कर जहाँ दूसरा अर्थ (काकु अथवा श्लेष) से प्रकट किया जाय वहाँ अपन्हुति अलंकार होता है।

उदाहरण

सवैया

हौहीं हौ और कि ये सब और कि, डोलत आजु कौ और समीरौ।
यातें इन्हे तन ताप सिरातु पै, मेरे हिये न थिरातु है धीरौ॥
ये कहैं कोकिल कूक भली, मुहि कान सुने जम आवतु नीरौ।
लोग ससी को सराहतरी सब, तोहूँ लगै सखी सांचैहू सीरौ॥

शब्दार्थ—सिरातु-ठंडा होता है। थिरातु .. धीरौ-धैर्य नहीं रहता। कान .. नीरौ-सुनने ही ऐसा जान पड़ा है मानो जम पास आ गया अर्थात् कोयल की वाणी अत्यन्त बुरी लगती है। साँचै हूं-सचमुच ही। सीरौ-ठंडा।

२०—श्लेष

दोहा

जहाँ काव्य के पदनि मै, उपजै अरथ अनंत ।
अलंकार अश्लेष सो, बरनत कवि मतिमंत ॥

शब्दार्थ—पदनि-पदों मे ।

भावार्थ—जहाँ काव्य के पदों मे अनेक अर्थ निकलें वहाँ श्लेष अलंकार होता है ।

उदाहरण

सवैया

ऐसौ गुनी गरे लागतही न, रहै तन मै सनताप री एकौ ।
देव महारस वास निवास, बड़ो सुख जा उर बास किये कौ ॥
रूप निधान अनूप बिधान, सुप्रानिनि कौ फल जासो जिये कौ ।
सांचेहूँ है सखी नन्दकुमार, कुमार नहीं यह हार हिये कौ ॥
[इसमे हार और नन्दकुमार दोनो का वर्णन है ।]

शब्दार्थ—गरे लागतही-गले लगतेही । एकौ-एक भी । साँचेहू .....हिये कौ-हे सखी, यह नन्दकुमार नहीं, मेरे हृदय का हार है ।

२१—अर्थान्तरन्यास

दोहा

युक्त अरथ दृढ़ करन कों, वाक्य जु कहिये और ।
सो अर्थान्तरन्यास कहि, बरनत रस बस भोर ॥

शब्दार्थ—सरल है ।

भावार्थ—जहाँ अर्थ की पुष्टि के लिए कोई और वाक्य कहा जाय वहाँ अर्थान्तरन्यास होता है।

उदाहरण

सवैया

चैन के ऐन ये नैन निहारत, मैन के कोउ कर मै न परै री।
तापर नैसिक अञ्जन देत, निरञ्जनहू के हिये कों हरै री॥
साधुओ होइ असाधु कहू, कविदेव जो कारे के संग परै री।
स्याही रह्यो अरु स्याह सुतौ, सखी आठहू जाम कुकाम करै री॥

शब्दार्थ—ऐन-स्थान, घर। मैन-कामदेव। नैसिक-थोड़ा, नेक। निरञ्जन-निष्काम, स्याह-काला। आठहू जाम-आठो याम, रात दिन।

२२-२३—अप्रस्तुति प्रशंसा और व्याजस्तुति

दोहा

जहाँ सु अप्रस्तुति अस्तुती, निंदा की अचान।
निंदै और जहाँ सराहियै, सो व्याजस्तुति जान॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ प्रस्तुत के वर्णन करने के लिए अप्रस्तुत का वर्णन किया जाय वहाँ अप्रस्तुत प्रशंसा और निंदा के बहाने स्तुति की जाय वहाँ व्याजस्तुति अलंकार होता है।

उदाहरण (अप्रस्तुति प्रशंसा)

सवैया

बड़भागिन येई बिरंच रची, न इतौ सुख आन कहूँ तिय के।
बिछुरै न छिनौ भरि बालम ते, कविदेव जू संग रहैं जिय के॥

कूल चारु चरै रुचि सों चहुँ ओर, चलै चितवै सुचि सों हिय के।
सब तें सब भांति भलो हरिनी, निसिबासर पास रहै पिय के॥

शब्दार्थ—येई येही, इन्हीं को। बिरंच-ब्रह्मा। इतौ-इतना। छिनौ भर-क्षण भर भी। बालम-पति। सबतें..... पिय के-सब से बढ़ कर तो हिरनी ही है जो सदा अपने पति के पास रहती है।

उदाहरण (व्याजस्तुति)

सवैया

को हमकों तुमसे तपसी बिनु, जोग सिखावन आइ है ऊधौ।
पै यह पूछियै जू उनको सुधि, पाछिली आवति है कबहूँ धौ।
एक भली भई भूप भये अरु, भूलि गये दधि माखन दूधौ॥
कूबरी सो अति सूधी बधू को, मिल्यो बर देव जू स्याम सौ सूधौ।

शब्दार्थ—पाछिली-पिछली। कबहूँधौ-कभी। माखन दूधौं-मक्खन और दूध। सूधौं-सरल।

२४—आवृत्ति दीपक

दोहा

आवृति दीपक भेद है, ताहू त्रिविधि बखान।
आवृति अर्थावृत्ति अरु, पर पदार्थवृति जानु॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—आवृति दीपक, दीपक अलंकार का ही एक भेद है। यह भी तीन प्रकार का होता है। १—आवृत्ति २—अर्थावृत्ति ३—पदार्थावृत्ति।

उदाहरण

सवैया

बेली लसैं बिलसैं नव पल्लव, फूल खिलैं न खिलैं नव कोर।
मोरत मान को गान अलीनि के, कूकि पिकी मुनि को मन मोरै॥
डोलत पौन सुगन्ध चलै अरु, मैन के बान सुगन्ध को डोरे।
चंचल नैननि सो तरुनी अरु, नैन कटाछन सों चितु चोरे॥

शब्दार्थ—मोरत मान को-मान का चूर्ण करते है, हटाते हैं। अलीन-भौंरे। पौन-हवा। चितु चोरे-मन को चुराती है।

२५—निदर्शना

दोहा

औरै बस्तु बखानिये, फल तब ताहि समान।
जहां दिखाइय और महि, ताहि निदर्शन जान॥

शब्दार्थ—और महि-दूसरे मे, अन्य में।

भावार्थ—जब किसी वस्तु का वर्णन करते समय उसका फल उसीके समान किसी अन्य वस्तु में दिखलाया जाय तब निदर्शना अलंकार होता है।

उदाहरण

सवैया

देखिबे कों जिनको दिन राति, रहे उर मे अति आतुर ह्वै हरि।
कोटि उपाइन पाइये जे न, रहे जिनके बिरहज्वर सों जरि॥
पार न पैयतु आनद कौ तिन, आनि भटू उठि भेटें भुजा भरि।
जानी परै नहिं दैव दया, बिष देत मिलो बिषया जु मया करि॥

शब्दार्थ—कोटि-करोड़।

२६—विरोध

दोहा

जहाँ विरोधी पदारथ, मिलै एकही ठोर।
अलङ्कार सुविरोध बिनु, बिष पियूष बिष कोर॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ विरोधी पदार्थ एक ही स्थान पर वर्णित हो वहां विरोध अलंकार होता है। जैसे अगृत और विप।

उदाहरण

सवैया

आयो बसन्त लग्यो बरसाउन, नैननि तें सरिता उमहे री।
कौ लगि जीव छिपावै छपा मै, छपाकर की छबि छाइ रहै री॥
चंदन सों छिरके छतिया अति, आगि उठै दुख कौन सहैरी।
देव जू सीतल मन्द सुगन्ध, सुगन्ध बहौ लगि देह दहै री॥

शब्दार्थ—नैननि तें-आँखो से। सरिता नदी। उमहेरी बह रही है।

२७—परिवृत्ति

दोहा

जहाँ बस्तु बरननि पदनि, फिरि आवतु है अर्थ।
ताही सों परिवृत्ति कहि, बरनत सुमति समर्थ॥

शब्दार्थ—सुमति-बुद्धिमान।

भावार्थ—जहाँ पर (सम, कम या अधिक) वस्तुओ के बदले में (सम, कम या अधिक) वस्तुओं को लिया जाय उसे परिवृति अलंकार कहते है।

उदाहरण

कवित्त

केवली समूढ़ लाज डूढ़त ढिठाइ पैये,
चातुरी अगूढ़ गूढ़ मूढ़ता के खोज हैं।
सोभा सील भरत अरति निकरत सब,
मुहि चले खेल पुरि चले चित्त चोज हैं ॥
हीन होति कटि तट पीन होत जघन,
सघन सोच लोचन ज्यो नाचत सरोज हैं।
जाति लरिकाई तरुनाई तन आवत सु,
बैठत मनोज देव उठत उरोज हैं ॥

शब्दार्थ—हीन ..कटि-कमर पतली होती है। पीन-पुष्ट। जघन-जंघाएँ। सरोज-कमल। लरिकाई-लडकपन। तरुनाई-तारुण्य, यौवन। मनोज-कामदेव। उरोज-कुच।

२८-२६—हेतु और रसवत

दोहा

हेतु सहित जँह अरथ पद, हेतु बरनिये सोइ।
नौहू रस मैं सरसता, जहाँ सुरसवत होइ ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ हेतु सहित किसी वस्तु का वर्णन किया जाय वहाँ हेतु अलंकार होता है, और जिसके कारण नवो रसो में सरसता आजाय वहाँ रसवत अलंकार होता है।

उदाहरण (पहला)

सवैया

देव यहै दिन राति कहै हरि, कैसेहूँ राधे सो बात कहैबी।
केलि के कुंज अकेली मिलै, कबहूं भरिके भुज भेटिन पैबी॥
आठहू सिद्धि नवोनिधि की निधि, है विरची विधि सान्निधि ऐबी।
मेटि बियोग समेटि हियो, भरि भेटि कबै मुखचन्द अचैबी॥

शब्दार्थ—कैसे हूं-किसी प्रकार। पैबी-पाँऊ, पासकूँ। सान्निधि-निकट, पास।

उदाहरण (दूसरा)

सवैया

बेली नवेली लतानि सों केली के, प्रात अन्हाइ सरोवर पावन।
पिंजर मंजर का छहराइ, रजच्छति छाइ छपाइ छपावन॥
सीतल मन्द सुगन्ध महा, बपुरे बिरही बपुरी नित पावन।
आजु को आयो समीर सखीरी, सरोज कँपाइ करेजो कँपावन॥

शब्दार्थ—अन्हाइ-नहाकर, स्नान करके। समीर-हवा। करेजो-कलेजा, हृदय।

३०-३१—ऊर्जस्वल और सूक्ष्म

दोहा

अहङ्कार गर्ब्बित बचन, सो ऊर्जस्वल होइ।
संज्ञा सो प्रगटे अरथ, सूछम कहिये सोइ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ गर्वयुक्त वचनों का वर्णन हो वहाँ ऊर्जस्वल और जहाँ संकेत से विषय की जानकारी हो वहाँ सूक्ष्म अलंकार होता है।

उदाहरण (ऊर्जस्वल)

सवैया

देव दुरन्त द्मी अचयो जिहि, कालिय को लै धर्यो सुब ह्वैहै ।
कौलो बको हौं बकी वकवद्द, अघारिक को अघु कै-कै अघैहै ॥
कान्ह के आगे न काहू को कोप, कहूँ कबहूँ निबह्यो न निबैहै ।
छाड़ि दै मानरी मान कह्यौ, कहुँ भानु को तेज कृसानु पै रैहै ॥

शब्दार्थ—भानु-सूर्य । कृसानु-अग्नि ।

उदाहरण (सूक्ष्म)

सवैया

बैठी बहू गुरुलोगनि मे लखि, लाल गये करिके कछु औल्यो ।
ना चितई न भई तिय चंचल, देव इते उनतें चितु डोल्यो ॥
चातुर आतुर जानि उन्हें, छलही छल चाहि सखीन सों बोल्यो ।
त्योंही निसङ्क मयङ्कमुखी दृग, मूदि कै घूघट को पट खोल्यो ॥

शब्दार्थ—औल्यो बहाना । मयङ्कमुखी-चन्द्रमा के समान मुख वाली । दृग मूंदि कैं-आँखे मूंदकर ।

३२-३३—प्रेम और क्रम

दोहा

कहिये जो अति प्रिय बचन, प्रेम बखानौ ताहि ।
उपमा अरु उपमेय को, क्रम सुक्रमोक्ती आहि ॥

शब्दार्थ—सरल है ।

भावार्थ—जहाँ अतिप्रिय वचनों का वर्णन किया जाय वहाँ प्रेम और जहाँ उपमा उपमेय क्रम से वर्णन किये जाँय वहाँ क्रमालंकार होता है ।

उदाहरण

कवित्त

केस भाल भृकुटी नयन श्रुति औ कपोल,
नासिका अधर दंत चिबुक बिचारिये।
कंठ कुच नाभी त्रौली रोमावलि और कटि,
भुज कर जानु पग प्यारी के निहारिये॥
कहूँ तम चन्द चांप खञ्जन कनक पुट,
पत्र, सुक, बिंव, मोती, चंपकली बारिये।
कंबु, निंबु, कूप, नदी, सैबाल, मृनाललता,
पल्लव कदलि, कञ्ज चेरे करि डारिये॥

शब्दार्थ—चिबुक-ठोड़ी। त्रौली-त्रिबली। बिंव-बिंवाफल। चेरे करि डारिए-निछावर करिए। कंबु-शंख। कदलि-केला।

३४—समाहित

दोहा

जँह कारज करतव्य कौ, साधन विधि बल होइ।
अकसमात ही दैव कहि, कहौ समाहित सोइ॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ कार्य का साधन विधिबल से अकस्मात होजाय वहाँ समाहित अलंकार होता है।

उदाहरण

सवैया

गुन गौरि कियो गुरु मान सु मैन, लला के हिये लहराइ उठ्यो।
मनुहारि के हारि सखी गुन औरंग, भौनहि ते भहराइ उठ्यो॥

तब लौं चहूँघाई घटा घहराइ कें, बिज्जु छटा छहराइ उठ्यो।
कवि देवजू भाग तें भामती कौ, भय ते हियरा हहराइ उठ्यो॥

शब्दार्थ—मनुहारि-खुशामद, विनती। चहुघांई-चारों ओर। हियरा-हृदय।

३५—तुल्ययोगिता

दोहा

जँह समकरि गुन दोष कै, कीजै बस्तु बखान।
स्तुतिन पदारथ कौ तहाँ, तुल्ययोगिता जान॥

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—जहाँ वस्तुओं के गुण दोषों का वर्णन समान रूप से किया जाय वहाँ तुल्ययोगिता अलंकार होता है।

उदाहरण

सवैया

एक तुहीं वृषभानसुता अरु, तीनि हैं वे जु समेत सची हैं।
औरन केतिक राजन के, कबिराजन की रसनायै नची हैं॥
देवी रमा कबि देव उमा ये, त्रिलोक मैं रूप की रासि मची हैं।
पै वर नारि महा सुकुमारि, ये चारि बिरञ्च बिचारि रचीं हैं॥

शब्दार्थ—तुहीं-तूही। केतिक-कितनी ही। रमा-लक्ष्मी। रूप की रासि-सौंदर्य की खानि। बिरञ्च रची हैं-ब्रह्मा ने विचारपूर्वक बनाया है।

३६—लेस

दोहा

प्रगट अरथ जहँ लेस करि, कीजे ताहि निगूढ़ ।
लेस कहत तासों सुकबि, जे बुधि बल आरूढ ॥

शब्दार्थ—सरल है ।

भावार्थ—जहाँ किसी वस्तु के प्रकट अर्थ को छिपा कर वर्णन किया जाय वहाँ लेस अलङ्कार होता है ।

उदाहरण

सवैया

बाल बिलोकत हीं झलकी सी, गुपाल गरै जलबिन्द की मालै ।
अपुस मै मुसक्यानी सखी, हरिदेव जू बाते बनाइ बिसालै ॥
साँप ज्यों पौन गिलै उगिलै, बिषयो रबि ऊषम आनि उगालै ।
जात घुस्यो घरही में घने, तपधीनु भयो तनुघाम के घालै ॥

शब्दार्थ—बिसालै-बडी-दडी । गिलै-निगल जाय । उगिलै-बाहर निकाले ।

३७—भाविक

दोहा

भूत रु भावी अरथ कों, बर्त्तमान सु बखानु ।
भाविक बस्तु गंभीर कों, सोई भाविक जानु ॥

शब्दार्थ—सरल है ।

भावार्थ—जहाँ भूत, और भविष्य को वर्त्तमान की भाँति वर्णन किया जाय वहाँ भाविक अलंकार होता है ।

उदा . रण पहला

सवैया

जादिन तें वृजनाथ भट्ट, इह गोकुल ते मथुराहि गए हैं।
छकि रही तब तें छबि सों छिन, छूटति न छतिया मैं छए हैं॥
वैसिय भांति निहारति हौं हरि, नाचत कालिन्दी कूल ठये हैं।
शत्रु सँहारि के छत्र धर्‌यो सिर, देखत द्वारिकानाथ भये हैं॥

शब्दार्थ—वैसिय-उसी तरह, उसी प्रकार।

उदाहरण दूसरा (गम्भीरोक्ति)

सवैया

सबही के मनों मृग वा गुरजे, द्दग मीनन कौ गुन जाल लियें।
बसुधा सुख सिन्धु सुधारसु पूरन, जात चले वृज की गलियें॥
कबि देव कहे इहि भांति उठी, कहि काहू की कोई कहूँ अलियें।
तबलों सबही यह सोरु परौ, कि चलौ चलिये जू चलौ चलिये॥

शब्दार्थ—गलियें-गलियों में। सोरु-शोर, हल्ला।

३८—३९—संकीर्ण और आशिष

दोहा

अलङ्कार जामें बहुत, सो सङ्कीरन होइ।
चाह चित्त अभिलाख को, असिख बरनै सोइ॥

शब्दार्थ—अभिलाख-अभिलाषा।

भावार्थ—जिस पद्य में बहुत से अलंकार एक साथ वर्णित हों वह सकीर्ण और जिसमें चित्त की अभिलाषा का वर्णन हो वह आशिष अलंकार कहलाता है।

उदाहरण (संकीर्ण)

सवैया

डोलति हैं यह कामलतासु, लचीं कुच गुच्छ दरूह उधा की।
कौल सनाल किवाल के हाथ, छिपी कटि कान्ति की भाति सुधाकी ॥
देव यही मन आवति है, सबिलास बधू बिधि हैं बहुधा की।
भाल गुही मुक्तालर माल, सुधाधर मैं मनौ धार सुधा की ॥

शब्दार्थ—सुधाधर-चन्द्रमा।

उदाहरण (आशिष)

सवैया

भाग सुहाग भरीं अनुराग सों, राधे जू मोहन कौ मुख जोवै।
भूषन भेष बनावें नये नित, सौतिन के चित बंछित खोवै ॥
रोधन गोधन पुञ्ज चरौ पय, दास दुहों दधि दासी बिलोवैं।
पूरन काम ह्वै आठहू जाम, जु स्याम की सेज सदा सुख सोवैं ॥

शब्दार्थ—जोवै-देखो। बिलोवैं-मन्थन करती है।

दोहा

अलङ्कार ये मुख्य हैं, इनके भेद अनन्त।
आन ग्रंथ के पन्थ लखि, जानि लेहु मतिमन्त ॥
शुभ सत्रह सै छयालिस, चढ़त सोरही बर्ष।
कढ़ी देव मुख देवता, भावबिलास सहर्ष ॥
दिल्ली पति अवरङ्ग के, आजमसाह सपूत।
सुन्यो सराह्यो ग्रन्थ यह, अष्ट जाम संयूत ॥

भावार्थ—ये ३१ अलंकार मुख्य है। इनके अनेक भेद है। वे किसी बड़े ग्रन्थ से जाने जा सकते है। शेष सरल है।